

वार्षिक रिपोर्ट 1997-98
भारतीय स्टेट बैंक

Report Junction



Annual Report 1997-98
State Bank of India



विषय सूची**पृष्ठ क्रं.**

सूचना	3
केन्द्रीय निदेशक बोर्ड	4
स्थानीय बोर्ड के सदस्य	6
केन्द्रीय प्रबन्धन समिति के सदस्य	9
बैंक के लेखा - परीक्षक	10
उल्लेखनीय तथ्य	11
अध्यक्ष की ओर से	12
विश्व अर्थव्यवस्था एवं भारतीय अर्थव्यवस्था	16
वित्तीय निष्पादन	24
ऋण प्रबंधन	30
बाजार जोखिम प्रबंधन एवं राजकोषीय परिचालन	32
बैंक के परिचालन	34
(क) कारपोरेट लेखा समूह	34
(ख) राष्ट्रीय बैंकिंग समूह	36
(ग) अन्तरराष्ट्रीय बैंकिंग	40
(घ) सहयोगी बैंक एवं अनुषंगियां	46
सहायक प्रणालियां	50
क्रेडिट कार्ड-एस बी आई कार्ड एण्ड पेमेन्ट सर्विसेज प्रा. लि.	54
एस बी आई सिक्यूरिटीज लि.	54
भविष्य विलोकन	54
केन्द्रीय बोर्ड की बैठक	56
तूलन पत्र, लाभ-हानि लेखा और नकदी प्रवाह विवरण	58

MD	✓	BKC	✓
CS	✓	DPY	✓
RO	✓	DIV	✓
TRA	✓	AC	✓
ACM	✓	SHI	✓
YE	✓		

Contents**Page No.**

Notice	3
Central Board of Directors	4
Members of Local Boards	6
Members of Central Management Committee	9
The Bank's Auditors	10
Highlights	11
From the Chairman's Desk	13
The World Economy and Indian Economy	17
Financial Performance	25
Credit Management	31
Market Risk Management and Treasury Operations	33
Bank's Operations	35
A. Corporate Banking Group	35
B. National Banking Group	37
C. International Banking	41
D. Associates and Subsidiaries	47
Support Systems	51
Credit Card - SBI Card and Payment Services Pvt. Ltd.	55
SBI Securities Ltd.	55
Looking Ahead	55
Meetings of the Central Board	57
Balance Sheet, Profit & Loss Account & Cash Flow Statement	58

बैंक का लक्ष्य कथन

- i) विश्वस्तरीय कार्यक्षमता एवं व्यावसायिकता और सुदृढ़ संस्थात्मक मूल्यों के साथ विश्वव्यापी संभावनाओं से युक्त अग्रणी भारतीय वित्तीय सेवा समूह.
- ii) देश में विकास बैंकिंग के अग्रणी के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखना.
- iii) प्रति शेयर निरंतर उच्च उपाजन के माध्यम से शेयरधारक मूल्य में वृद्धि.
- iv) पारस्परिक विचारशीलता एवं प्रतिबद्धता की संस्कृति, समाधानजनक एवं प्रोत्साहनपूरक कार्य परिवेश और सतत ज्ञान अर्जन के अवसरों से सुसज्जित एक संस्थान.

THE BANK'S VISION

- i) Premier Indian Financial Services Group with global perspective, world-class standards of efficiency and professionalism and core institutional values.
- ii) Retain its position in the country as a pioneer in Development Banking.
- iii) Maximize shareholder value through high-sustained earnings per share.
- iv) An institution with a culture of mutual care and commitment, a satisfying and exciting work environment and continuous learning opportunities.



बैंक का ध्येय

विश्वस्तरीय मानकों एवं महत्वपूर्ण विश्वव्यापी व्यवसाय सहित अग्रणी भारतीय वित्तीय सेवा समूह के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखते हुए ग्राहकों, शेयरधारकों तथा कर्मचारियों की संतुष्टि के लिए प्रतिबद्ध और विकास बैंकिंग की भूमिका पर लगातार बल देते हुए विस्तारशील तथा विविधीकृत वित्तीय सेवा क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वाह करना.

THE BANK'S MISSION

To retain the Bank's position as the premier Indian financial services group, with world class standards and significant global business, committed to excellence in customer, shireholder and employee satisfaction, and to play a leading role in the expanding and diversifying financial services sector, while continuing emphasis on its development banking role.



सूचना

भारतीय स्टेट बैंक

केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई 400 021.

8th जून 1998

18 ज्येष्ठ 1920 (शक)

भारतीय स्टेट बैंक के शेयरधारकों की 43 वीं वार्षिक महासभा, शहाजी राजे भोसले क्रीडा संकुल (स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स), जय प्रकाश मार्ग, अंधेरी (पश्चिम), मुंबई - 400 053 (महाराष्ट्र) में गुरुवार, दिनांक 6 अगस्त 1998 को अपराह्न 3.30 बजे निम्नलिखित कार्य के निष्पादन हेतु होगी:

“31 मार्च 1998 तक की केन्द्रीय बोर्ड की रिपोर्ट, बैंक का तुलन पत्र और लाभ-हानि लेखा तथा तुलनपत्र और लेखों पर लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट प्राप्त करना.”

Handwritten signature

एम. एस. वर्मा
अध्यक्ष

REPORT JUNCTION.COM



Notice

State Bank of India

Central Office, Mumbai 400 021.

8th June, 1998

18 Jyestha 1920 (Saka)

The 43rd Annual General Meeting of the Shareholders of the State Bank of India will be held at the Shahaji Raje Bhosale Kreedha Sankul (Sports Complex), Jai Prakash Marg, Andheri (W), Mumbai - 400 053 on Thursday, the 6th August, 1998 at 3.30 P.M. for transacting of following business :

“to receive the Central Board's Report, the Balance Sheet and Profit and Loss Account of the Bank made up to the 31st March, 1998 and the Auditors' Report on the Balance Sheet and Accounts.”

Handwritten signature

M. S. VERMA
Chairman

दोहा रिटर्नर्स **Central Board of Directors**



(As on 18th June 1998)

Chairman
Shri M. S. Verma

Managing Director
Shri O. P. Setia

Shri M. P. Radhakrishnan

Ex-officio under Section 19 (bb) of State Bank of India Act 1955

Shri Parmpal Singh Mann

Shri Yawar Rashid

Dr. Rajat Kumar Chakrabarti

Shri K. Purnachandra Rao

Smt. Anila R. Dholakia

Dr. Kissen Kaunungo

Elected under Section 19 (c) of the Act

Dr. S. Kamani

Dr. I. G. Patel

Shri Ajay C. Piramal

Shri Shashikant B. Garware

Nominated by the Central Government

under Section 19 (d) of the Act

Shri R. Prabhakar Rao

Shri C. N. Ramachandran

Dr. V. B. Kaulagi

Shri Rajendra S. Lodha

Nominated by the Central Government under Section 19 (e) of the Act

Shri C. M. Vasudev

Nominated by the Reserve Bank of India under Section 19 (f) of the Act

Shri Jagdish Capoor

(18 जून 1998 को)

अध्यक्ष
श्री एम. एस. वर्मा

प्रबंध निदेशक
श्री ओ. पी. सेतिया

श्री एम. पी. राधाकृष्णन

भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम 1955 की धारा 19 (ख ख) के अन्तर्गत पद

श्री परमपाल सिंह मान

श्री यावर रशीद

डा. राज कुमार चक्रवर्ती

श्री के. पूर्णचंद्र राव

श्रीमती अनिला आर. धोलकिया

डा. किशन कौनूंगो

अधिनियम की धारा 19 (ग) के अन्तर्गत निर्वाचित

डा. एस. रामणी

डा. आई. जी. पटेल

श्री अजय जी. पिरामल

श्री शशिंकान्त बी. गरवारे

अधिनियम की धारा 19 (घ) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित

श्री आर. प्रभाकर राव

श्री सी. एन. रामचंद्रन

डा. वी. बी. कौजलगि

श्री राजेंद्र एस. लोधा

अधिनियम की धारा 19 (च) के अन्तर्गत

केन्द्र सरकार द्वारा नामित

श्री सी. एम. वासुदेव

अधिनियम की धारा 19 (छ) के अन्तर्गत भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नामित

श्री जगदीश कापूर



श्री एम. एस. वर्मा
Shri M.S. Verma



श्री ओ. पी. सेतिया
Shri O. P. Setia



श्री एम. पी. राधाकृष्णन
Shri M. P. Radhakrishnan



श्री जगदीश कपूर
Shri Jagdish Capoor



श्री सी. एम. वासुदेव
Shri C. M. Vasudev



श्री परमपाल सिंह मान
Shri Parmpal Singh Mann



श्री यावर रशीद
Shri Yawar Rashid



डा. रजत कुमार चक्रवर्ती
Dr. Rajat K. Chakrabarti



श्री के. पूर्णचंद्र राव
Shri K. Purnachandra Rao



श्रीमती अनिला आर. धोलकिया
Smt. Anila R. Dholakia



डा. किसन कानुनगो
Dr. Kissen Kanungo



डा. एस. रमणी
Dr. S. Ramani



डा. आई. जी. पटेल
Dr. I. G. Patel



श्री अजय जी पीरमल
Shri Ajay G. Piramal



श्री शशिकान्त बी. गरवारे
Shri Shashikant B. Garware



श्री आर. प्रभाकर राव
Shri R. Prabhakar Rao



श्री सी. एन. रामचंद्रन
Shri C. N. Ramachandran



डा. वी. बी. कौजलगी
Dr. V. B. Kaujalgi



श्री राजेन्द्र एस. लोढ़ा
Shri Rajendra S. Lodha

स्थानीय बोर्ड के सदस्य

(18 जून, 1998 को)

स्थानीय बोर्ड, कलकत्ता

डॉ. रजत कुमार चक्रवर्ती	- सभापति
श्री अहमद हुसैन मंडल	- सभापति
श्री मुरलीधर जिंदल	- सदस्य
श्री राजेन्द्र एस. लोढ़ा	- सदस्य
श्री पी. के. सरकार	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

स्थानीय बोर्ड, मुंबई

डा. (कुमारी) एस. के. वर्गाज	- सदस्य
श्री आर. एन. कोल्हे	- सदस्य
श्री ए. वी. तुमाने	- सदस्य
श्री अजय जी. पीरामल	- सदस्य
श्री एस. बी. गरवारे	- सदस्य
श्री ए. के. बत्रा	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

स्थानीय बोर्ड, चेन्नई

श्री शैलेश टी. भंसाली	- उप सभापति
डा. एस. रमणी	- सदस्य
श्री सी. एन. रामचन्द्रन	- सदस्य
श्री आर. नागराजन	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

स्थानीय बोर्ड, नई दिल्ली

श्री वीरेन्द्र सूद	- उप सभापति
श्री आर. एन. मित्तल	- सदस्य
श्री मोहम्मद आबाद अल्वी	- सदस्य
श्री आर. मधुकर	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

स्थानीय बोर्ड, लखनऊ

श्री अमर सिंह	- सदस्य
श्री मोहम्मद स्वालेह अंसारी	- सदस्य
श्री के. एस. व्ही. कृष्णमाचारी	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

स्थानीय बोर्ड, अहमदाबाद

श्रीमती अनिला आर. धोलकिया	- सभापति
श्री डी. एम. मेहता	- उप सभापति
प्रो. एम. पी. भट्ट	- सदस्य
श्री जगदीश एस. झवेरी	- सदस्य
श्री रतिलाल जी. मकवाना	- सदस्य
डा. आई. जी. पटेल	- सदस्य
श्री आर. कृष्णमूर्ति	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Members of Local Boards

(As on 18th June 1998)

Calcutta Local Board

Dr. Rajat Kumar Chakrabarti	- President
Shri Ahmad Hossain Mondal	- Vice-President
Shri Murlidhar Jindal	- Member
Shri Rajendra S. Lodha	- Member
Shri P. K. Sarkar	- Chief General Manager (Ex-Officio)

Mumbai Local Board

Dr. (Miss) S. K. Verghese	- Member
Shri R. N. Kolhe	- Member
Shri A. V. Tumane	- Member
Shri Ajay G. Piramal	- Member
Shri S. B. Garware	- Member
Shri A. K. Batra	- Chief General Manager (Ex-Officio)

Chennai Local Board

Shri Shailesh T. Bhansali	- Vice President
Dr. S. Ramani	- Member
Shri C. N. Ramachandran	- Member
Shri R. Nagarajan	- Chief General Manager (Ex-Officio)

New Delhi Local Board

Shri Virender Sood	- Vice President
Shri R. N. Mittal	- Member
Shri Mohd. Abad Alvi	- Member
Shri R. Madhukar	- Chief General Manager (Ex-Officio)

Lucknow Local Board

Shri Amar Singh	- Member
Shri Mohd. Swaleh Ansari	- Member
Shri K. S. V. Krishnamachari	- Chief General Manager (Ex-Officio)

Ahmedabad Local Board

Smt. Anila R. Dholakia	- President
Shri D. M. Mehta	- Vice President
Prof. M. P. Bhatt	- Member
Shri Jagdish S. Jhaveri	- Member
Shri Ratilal G. Makwana	- Member
Dr. I. G. Patel	- Member
Shri R. Krishnamurthy	- Chief General Manager (Ex-Officio)

स्थानीय बोर्ड, हैदराबाद

श्री जोग वेंकटरमण यादव	- सदस्य
श्री नेनावता बड्या नाईक	- सदस्य
श्री आर. प्रभाकर राव	- सदस्य
श्री ए. अल्फ्रेड सोलोमन	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Hyderabad Local Board

Shri Joga Venkataramana Yadav	- Member
Shri Nenavata Badya Naik	- Member
Shri R. Prabhakar Rao	- Member
Shri A. Alfred Solomon	- Chief General Manager (Ex-Officio)

स्थानीय बोर्ड, पटना

श्री सी. भट्टाचार्य	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)
---------------------	---------------------------

Patna Local Board

Shri C. Bhattacharya	- Chief General Manager (Ex-Officio)
----------------------	--------------------------------------

स्थानीय बोर्ड, भोपाल

श्री यावर रशीद	- सभापति
श्री मधुकर मरमत	- उप सभापति
श्री केदारनाथ शर्मा	- सदस्य
श्रीमती चंद्रप्रभा पटेरिया	- सदस्य
श्री डी. के. धगत	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Bhopal Local Board

Shri Yawar Rashid	- President
Shri Madhuker Marmat	- Vice President
Shri Kedar Nath Sharma	- Member
Smt. Chandra Prabha Pateria	- Member
Shri D. K. Dhagat	- Chief General Manager (Ex-Officio)

स्थानीय बोर्ड, भुवनेश्वर

डॉ. किसन कानुनगो	- सभापति
श्री रबिन कुमार मित्रा	- उप सभापति
श्री डी. नटराजन्	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Bhubaneswar Local Board

Dr. Kissen Kanungo	- President
Shri Rabin Kumar Mittra	- Vice President
Shri D. Natarajan	- Chief General Manager (Ex-Officio)

स्थानीय बोर्ड, चण्डीगढ़

श्री परमाल सिंह मान	- सभापति
श्री माखन लाल धर	- उप सभापति
कैप्टन ठाकुर दास	- सदस्य
श्री के. के. नरुला	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Chandigarh Local Board

Shri Parmpal Singh Mann	- President
Shri Makhan Lal Dhar	- Vice President
Captain Thakur Dass	- Member
Shri K. K. Narula	- Chief General Manager (Ex-Officio)

स्थानीय बोर्ड, गुवाहाटी

श्री प्रभाकर शर्मा	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)
--------------------	---------------------------

Guwahati Local Board

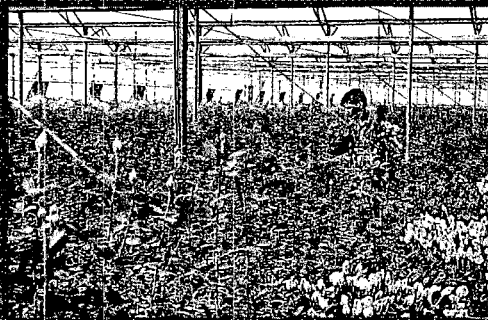
Shri Prabhakar Sharma	- Chief General Manager (Ex-Officio)
-----------------------	--------------------------------------

स्थानीय बोर्ड, बंगलूर

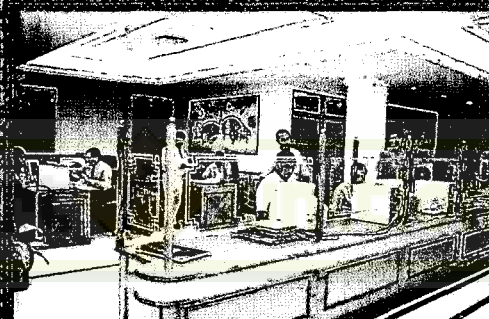
श्री के. पूर्णचंद्र राव	- सभापति
श्री निरंजन थॉमस अलवा	- उप सभापति
श्री बन्नाजे रामाचार	- सदस्य
डा. वी. बी. कौजलगी	- सदस्य
श्री ए. एन. जोशी	- मुख्य महाप्रबंधक (पदेन)

Bangalore Local Board

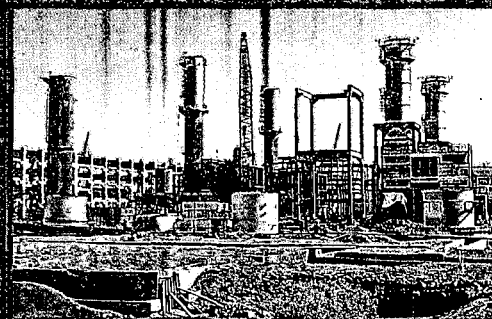
Shri K. Purnachandra Rao	- President
Shri Niranjana Thomas Alva	- Vice President
Shri Bannanje Ramachar	- Member
Dr. V. B. Kaujalgi	- Member
Shri A. N. Joshi	- Chief General Manager (Ex-Officio)



निर्यात हेतु पुष्प उगाने वाली इकाई - कृषि व्यवसाय शाखा
 हैदराबाद द्वारा सहायता प्राप्त
 Growing flowers for exports - an assisted
 unit of Agree-business Branch Hyderabad



कारपोरेट लेखा समूह शाखा कलकत्ता का आंतरिक दृश्य
 Inside view of CAG Branch, Calcutta



कारपोरेट लेखा समूह शाखा कलकत्ता द्वारा सहायता प्राप्त
 निजी क्षेत्र का एक स्टील संयंत्र
 A steel plant in the private sector -
 assisted by CAG Branch, Calcutta

केन्द्रीय प्रबंधन समिति के सदस्य

(18 जून 1998 को)

श्री एम. एस. वर्मा
अध्यक्ष

श्री ओ. पी. सेतिया
प्रबन्ध निदेशक एवं समूह
कार्यपालक (राष्ट्रीय बैंकिंग)

श्री एम. पी. राधाकृष्णन
प्रबन्ध निदेशक एवं समूह
कार्यपालक (कारपोरेट बैंकिंग)

श्री पी. के. भट्टाचारजी
उप प्रबन्ध निदेशक एवं
मुख्य वित्तीय अधिकारी

श्री एस. एन. सावईकर
उप प्रबन्ध निदेशक
(सहयोगी बैंक एवं अनुषंगिया)

श्री बी. एम. भिडे
उप प्रबन्ध निदेशक एवं
कारपोरेट विकास अधिकारी

श्री वी. जानकीरामन
उप प्रबन्ध निदेशक एवं
मुख्य ऋण अधिकारी

श्री वी. के. मेहरोत्रा
उप प्रबन्ध निदेशक
(निरीक्षण एवं प्रबंधन लेखा परीक्षा)

श्री डी. पी. रॉय
उप प्रबन्ध निदेशक
(अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग)

श्री वाई. राधाकृष्णन
उप प्रबन्ध निदेशक

Members of Central Management Committee

(As on 18th June 1998)

Shri M. S. Verma
Chairman

Shri O. P. Setia
Managing Director & Group Executive
(National Banking)

Shri M. P. Radhakrishnan
Managing Director &
Group Executive (Corporate Banking)

Shri P. K. Bhattacharjee
Deputy Managing Director &
Chief Financial Officer

Shri S. N. Sawaikar
Deputy Managing Director
(Associates & Subsidiaries)

Shri B. M. Bhide
Deputy Managing Director &
Corporate Development Officer

Shri V. Janakiraman
Deputy Managing Director
& Chief Credit Officer

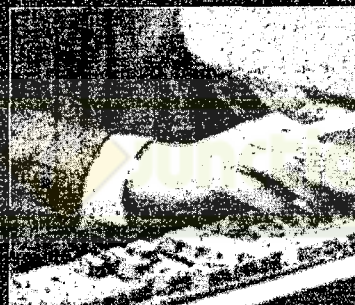
Shri V. K. Mehrotra
Deputy Managing Director
(Inspection & Management Audit)

Shri D. P. Roy
Deputy Managing Director
(International Banking)

Shri Y. Radhakrishnan
Deputy Managing Director

बैंक के लेखा-परीक्षक

भट्टाचार्य दास एण्ड क
खिम्जी कुवरजी एण्ड क
प्राइस पट्ट एण्ड क
पी. के. चोपड़ा एण्ड क
के. के. सोनी एण्ड क
खंडेलवाल जैन एण्ड क
सत्यनारायण एण्ड क
रघुनाथ राय एण्ड क
लुनकर एण्ड क
एस. आर. आर. के. शर्मा एसोशिएट्स
खन्ना एण्ड क
आर. सिंघी एण्ड क
पी. बी. विजयराघवन एण्ड क



The Bank's Auditors

Bhattacharya Das & Co.
Khimji Kunverji & Co.
Price Patt & Co.
P. K. Chopra & Co.
K. K. Soni & Co.
Khandelwal Jain & Co.
Satyanarayana & Co.
Raghunath Rai & Co.
Loonker & Co.
S. R. R. K. Sharma Associates
Khanna & Co.
R. Singhi & Co.
P. B. Vijayaraghavan & Co.

H i g h l i g h t s

उल्लेखनीय तथ्य

वर्ष के लिए FOR THE YEAR	1997-98	1996-97	प्रतिशत वृद्धि % increase
कुल आय (करोड़ रुपये) Total Income (Rs. crore)	18,699	17,594	6.3
कुल व्यय (करोड़ रुपये) Total Expenditure (Rs. crore)	16,838	16,264	3.5
निवल लाभ (करोड़ रुपये) Net Profit (Rs. crore)	1861.2	1,329.3 *	40.0
आय - प्रति शेयर (रुपये) Earning per Share (Rs.)	35.36	26.66	32.6
औसत आस्तियों पर आय (%) Return on Average Assets (%)	1.09	0.88	23.9
ईक्विटी पर आय (%) Return on Equity (%)	19.37	16.67	16.2
प्रति कर्मचारी लाभ (रुपये) Profit per Employee (Rs.)	77,000	56,278	36.8

वर्ष की समाप्ति AT THE END OF	मार्च March 1998	मार्च March 1997	प्रतिशत वृद्धि % increase
संदत पूँजी और आरक्षितियों एवं अधिशेष (करोड़ रुपये) Paid-up Capital and Reserves & Surplus (Rs. crore)	9,608	7,977	20.4
जमा राशियाँ (करोड़ रुपये) Deposits (Rs. crore)	131,091	110,701	18.4
अग्रिम (बिलों सहित) (करोड़ रुपये) Advances (including Bills) (Rs. crore)	74,237	62,233	19.3
कुल आस्तियाँ / देयताएं (करोड़ रुपये) Total Assets/ Liabilities (Rs. crore)	179,673	156,473	14.8
शाखाओं की संख्या (विदेश स्थित शाखाओं / कार्यालयों सहित) Number of Branches (including Foreign Branches/ Offices)	8,925	8,888	0.4
पूँजी पर्याप्तता अनुपात (%) Capital Adequacy Ratio (%)	14.58	12.17	19.8
निवल अलाभकारी आस्तियाँ (%) Net NPA (%)	6.07	7.30	-16.8

* पिछले वर्ष उपबंध और आकस्मिक व्यय में 19.95 करोड़ रुपये के लाभांश पर कर सम्मिलित था जिसे विनियोजन के रूप में पुनर्समूहित किया गया है। इस प्रकार पिछले वर्ष 1,329.30 करोड़ रुपये का प्रकाशित लाभ परिवर्तित होकर 1349.25 करोड़ रुपये हो गया है।

* The published profit of Rs.1,329.30 crore for 1996-97 was subsequently changed to Rs.1,349.25 crore, arising out of regrouping of Tax on Dividend of Rs.19.95 crore, included in "Provisions & Contingencies", as an Appropriation.

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय शेयरधारक,

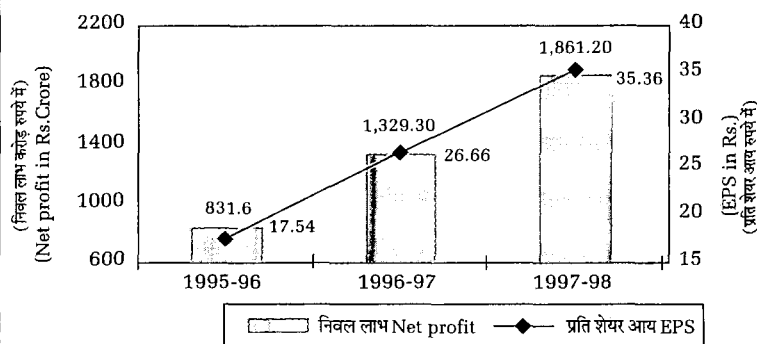
मुझे वर्ष 1997-98 के लिए आपके बैंक के निदेशक बोर्ड की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। पिछला वर्ष बैंक के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष था। प्रतिकूल व्यावसायिक परिस्थितियों के बावजूद, बैंक ने अपने निवल लाभ में 40 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की है। यह आंशिक रूप से वर्तमान व्यवसाय के प्रति हमारे दृष्टिकोण को पुनः समायोजित करने और आंशिक रूप से परिवेश द्वारा प्रस्तावित नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए किये गए सतत प्रयासों के कारण संभव हुआ। इस उत्कृष्ट निष्पादन के अलावा, भविष्य में जिन व्यवसायों पर अधिक जोर दिया जाना है, उन व्यवसायों के लिए आधार तैयार करने में भी बैंक ने सफलता हासिल की है। इस वर्ष हमने 1200 से भी अधिक शाखाओं का पूर्णतः कंप्यूटरीकरण करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इनमें हमारे बैंक की 2350 शहरी एवं महानगरीय शाखाओं में से 1000 से अधिक शाखाएं सम्मिलित हैं। इसका प्रभाव यह हुआ है कि बैंक अब अपने ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को फ्रन्ट-लाइन सेवा और अधिक दक्षता पूर्वक प्रदान कर सकेगा।

बैंक ने नए उत्पादों एवं सेवाओं की शुरुआत करना जारी रखा। इनमें से अधिकांश को अच्छा प्रतिसाद मिला और इनमें से कुछ सेवाएं, जैसे तत्काल निधि अंतरण सुविधा - "एस बी आई फास्ट" जो बहुत कम लागत पर उच्च राशियों का अंतरण करती है, लक्षित ग्राहक समूहों में अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हुई है। हम निरंतर इनमें सुधार करते रहेंगे और अपने ग्राहकों की आवश्यकता के अनुरूप अन्य नवोन्मेषी उत्पाद प्रस्तावित करते रहेंगे।

जैसाकि आपको यह विदित होगा कि आपके बैंक ने अपने स्वयं का क्रेडिट कार्ड व्यवसाय स्थापित करने का निर्णय ले लिया है जिससे वह समकालिक प्रति विक्रय (क्रास सेलिंग) अवसरों का स्वयं ही फायदा उठा सके और इसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त वित्तीय सेवा कम्पनियों में से एक के साथ संयुक्त उद्यम अनुबंध किया है। इस कैलेंडर वर्ष की समाप्ति से पूर्व एस बी आई कार्ड आपके हाथ में होंगे। बैंक नई प्रारंभ हुई पूर्णतः स्वचालित वैयक्तिक बैंकिंग शाखाओं के माध्यम से इन्टरनेट बैंकिंग सुविधाएं भी शुरू करने जा रहा है। इन नई सुविधाओं से निश्चित ही आपके बैंक की स्थिति, न केवल भारतीय बैंकिंग उद्योग में एक अद्वितीय नायक के रूप में सुदृढ़ होगी अपितु विश्व के अग्रणी बैंकों के साथ प्रतिस्पर्धा करनेवाला एक विश्वव्यापी बैंक बनने में भी इनसे सहायता मिलेगी। नई सहस्राब्दि के लिए आपके बैंक का यही लक्ष्य है।

सन् 2010 तक भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की अपेक्षाओं के साथ ही उन बड़े संस्थानों की आवश्यकता होगी, जो निवेशों को बढ़ा सकें और वित्तपोषण के बहुविध प्रकार एवं नवोन्मेषी वित्तीय लिखतों के माध्यम से ग्राहक समूहों की सेवा कर सकें। आपके बैंक को विश्वास है कि इस भूमिका का निर्वाह करने के लिए वह पूरी तरह से उपयुक्त है और बदलते हुए आर्थिक एवं सामाजिक परिवेश की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु वह स्वयं को पूरी तरह तैयार कर रहा है। तथापि, इसके लिए पूरी की जाने वाली एक प्रमुख आवश्यकता

बैंक का निवल लाभ एवं प्रति शेयर आय
The Bank's Net Profit and EPS





From the Chairman's Desk

Dear Shareholder,

I take pleasure in presenting to you the Report of the Board of Directors of your Bank for the year 1997-98. The year that has gone by was a momentous one in the Bank's history. Despite adverse business conditions, the Bank recorded an impressive 40 percent growth in its net profit. This was possible partly by readjusting our approach to the existing business and partly through sustained efforts at cashing in on new opportunities offered by the environment. Apart from this sterling performance, the Bank also succeeded in covering considerable ground in its preparations for future business thrusts. This year we crossed a milestone by fully computerizing over 1200 branches, which included over 1,000 urban and metropolitan branches out of 2,350 such branches of our Bank. The implication of this is that the Bank would now be able to offer a much larger number of its customers more efficient frontline services.

The Bank continues to introduce new products and services. While most of these have been received well, some of these like 'SBIFAST', an instant funds transfer facility which transfers high volumes at a very low cost, have proved to be extremely popular with the targeted clientele. We shall continue to improve these and offer other innovative products to meet the felt needs of our customers.

As you may be knowing, your Bank has already taken a decision to set up a credit card business of its own to avail itself of the simultaneous cross-selling opportunities, and signed a joint venture agreement with one of the internationally acclaimed financial services companies. SBI cards should be in your hands much before this calendar year is out. The Bank is also on the threshold of initiating internet banking facilities through the newly opened fully automated Personal Banking Branches. These developments will unquestionably strengthen your Bank's position not only as the unmatched leader of the Indian banking industry, but also as a global player competing with the leading banks of the world, which is the vision of your Bank in the new millennium.

With the Indian economy expected to become the fourth largest by 2010, there will be a need for larger institutions, which can channelise investments and serve clients through multifarious modes of financing and innovative financial instruments. Your Bank believes, it is ideally suited to play this role and is preparing itself fully to meet the requirements of the changing economic and social environment. For this, however, one of the prime conditions to fulfil will be a substantial expansion in the Bank's asset base from its current level. This is not an easy objective to achieve at a time when the competition for quality assets is intensifying and the requirements of resources to support these are increasing.

यह होगी कि बैंक के आस्ति आधार में इसके वर्तमान स्तर में पर्याप्त रूप से विस्तार हो। यह लक्ष्य उस समय प्राप्त करना आसान नहीं है जब गुणवत्ता आस्तियों के लिए प्रतिस्पर्धा गहन होती जा रही हो और इनकी सहायता करने वाले संसाधनों की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हो। फिर भी, हमें विश्वास है कि हम अपने प्रयासों में सफल होंगे।

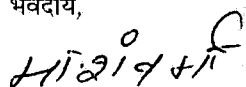
विमध्यस्थीकरण की इस प्रक्रिया से बैंक के ऋण देने संबंधी कार्यकलापों पर कीमत-लागत अंतर का दबाव लगातार बढ़ा है। यह स्थिति उन सभी देशों में देखी गई है, जहां बैंकिंग क्षेत्र को प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया गया है। आपका बैंक अब अनुकूलतम कीमत-लागत अंतर की वास्तविकता को स्वीकार करने के लिये तैयार है। यद्यपि, मूलतः व्यवसाय की मात्रा में वृद्धि करके इस स्थिति को संभाल लिया जाएगा, फिर भी नए क्षेत्रों की तलाश करने वाली एक नई कार्यनीति हमें अपनानी होगी जिससे शुल्क-आधारित आय में वृद्धि हो सके। आपका बैंक इस दिशा की ओर पहले से ही बढ़ रहा है और मुझे आशा है कि अगले कुछ वर्षों में, शुल्क आधारित आय का योगदान बैंक की वास्तविक आय में कम से कम 25 प्रतिशत होगा। इसके साथ-साथ, आपका बैंक अपनी लागत संरचना का पुनरीक्षण भी कर रहा है। एक कम लागत वाले प्रतिस्पर्धी के रूप में, बैंक को विशिष्ट प्रतिस्पर्धात्मक फायदे उपलब्ध होंगे। उन क्षेत्रों का पता लगाने के लिए, जिनमें हमारे फायदे के अनुसार व्ययों को युक्तिसंगत बनाया जा सकता है, व्यक्ति स्तर पर विभिन्न मदों की हम गहराई से जांच कर रहे हैं। शुल्क आधारित कार्यकलापों को सुदृढ़ करने और लागत कटौती वाले कार्यों की शुरुआत करने जैसी दोहरी कार्यनीतियों से निश्चित ही प्रमुख दक्षता संकेतकों, अर्थात् ईक्विटी पर आय और औसत आस्तियों पर आय, में सुधार करने में हमें मदद मिलेगी।

सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग आधुनिक बैंकिंग के मुख्य तत्त्व के रूप में उभर कर सामने आया है तथा आपका बैंक इस तथ्य से पूर्णतः परिचित है कि नई प्रौद्योगिकी आधारित उत्पाद लाने तथा प्रबंधन सूचना एवं निर्णय प्रणाली को पुनरीक्षित करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रौद्योगिकी के उच्चतर स्तरों को अपनाने और उनका उपयोग करने की उसमें क्षमता हो।

अंततः, किसी भी संगठन की सफलता, खासकर आपके बैंक जैसे सेवा संगठन की सफलता उसके उन कार्मिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है जिनसे ग्राहकों का सम्पर्क सबसे पहले होता है तथा जो बैंक के लिए उनका विश्वास अर्जित करते हैं। प्रबंधन सभी आवश्यक साधन उपलब्ध कराएगा परन्तु ग्राहक का संपर्क सबसे पहले काउन्टर पर बैठे व्यक्तियों से ही होगा। इसलिए, आपका बैंक आधारीक स्तर, अर्थात् प्रशिक्षण केन्द्रों के विस्तृत नेटवर्क, जहां अपने स्टाफ के लगभग एक तिहाई सदस्य दक्षता बढ़ाने तथा अभिवृत्ति संबंधी परिवर्तन के लिए प्रति वर्ष प्रशिक्षण हेतु जाते हैं, पर समस्याओं के समाधान की कोशिश कर रहा है। मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि स्टाफ तथा अधिकारी संघों ने इस आवश्यकता को महत्व प्रदान किया तथा वे इस संबंध में अत्यन्त सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपना रहे हैं। वास्तव में, आपका बैंक एक अत्यंत सुखद परिवर्तन की ओर अग्रसर है।

21 वीं शताब्दी केवल उन संगठनों के लिए होगी जो भविष्य दृष्टि, गतिशील और ग्राहक अनुकूल हैं। मुझे विश्वास है कि आपका बैंक आने वाले वर्षों में भारत के ऐसे संगठनों में सबसे आगे होगा।

ससम्मान,
भवदीय,



(एम. एस. वर्मा)

**बैंक का पूँजी पर्याप्तता
अनुपात (%)**

**The Bank's Capital
Adequacy Ratio (%)**



Nonetheless, we are confident of succeeding in our endeavours.

The process of disintermediation has resulted in the spread on the Bank's lending activity coming under severe pressure. This phenomenon is observed in all countries where the banking sector is open to competition. Your Bank is now prepared to live with the reality of fine spreads. While basically this will be dealt with through volume growth, a further strategy for us would be to seek new sources of income that would boost fee-based earnings.

Your Bank is already progressing in this direction, and I

expect that in a few years from now, the contribution from fee income will be at least 25% to the Bank's overall earnings. Along with this, your Bank is also revamping its cost structure. As a low-cost player, the Bank will have a distinct competitive advantage. We are taking a closer look at various items at the micro level to identify areas where expenses can be rationalized to our advantage. The twin strategies of beefing up fee-based activities and initiating cost-cutting exercises will surely stand us in good stead as we intensify our efforts to improve upon the key efficiency indicators, viz., ROE and ROA.

Use of information technology has emerged as a key element of modern-day banking and your Bank is fully aware that for introduction of newer technology-driven products and revamping management information and decision-making systems, its ability to use and absorb higher levels of technology will be critical.

In the final analysis, the success of any organization, and more so of a service organization like your Bank, depends upon the quality of its people who are the first points of contact with the customer and his goodwill that they are able to earn for the Bank. The management would provide the necessary wherewithal, but the customer inter-face will always be with persons at and immediately behind the counter. Your Bank is, therefore, tackling the problem at the root, i.e., at its vast network of training centres where a third of its entire staff undergoes training for upgradation of skills and attitudinal changes every year. I am happy to add that the Staff and Officers' unions appreciate this need and have been adopting a very cooperative approach in this regard. Your Bank is, indeed, undergoing a very welcome change.

The 21st century will belong to those organizations, which are forward looking, dynamic and customer-friendly. I am confident, your Bank will be in the forefront of such organizations in India in the years ahead.

With warm regards,

Yours sincerely,

(M. S. Verma)

विश्व अर्थव्यवस्था एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

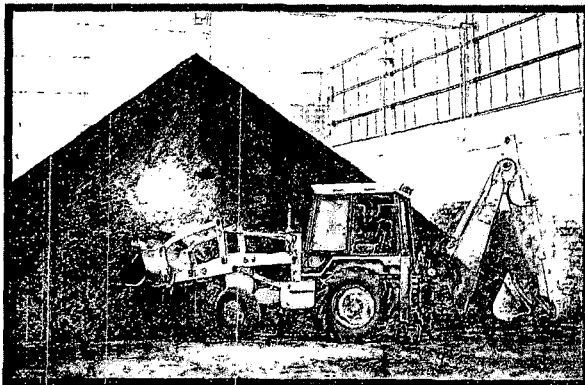
विश्व अर्थव्यवस्था

विश्व अर्थव्यवस्था उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती दिखाई दी. वर्ष 1997 में इसमें 3 प्रतिशत की दर से संवृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है. विगत चार वर्षों के दौरान उक्त स्तर तक पहुंचने का यह तीसरा वर्ष था. अधिकांश देशों में मुद्रास्फीति की दरों में गिरावट आई है, जबकि उत्पादन में वृद्धि हो रही है और बड़े हुए राजकोषीय घाटे को व्यापक तौर पर कम किया जा रहा है. अमेरिका व्यापार-उत्कर्ष परक परिस्थितियों के कारण विगत सात वर्षों से इस क्षेत्र में लगातार अग्रणी बना हुआ है. यूरोप भी तीव्र गति से विकसित हो रहा है. विश्वव्यापीकरण एवं प्रौद्योगिकी की शक्तियों को सामान्यतया अविरत उच्चतर संवृद्धि के नए युग के साधन के रूप में उद्धृत किया जाता है. तथापि, अभी भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें वातावरण एवं गति उत्साहवर्धक रही है. जापान धीरे-धीरे पिछड़ता जा रहा है. एशिया के वित्तीय रूप से सुदृढ़ देश संकट में आ गए हैं जिसके फलस्वरूप अब तक अबाधित रही संवृद्धि को आगे जारी रखने में कठिनाइयाँ आ रही हैं. स्थिति जो भी हो, विश्व अर्थव्यवस्था में जो संरचनात्मक परिवर्तन हो रहे हैं उसका श्रेय विश्वव्यापी बाजार की उत्पत्ति को जाता है. यह हमारे जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी के निरंतर बढ़ते हुए महत्व के कारण सुगम हो पाया है. सम्पूर्ण विश्व में एक नया आर्थिक मानक व्याप्त हो रहा है. परिवर्तन की इस प्रक्रिया में भारत भी एक सक्रिय सहभागी बन गया है.

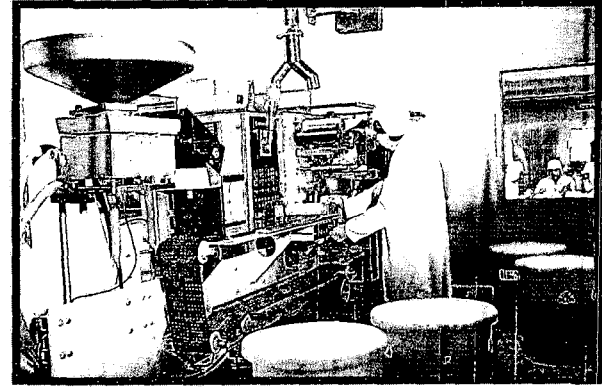
सम्भवतः वर्ष की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना वित्तीय उथल-पुथल रही है जिसने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को वर्ष 1997 के द्वितीयार्ध के प्रारम्भ से ही प्रभावित कर रखा है. इसके फलस्वरूप इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति छिन्न-भिन्न हुई है जिसमें मंद संवृद्धि, अवपाती मुद्रा, बंद हो रहे बैंक एवं संघर्षरत कम्पनियाँ शामिल हैं. पड़ोसी देशों की अर्थव्यवस्था की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था इस कसौटी पर सफल रही क्योंकि इसके मूलभूत सिद्धांत सुदृढ़ थे और संक्रामक प्रभावों से वस्तुतः अछूते बने रहे. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रुपये पर पड़ने वाले अनुमानित दबाव के प्रारंभिक संकेतों का कुशलतापूर्वक संचालन करने के फलस्वरूप रुपये का बाह्य मूल्य बहुत कुछ स्थिर रहा. तथापि, भारत की निर्यात-संवृद्धि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों, जो विश्व व्यापार में सिले-सिलाए वस्त्रों जैसी वस्तुओं के विपणन में भारत से प्रतिस्पर्धा करते हैं, की मुद्राओं के असंगत मूल्यहास के फलस्वरूप अपेक्षाकृत प्रतिकूल रही. बैंकिंग एवं वित्तीय प्रणाली अनियमित निवेशों से बचते हुए तथा अपनी आस्तियों की गुणवत्ता बनाए रखते हुए इस "क्षणिक प्रभाव" से अभेद्य रही.

भारतीय अर्थव्यवस्था

वास्तविक क्षेत्र परिवेश



वर्ष 1997-98 में देशीय वास्तविक उत्पादन की संवृद्धि दर विगत तीन वर्षों के दौरान प्रत्येक वर्ष में हुई सात प्रतिशत से अधिक की दर से घटकर 5 प्रतिशत तक हो जाने का अनुमान है. कृषि क्षेत्र में वर्ष 1996-97 में दर्ज की गई 7.9 प्रतिशत की उच्च संवृद्धि दर में कमी आई. विगत मानसून के दौरान विभिन्न भागों में हुई असमान वर्षा एवं शीतकाल में हुई असामयिक वर्षा का कृषि संबंधी उत्पादनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जिससे वर्ष 1997-98 में अनुमानित संवृद्धि दर में 2 प्रतिशत की कमी हुई. देशीय मांग के साथ-साथ निर्यात मांग में मंदी होने के फलस्वरूप औद्योगिक उत्पादनों के विस्तार की गति धीमी रही और विगत वर्ष में दर्ज की गई 6.4 प्रतिशत की तदनुरूपी संवृद्धि दर की तुलना में यह वर्ष के दौरान 5.7 प्रतिशत रही.

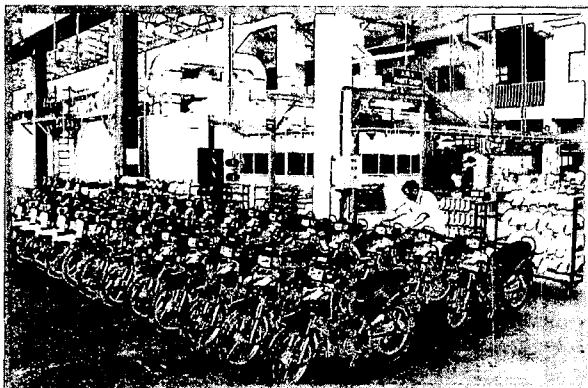


►
वाणिज्यिक शाखा, मुंबई द्वारा
सहायता प्राप्त दवाई बनाने
वाली इकाई

A medicine
manufacturing unit
assisted by
Commercial Branch,
Mumbai

▼
औद्योगिक क्षेत्र शाखा, राजाजी
नगर, बंगलूर शाखा द्वारा
सहायता प्राप्त - कचरे से खाद
बनाने वाली इकाई

Turning garbage into
compost-assisted by
Industrial Estate
Branch, Rajajinagar,
Bangalore



The World Economy and The Indian Economy

The World Economy

The world economy appeared to be set firmly on a growth path. It is estimated to have grown at 3% in 1997, making it the third year in the most recent four to reach such a level. Inflation rates have fallen in most countries, while the output is surging and excessive fiscal deficits are broadly curtailed. The US

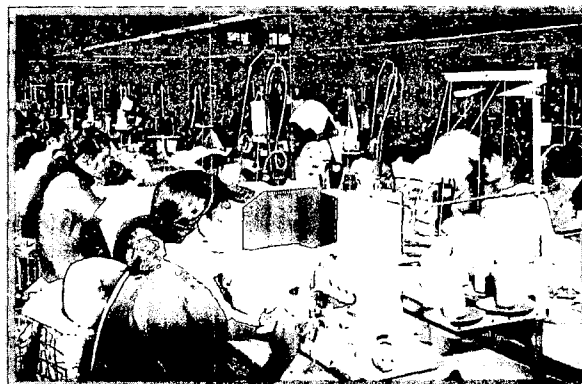
is leading the way with booming conditions for the last seven years in a row. Europe is also growing at a faster rate. The forces of globalization and technology are generally cited as the key to the 'new era' of permanently higher growth. However, there are still a few areas where the tone and tempo are less triumphal. Japan is slowly slipping back. Asia's 'tigers' are in trouble threatening the prolongation of the hitherto unstoppable growth. Be that as it may, the world economy is experiencing structural changes, thanks to the emergence of a global market, facilitated by the ever increasing importance of information technology in our lives. A new economic paradigm is sweeping the world over. India has also become an active participant in this change-process.

Perhaps the most important event of the year has been the financial turbulence, which has affected the South East Asian countries since the beginning of the second half of 1997, strongly disrupting the economic situation of this region with slowdown in growth, plunging currencies, collapsing banks and struggling companies. The Indian economy, as compared to those of the neighbouring countries, withstood the test, as its fundamentals were strong, and remained virtually untroubled by the contagion effect. Deft handling of the incipient signals of speculative pressure on the rupee by the Reserve Bank of India kept the external value of the rupee fairly steady. India's exports growth was, however, somewhat adverse on account of steep depreciation of the currencies of South East Asian countries, which compete with India in commodities like readymade garments in world trade. Banking and financial system remained impervious to this "bubble" effect by avoiding erratic investments and maintaining quality of its assets.

The Indian Economy

Real Sector Environment

The growth rate of the domestic real output in 1997-98 is estimated to have come down to 5% from more than 7% per annum attained in each of the previous three years. Agricultural sector moved away from the high growth rate of 7.9% recorded in 1996-97. Uneven distribution of rainfall in the last monsoon and untimely rains in the winter had their toll on the agricultural output, depressing its growth rate in 1997-98 to an estimated negative 2%. Slack domestic as well as export demand slowed down the pace of expansion of industrial output to 5.7% during the year, as against 6.4% growth recorded in the preceding year.



औद्योगिक वित्त शाखा, पुणे द्वारा
वित्तपोषित दुपहिया इकाई

A two-wheeler unit
financed by IFB, Pune

जे.सी.रोड शाखा, (बंगलूर)
द्वारा सहायता प्राप्त - निर्यात
हेतु वस्त्र तैयार करने वाली
इकाई

Making garments for
export - unit assisted
by J.C. Road
(Bangalore) branch

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत के प्रमुख प्रतिस्पर्धियों की मुद्राओं में तेजी से मूल्यहास होने के कारण निर्यात संवृद्धि सीमित रही। मंदी के इस परिदृश्य में जिन कारकों का योगदान रहा उनमें कतिपय प्रमुख मंदों की माँग में कमी आना और डालर का सुदृढ़ रहना शामिल है। वर्ष के दौरान निर्यात में, डालर में, 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष इनमें 5.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। आयात में विगत वर्ष की इस अवधि में प्राप्त की गई 6.7 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में इस वर्ष 4.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

भारतीय रिजर्व बैंक के विवेकपूर्ण मौद्रिक प्रबंधन के साथ-साथ पर्याप्त खाद्यान्न भण्डार एवं मंद सकल मांग के कारण कीमतें नियंत्रण में रहीं। विगत वर्ष इसी अवधि के दौरान 6.9 प्रतिशत की मुद्रास्फीति दर की तुलना में इस वर्ष के अंत में मुद्रास्फीति की दर 5 प्रतिशत (थोक मूल्य सूचकांक आधार पर वर्ष-दर-वर्ष) रही।

तेल क्षेत्र से सम्बन्धित एक व्यापक सुधारात्मक पैकेज, जिसका उद्देश्य, जटिल प्रशासनिक मूल्य प्रणाली को समाप्त करना, तेल कम्पनियों के तुलन-पत्र का शोधन करना और निजी क्षेत्र को अपेक्षाकृत बड़ी भूमिका निभाने की अनुमति प्रदान करना था, को वर्ष के दौरान वास्तविक क्षेत्र नीति की घोषणाओं में सर्वाधिक प्रमुख स्थान दिया गया।

राजकोषीय स्थिति

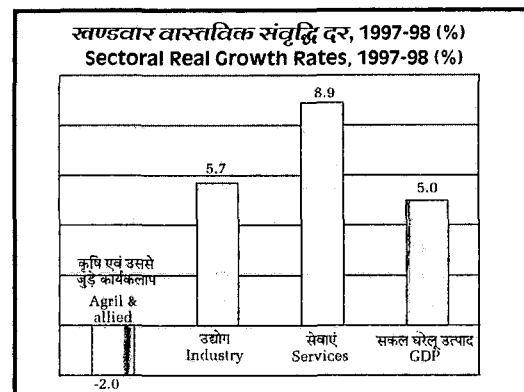
वर्ष 1997-98 का राजकोषीय घाटा सकल देशीय उत्पाद का 6.1 प्रतिशत रहा जो 4.5 प्रतिशत के बजट अनुमान से अधिक रहा। अपेक्षाकृत कम राजस्व वसूलियाँ, विशेषकर अप्रत्यक्ष करों से, आशा से अधिक अल्प बचत संग्रहण और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के दर्शाए गए विनिवेश का कार्यान्वयन नहीं हो पाना, राजकोषीय घाटे के बढ़ने के प्रमुख कारक रहे। सरकार का उधार लेने का कार्यक्रम, जिसमें दिनांकित प्रतिभूतियों के माध्यम से लगभग 52,000 करोड़ रुपये संग्रहीत किए जाने थे, भी वर्ष के प्रथमार्ध की समाप्ति तक सफलतापूर्वक लागू कर दिया गया और दिनांकित प्रतिभूतियों की परिपक्वता अवधि के आधार पर, परिपक्वता पर होने वाली आय 13.05 एवं 10.85 प्रतिशत के बीच बनी रही। उपभोक्ता मांग को सृजित करने के लिए कई उपाय किए गए जिनमें कारपोरेट एवं वैयक्तिक करों की अधिकतम दरों को घटाते हुए क्रमशः 35 प्रतिशत एवं 30 प्रतिशत कर देने की आपूर्ति पक्ष के लाभों की अपेक्षा शामिल है।

वित्तीय क्षेत्र परिवेश

मौद्रिक स्तर पर, स्थूल मुद्रा (एम-3) में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि विगत वर्ष के दौरान इसमें 16 प्रतिशत की संवृद्धि हुई थी। यह संवृद्धि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वर्ष के दौरान एम-3 हेतु निर्धारित 15 प्रतिशत से 15.5 प्रतिशत तक के निर्धारित लक्ष्य से अधिक थी। बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियाँ जिनमें 20 प्रतिशत की संवृद्धि दर्ज की गई, एम-3 का प्रमुख स्रोत रहीं। एम-3 के अन्य स्रोतों में सरकार को दिए गए निवल बैंक ऋण और वाणिज्यिक क्षेत्र को दिए गए बैंक ऋण शामिल हैं जिनमें क्रमशः 13.8 प्रतिशत एवं 14.3 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।

वर्ष के दौरान बैंक की जमाशायियों में एक उत्साहजनक वृद्धि देखी गई, जो सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल जमाशायियों में विगत वर्ष के दौरान हुई 16.5 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 18.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। आधारिक संरचना अवरोधों के कारण और अर्थव्यवस्था, जिसे आंतरिक एवं विश्वव्यापी दोनों प्रकार के प्रतिस्पर्धियों की कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया गया, की पुनः संरचना के कारण भी औद्योगिक संवृद्धि मंद रही और जिसके कारण वाणिज्यिक बैंकों के ऋणों की मांग में कमी रही। कारपोरेट ग्राहकों द्वारा ऋण की कम खपत, मंदी के कारण पूँजी बाजार से पूँजी नहीं जुटा पाने की उनकी असमर्थता का भी सूचक है।

तथापि, वर्ष की उत्तरवर्ती अवधि में इस प्रक्रिया में प्रत्यावर्तन हुआ और सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ऋणों में विगत वर्ष हुई 9.6 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 15.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1997-98 में प्रत्यक्ष ऋण और बाण्डों, डिबेंचरों एवं वाणिज्यिक पत्रों में किए गए निवेश के द्वारा बैंकिंग क्षेत्र से वाणिज्यिक क्षेत्र में हुआ कुल संसाधन बाहिरिर्वाह और अधिक सुदृढ़ रहा जिसमें पिछले वर्ष के दौरान हुई 11.8 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में इस वर्ष 17.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।



Export growth remained restrained mainly due to sharp depreciation in the currencies of India's major competitors in the international trade. Other factors that contributed to this depressed scenario included weak demand for certain key items and a strong dollar. During the year, exports, in dollar terms, grew by 1.5% as against 5.3% growth last year. Imports, in dollar terms, posted a growth rate of 4.2% compared to the 6.7% growth achieved in the previous year.

Prudent monetary management by RBI, coupled with comfortable food stocks and slack aggregate demand, however, kept prices under leash. The year ended with an inflation rate of 5% (year-on-year on WPI basis), compared to 6.9% in the same period last year.

A comprehensive oil sector reforms package, aimed at dismantling the complex administered price mechanism, cleaning up the balance sheets of oil companies, and allowing bigger roles for the private sector, occupied the most prominent place among the real sector policy announcements during the year.

Fiscal Situation

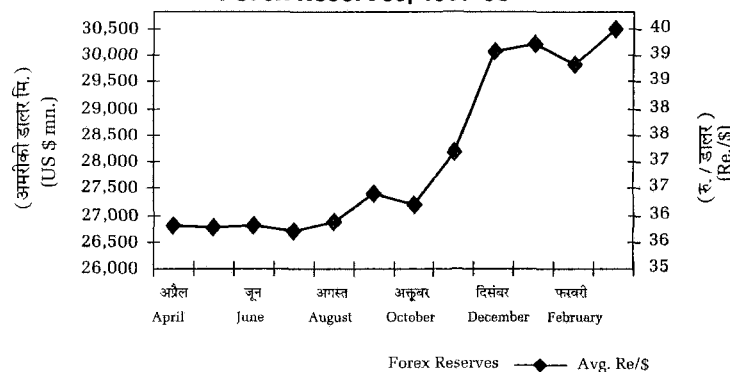
The fiscal deficit for the year 1997-98 at 6.1% of GDP exceeded the budget estimate of 4.5%. Lower revenue collections, particularly from indirect taxes, higher than expected small savings collections, and non-materialization of projected PSU divestments were the major factors responsible for the widening of the fiscal deficit. The Government's borrowing programme, which was to raise about Rs.52,000 crore through dated securities, was implemented successfully by the first half of the year, and the YTM varied between 13.05% and 10.85% depending on the maturity period of the dated securities. Several measures to generate consumer demand were initiated, including expectation of the supply side benefits of reduction in maximum rates of corporate and personal taxes to 35% and 30% respectively.

Financial Sector Environment

On the monetary front, broad money (M_3) grew by 17% as against 16% growth during the last year. This was above the RBI's target of 15% - 15.5% for M_3 for the year. Net foreign exchange assets of the banking sector, that posted a growth of 20.0%, were the major source of M_3 expansion, followed by bank credit to commercial sector and net bank credit to Government that rose by 14.3% and 13.8%, respectively.

Bank deposits witnessed a buoyant growth during the year, as reflected in 18.9% rise in ASCB aggregate deposits as against 16.5% rise in the last year. Commercial bank credit off-take remained sluggish as industrial growth was at a low pace due to infrastructural bottlenecks and also due to restructuring of the economy which was opened up to stiff competition both internally and from global players. Lower absorption of credit by the corporates was also indicative of their inability to bring in equity due to depressed capital market. However, there was

बाजार का मासिक उतार-चढ़ाव, रुपया-डालर दरें
और विदेशी मुद्रा आरक्षितियाँ, 1997-98
Monthly Movement of Market Re-\$ Rates and
Forex Reserves, 1997-98

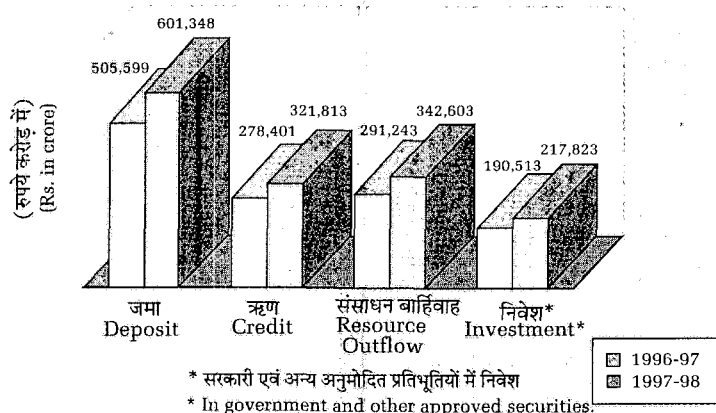


अप्रैल एवं अक्टूबर में दो सरल मौद्रिक नीतियों के बाद अल्पावधि एवं दीर्घावधि दोनों ब्याज दरें सरल रहीं। परिणामस्वरूप आरक्षित नकदी निधि अनुपात 10 प्रतिशत (17 जनवरी एवं 22 मार्च 1998 के बीच की संक्षिप्त अवधि को छोड़कर जब आरक्षित नकदी निधि अनुपात में 50 आधार अंक की वृद्धि कर दी गई थी) बना रहा और सांविधिक चल निधि अनुपात (एस एल आर) 25 प्रतिशत की दरों से एक समान बना दिया गया था। बैंक दर जिसे थोड़ा सा हटाकर नेपथ्य में डाल दिया गया था, को संदर्भ या संकेत दर के रूप में पुनः वापस लाया गया। बैंक दर में 1.5 प्रतिशत की निवल कमी हुई और इसके फलस्वरूप बैंक की प्राथमिक ऋण दरों में 50 से 100 आधार अंकों तक गिरावट आई। एक वर्ष से अधिक की परिपक्वता अवधि वाली सावधि जमा राशियों की दरों को सामान्यतः 50 से 100 आधार अंकों तक घटाते हुए समायोजित किया गया। तथापि, वर्ष की समाप्ति के आस-पास भारतीय रिजर्व बैंक ने दक्षिण-पूर्व एशियाई आर्थिक संकट के कारण उत्पन्न हुए संक्रामक प्रभावों का सामना करने के लिए और अधिक कठोर मौद्रिक प्रणाली अपनाई जिससे रुपये पर पड़ने वाले परिकल्पी दबाव को कम करने की दृष्टि से हाजिर एवं वायदा दोनों दरों को सीमित एवं कम अस्थिर रखने के लिए, कुछ शृंखलाबद्ध उपाय किए, जिसके कारण ब्याज की दरों में वृद्धि के संकेत प्राप्त हुए क्योंकि प्रणाली में चलनिधि पूर्णतः आत्मसात की जा चुकी थी। इसके पश्चात्, यद्यपि विदेशी मुद्रा बाजार में स्थिरता प्राप्त की जा चुकी थी और रुपया/डालर दर 38.36 (27 जनवरी 1998 को) थी, तथा ब्याज दरों में सुधार होने लगा था। वस्तुतः, औसत मांग दर (एक दिवसीय अंतर-बैंक दर) जो लगभग 8 प्रतिशत के आस-पास थी, कतिपय दिवसों पर अत्यधिक बढ़कर 60 से 140 प्रतिशत तक हो गई। इसी तरह, अल्पावधि प्रतिभूतियों एवं राजकोषीय बिलों से प्राप्त होने वाली आय में अभूतपूर्व वृद्धि हुई जिसके फलस्वरूप उनके मूल्यों में भारी गिरावट आई। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पहले किए गए उपाय पुनः लागू करने के पश्चात् अल्पावधि दरों में कमी आई और बाद में वे क्रमिक रूप से हटा दी गईं।

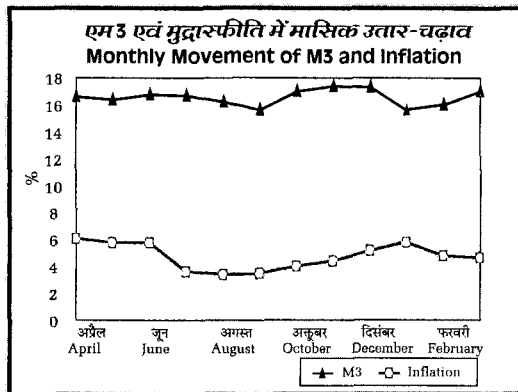
प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों पूंजी बाजारों के कार्यकलापों में मंदी बनी रही। वर्ष के दौरान, देशीय पूंजी निर्गमों से कुल 32,215 करोड़ रुपये की राशि जुटाई गई जो विगत वर्ष इसी अवधि के दौरान जुटाई गई राशि से 24.2 प्रतिशत अधिक थी। प्राथमिक पूंजी बाजार में औद्योगिक संस्थानों के बजाय वित्तीय मध्यस्थों का वर्चस्व बना रहा। जुटाये गए कुल संसाधनों में से लगभग 73 प्रतिशत भाग ऋण लिखतों से और उसमें से भी अधिकांश भाग निजी स्थापन के माध्यम से जुटाया गया तथा इसका कुछ भाग बुक बिल्डिंग प्रोसेस के माध्यम से भी जुटाया गया जो प्रभावी मूल्य बट्टाकरण व्यवस्था अपनाने की ओर इंगित करता है।

देश में विदेशी संस्थागत निवेशकों और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का संचयी निवल अन्तर्वाह क्रमशः 7.9 बिलियन और 10.5 बिलियन अमरीकी डालर रहा। विदेशी पूंजी अन्तर्वाह सम्बन्धी नीति को और अधिक उदार बनाया गया। विदेशी संस्थागत निवेशकों के द्वारा ऋण लिखतों में किए गए निवेशों एवं अनिवासी भारतीय जमाकर्ताओं को वायदा सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के स्वचालित मार्ग का विस्तार किया गया। वर्ष के दौरान गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों को अनुशासित करने तथा उनके कार्यों पर निगरानी रखने की दृष्टि से, भारतीय रिजर्व बैंक ने कई उपाय घोषित किए। नियंत्रण संबंधी इन उपायों से स्थिति के बेहतर बनने तथा इस खण्ड में एक बड़ा परिवर्तन होने की आशा की जाती है।

सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के व्यवसाय का विवरण ASCB Business Profile



पूंजी खाता परिवर्तनीयता के क्षेत्र में भारत के क्रमिक रूप से बदलने के विषय में तारापोर समिति की रिपोर्ट की संस्तुतियों के फलस्वरूप गहन परिचर्चा प्रारम्भ की गई। सुझाई गई कुछ पूर्व शर्तें, अर्थात् राजकोषीय घाटा, सकल देशीय उत्पाद का 3.5 प्रतिशत तक रखना, औसत मुद्रास्फीति को 3 प्रतिशत से 5 प्रतिशत तक सीमित रखना, आगामी तीन वर्षों के दौरान अलाभकारी आस्तियों को कम करते हुए 5 प्रतिशत तक ले आना, जिन्हें पूरा किया जाना था, एक बड़ी चुनौती सिद्ध हो रही है। यद्यपि सैद्धान्तिक तौर पर पूर्ण परिवर्तनीयता के सिद्धान्त के फलस्वरूप बचत राशियों एवं निवेश राशियों के प्रभावी सक्षम विनियोजन का कार्य पूंजी के अनियंत्रित प्रवाह के



a reversal of the process in the latter part of the year and ASCB credit rose by 15.6% as against 9.6% last year. Total resource outflow to the commercial sector from the banking sector by way of direct credit and investment in bonds, debentures and commercial papers in 1997-98 was robust, registering an increase of 17.6% compared to 11.8% rise during the preceding year.

Following two easy monetary policies in April and October, interest rates, both short- and long-term, remained soft. As a result, CRR was maintained at 10% (excepting for a brief period between January 17 and March 22, 1998 when CRR was increased by 50 basis points) and SLR was

made uniform at 25%. The Bank Rate that had earlier been relegated to the background was brought back as a reference or signal rate. The net decrease in the Bank Rate was 1.5%, and this led to the decline of the banks' prime rates, varying from 50 to 100 basis points. The term deposit rates of more than one-year maturity were, by and large, adjusted by reductions ranging from 50 to 100 basis points. However, towards the close of the year, RBI adopted a tighter monetary regime to combat the spectre of contagion arising out of the South East Asian crisis. With a view to easing the speculative pressure on rupee so that both spot and forward rates could be range-bound and less volatile, a series of measures were taken, in terms of which interest rates showed signs of increasing, as liquidity was completely sucked out of the system. Following this, though stability was achieved in the forex market and rupee/dollar rate was Rs.38.36 (as on January 27, 1998), interest rates started looking up. In fact, the average Call rate (the overnight inter-bank rate), which was veering around 8%, suddenly skyrocketed to 60-140% on certain days. Similarly, the yields on short-term securities and treasury bills reached new highs leading to sharp fall in their prices. Nevertheless, short-term rates did come down subsequently, after the measures earlier initiated by RBI were gradually rescinded.

The level of activity in the capital market, both primary and secondary, continued to remain subdued. The domestic capital issues during the year totaled Rs.32,215 crore, which were 24.2% higher than that raised during the similar period last year. Financial intermediaries, rather than industrials, dominated the primary capital market. Of the total resources raised, almost 73% was through debt instruments, and most of it was privately placed, though some part of it was through book building processes indicating adoption of effective price discounting mechanism.

Cumulative net FII inflows and FDI inflows to the country stood at US\$7.9 billion and US\$10.5 billion, respectively. The policy towards foreign capital inflow was marked by further liberalization. Forward cover facilities were extended to FIIs' investments in debt instruments, and NRI depositors. The FDI automatic route was widened. The year also witnessed a number of measures being taken by the RBI, with a view to disciplining NBFCs and overseeing their role. These control measures are expected to bring about a major shakeout in the segment for the better.

The recommendations of the Tarapore Committee Report on India's gradual move into capital account convertibility (CAC) triggered intense debate. Some of the preconditions suggested to be met, viz., fiscal deficit to be 3.5% of GDP, average inflation to be contained at 3% to 5% and NPAs to be reduced to 5% within next three years, are proving to be a great challenge. Though, in theory, the principle of full convertibility may lead to efficient allocation of savings and investments, 'unbridled capital flows', if cues are taken from the recent Asian Crisis, may become the Achilles' heel of the world economy once the global

कारण सक्रिय हो सकता है, फिर भी यदि हाल ही के एशियाई संकट के संकेतों से निष्कर्ष निकाला जाए तो विश्वव्यापी पूंजी बाजार के पूर्णतः एकीकृत होने पर, यह विश्व अर्थव्यवस्था का कमजोर बिन्दु बन सकता है. अतः इसके कार्यान्वयन के उचित समय का निर्धारण करने की आवश्यकता है और इसलिए इस पर अभी चर्चा जारी है.

वर्ष के दौरान, एक और मुद्दा वित्तीय संस्थाओं की भूमिका के संबंध में सामने आया. वाणिज्यिक बैंक द्वारा परियोजना का निधीयन करने संबंधी मानदण्डों को काफी उदार बनाने से और वित्तीय संस्थाओं द्वारा कार्यशील पूंजी वित्त के प्रति अपनी वित्तीय सम्बद्धता बढ़ाने से वित्तीय संस्थाओं और बैंकों के बीच का अंतर काफी कम होता जा रहा है. कार्यकलापों की इस समरूपता से भारत में विश्वव्यापी बैंकिंग की ओर अग्रसर होने का संकेत मिलता है. इससे सम्बन्धित प्रतिस्पर्धा की तीव्रता को समाप्त करने में मदद मिलेगी. ऐसा होने की जानकारी के फलस्वरूप ही बैंकों को दो स्तरीय प्राथमिक दर घोषित करने की अनुमति प्रदान की गई. पहली, तीन वर्ष तक की अवधि वाले कार्यशील पूंजी ऋणों हेतु और दूसरी, तीन वर्ष से अधिक की अवधि वाले सावधि ऋणों हेतु. भारतीय स्टेट बैंक ने कार्यशील पूंजी हेतु अपनी मध्यावधि ऋण दर, अपनी प्राथमिक ऋण दर की तुलना में 25 आधार बिंदु कम पर निर्धारित की है और नए सावधि ऋण अस्थाई दर के आधार पर दिये हैं. बाद में अन्य बैंकों ने भी ऐसा ही किया.

भारतीय अर्थव्यवस्था की गतिशीलता एवं अप्राक्कथनीयता ने बैंकों को अवसर एवं जोखिम दोनों उपलब्ध कराये हैं. इन समष्टि-गतिशील गणनेतर कारकों के प्रति बैंक द्वारा दिए गए कार्यनीतिक प्रतिसाद पर्याप्त थे. जमाराशियों में भारी वृद्धि होने और औसत ऋणों में अनुकूलतम संवृद्धि नहीं होने के फलस्वरूप उत्पन्न असंतुलन एवं गिरती हुई ब्याज दर को उपर्युक्त अंतर एवं आस्ति देयता प्रबंधन तकनीकों का विवेकपूर्ण ढंग से कार्यान्वयन के द्वारा तथा व्यापार और शुल्क आधारित आय में सुविचारित सुधारों के द्वारा नियंत्रित किया गया जिससे निवल ब्याज अंतर में भारी गिरावट नहीं होने पाई. चलनिधि प्रबंधन का संचालन भी पर्याप्त कुशलता एवं दक्षता से किया गया, विशेषकर तब, जब अल्पावधि राशियां लाभप्रदता के मानदण्डों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना समाप्त हो गई थीं. इस प्रकार बैंक संकट की स्थिति का सामना करने और उस पर नियंत्रण पाने के लिए तैयारी में रहा तथा वह अर्थव्यवस्था में होने वाली अनिवर्ती (रैचट) हलचलों से उत्पन्न होनेवाली उच्चस्तरीय जोखिम संबंधी संवेदनशीलता से प्रभावित होने से बच गया.

Report Junction.com



capital markets integrate fully. The timeliness of implementation perhaps, therefore, needs to be assessed carefully and hence the debate still continues.

Another issue that came to the fore during the year is the role of financial institutions (FIs). The distinctions between the FIs and banks are becoming blurred, as the norms in respect of project funding by commercial banks have been considerably liberalized and FIs are increasing their exposure to working capital finance. The convergence of these activities is reflecting a move towards universal banking in India. This will introduce depth in removing the relative competitive edges. Aware of the fall-out, banks have been permitted to announce two-tier prime rate - one for working capital loans up to three years and another for term loans exceeding three years. The State Bank of India has unveiled the medium term lending rate at 25 basis points less than its prime lending rate for working capital and made the new term loans on floating rate basis. Other banks have also followed suit subsequently.

The volatility and unpredictability of the Indian economy provided both opportunities and risks to the banks. The strategic response of the Bank to these macro-dynamic imponderables was quite adequate. The mismatch caused by the robust deposit accretion and sub-optimal growth of average credit as also the declining interest rate was managed by applying judiciously the appropriate gap and asset-liability management techniques so that the net interest margin does not experience a precipitous fall and by consciously improving upon the trading and fee-based income. The liquidity management was also handled with sufficient skill and dexterity, particularly when short-term money dried up without adversely impacting the profitability parameters. The Bank thus remained prepared to face and manage crisis situation and was not exposed to high degree risk-sensitivity on account of the ratchet movement of the economy.

Report  junction.com



द्वितीय विषाद

लाभ

बैंक को वर्ष 1997-98 के दौरान 1,861.20 करोड़ रुपये का उच्चतर निवल लाभ हुआ जबकि वर्ष 1996-97 में यह 1,329.30 करोड़ रुपये था और इस प्रकार लाभ में 40 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। (एक विनिर्माण के रूप में "प्रावधान एवं आकस्मिकताएँ" में सम्मिलित 19.95 करोड़ रुपये का लाभोष कर पुनर्समूहित होने के कारण वर्ष 1996-97 के लिए 1329.30 करोड़ रुपये का प्रकाशित लाभ, बाद में बदलकर 1349.25 करोड़ रुपये हो गया)। 5,405.69 करोड़ रुपये की निवल व्याज आय वर्ष 1996-97 के तदनुकूली आंकड़ों की तुलना में 46.46 करोड़ रुपये अधिक रही। अन्य परिचालन आय 177.10 करोड़ रुपये या 6.7 प्रतिशत अधिक बढ़कर 2,820.17 करोड़ रुपये हो गयी। लाभ आय अनुपात में भी थोड़ा सुधार हुआ और यह 57.39 प्रतिशत हो गया जबकि वर्ष 1996-97 के दौरान यह 57.54 प्रतिशत था।

लाभांश

बैंक ने पिछले वर्ष घोषित लाभांश दर के अनुसार ही, 40 प्रतिशत की दर से लाभांश घोषित किया है, जो भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के अधीन है।

निवल व्याज मालिन

सकल व्याज आय, जो वर्ष 1996-97 में 14,951 करोड़ रुपये थी, 1997-98 में बढ़कर 15,879 करोड़ रुपये हो गयी और इस प्रकार देशीय आग्रियों के औसत दर में पिछले वर्ष के तदनुकूली स्तर की तुलना में 4,480 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। परिमाण आधारित यह संवृद्धि आंशतः नही रही क्योंकि अधिकतर तौर पर आर्थिक मंदी तथा आधुनिक परियोजनाओं के कार्यान्वयन में विलंब के कारण ऋण की मांग कम रही। तथापि, देशीय कोष परिवर्तनों में अभिनिर्वाचित संसाधनों के औसत स्तर जिसमें अन्य बानों के साथ-साथ वार्षिक पत्रों में निवेश, अपरिवर्तनीय डिबेंचर, अधिमान धैर्य भी सम्मिलित है, में वर्ष 1996-97 के औसत स्तर की तुलना में 10,222 करोड़ रुपये की महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। तथापि, देशीय बाजार में गिरती हुई व्याज दरों के कारण, बैंक के आग्रियों एवं निवेश पर हुई औसत आय पिछले वर्ष की क्रमशः 13.4 प्रतिशत एवं 10 प्रतिशत की तुलना में घटकर क्रमशः 11.9 प्रतिशत एवं 9.7 प्रतिशत रहे गई। वितीय वर्ष के प्रारम्भ में स्टेट बैंक अग्रिम दर (बैंक की मूल उधार दर) जो, 14.5 प्रतिशत थी, वर्ष की समाप्ति पर 14 प्रतिशत हो गई। तथापि वर्ष के अधिकांश भाग में यह 13 से 13.5 प्रतिशत तक के निम्नतर स्तरों पर बनी रही। इसके अलावा, अक्टूबर 1997 से सभी पात्र आरक्षित नकदी निधि अनुपात शेष गति पर, कम दर पर व्याज अनुमत किया गया जिसके फलस्वरूप निवेश पर होनेवाली आय में कमी आई। इन घटकों के फलस्वरूप व्याज आय में 6.2 प्रतिशत की निम्नतर वृद्धि हुई जबकि वर्ष 1996-97 के दौरान इसमें 15.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। वर्ष 1997-98 के दौरान कुल व्याज व्ययों में भी 882 करोड़ रुपये या 9.2 प्रतिशत की निम्नतर वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष यह गति 9.591 करोड़ रुपये थी। इस अवधि के दौरान, उच्चतम अवधि (3 वर्ष एवं उससे अधिक अवधि) की देशीय जमापणियों की व्याज दर में 50 आधार बिन्दुओं की कमी की गई। फिर भी, चूँकि ये केवल नवीकरण या नई जमापणियों के संबंध में ही लागू होती हैं, वर्तमान जमापणियों पर व्याज दरों में कमी करने का पूरा लाभ विलंबकारी प्रभाव के कारण नहीं मिल पाया। इसी प्रकार, वर्ष 1997-98 में देशीय जमापणियों में 19.1 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष इसमें 15.1 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई थी। इन सभी के फलस्वरूप 19.1 प्रतिशत की तुलना में व्याज व्यय की गति में 9.2 प्रतिशत की उच्चतर वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप, वर्ष 1997-98 के दौरान निवल व्याज आय थोड़ी सी बढ़कर 5,406 करोड़ रुपये हो गई जबकि वर्ष 1996-97 में यह 5,359 करोड़ रुपये थी और निवल व्याज मालिन (निवल व्याज आय/औसत उपावर्क आस्तियों) में थोड़ी गिरावट आई और यह वर्ष 1996-97 के 4.01 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 1997-98 में 3.57 प्रतिशत रहे गया।

व्याजोत्तर आय

व्याजोत्तर आय अथवा अन्य परिचालन आय 2,820 करोड़ रुपये हुई जो 1996-97 में दर्ज की गई 2,643 करोड़ रुपये की आय से 177 करोड़ रुपये अथवा 6.7 प्रतिशत अधिक रही। व्याजोत्तर आय संवृद्धि में मुख्यतः सरकारी कोष व्यवसाय पर

Financial Performance

Profit

The Bank posted a higher net profit of Rs.1,861.20 crore for the year 1997-98 against Rs.1,329.30 crore for 1996-97, registering an increase of 40% (The published profit of Rs.1,329.30 crore for 1996-97 was subsequently changed to Rs.1,349.25 crore, arising out of regrouping of Tax on Dividend of Rs.19.95 crore, included in "Provision & Contingencies", as an Appropriation). Net interest income of Rs.5,405.69 crore was Rs.46.46 crore higher than the corresponding figure for 1996-97. Other income increased by Rs.177.10 crore or 6.7% to Rs.2,820.17 crore. Cost/income ratio also improved to 57.39% from 57.54% during 1996-97.

Dividend

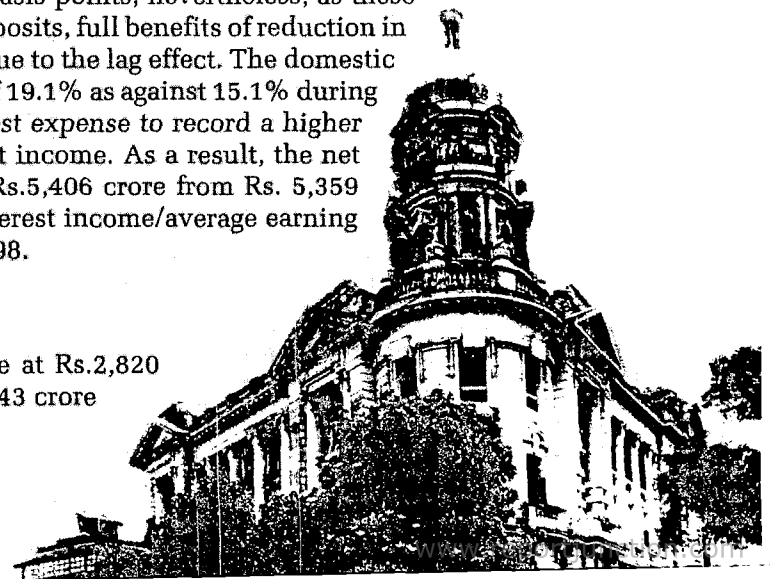
The Bank declared, subject to RBI approval, a dividend at the rate of 40%, same as the dividend declared in the previous year.

Net Interest Margin

The gross interest income grew from Rs.14,951 crore in 1996-97 to Rs.15,879 crore in 1997-98, and thus reflected an increase in the average level of domestic advances by Rs.4,480 crore over the corresponding level in the previous year. This volume-driven growth was not up to the expected level, as credit demand was sluggish due mostly to economic slowdown and delay in the implementation of infrastructure projects. The average level of resources deployed in the domestic treasury operations, which, inter alia, include investment in commercial papers, non-convertible debentures, preference shares, however, went up substantially by Rs.10,222 crore from the average level of 1996-97. However, due to the declining interest rates in the domestic market, the average yield on the Bank's advances and investments came down respectively to 11.9% and 9.7% from 13.4% and 10.0% in the previous year. State Bank Advance Rate (the Prime Lending Rate of the Bank), which was 14.5% in the beginning of the fiscal, stood at 14% at the end; however, during a major part of the year it remained at lower levels of 13-13.5%. Besides, interest rate was allowed at a lower rate from October 1997 onwards on all eligible CRR balances and this reduced the yield on investments. These factors reflected in a lower growth of interest income of 6.2% compared to 15.4% growth registered during 1996-97. The aggregate interest expenses during 1997-98 also recorded a lower growth of Rs.882 crore or 9.2% over Rs.9,591 crore in the previous year. During the period, interest rate for domestic deposits for the highest time bracket (three years and above) was reduced by 50 basis points; nevertheless, as these are applicable only in respect of renewal and fresh deposits, full benefits of reduction in interest rates on existing deposits was not available due to the lag effect. The domestic deposit growth in 1997-98 was at a very healthy rate of 19.1% as against 15.1% during the previous year. All these led the volume of interest expense to record a higher growth of 9.2% compared to 6.2% growth of interest income. As a result, the net interest income during 1997-98 rose marginally to Rs.5,406 crore from Rs. 5,359 crore in 1996-97, and the net interest margin (net interest income/average earning assets) fell from 4.01% in 1996-97 to 3.57% in 1997-98.

Non-interest Income

Non-interest income or other operating income at Rs.2,820 crore was higher by Rs.177 crore or 6.7% over Rs.2,643 crore



प्राप्त कमीशन, विप्रेषण पर विनिमय आय, निवेशों की बिक्री से प्राप्त आय एवं अन्य विविध आय का योगदान रहा। लीजिंग आय, जो ब्याजेतर आय का हिस्सा है, में वर्ष 1996-97 की तुलना में 28 करोड़ रुपये की पर्याप्त वृद्धि हुई। प्रतिस्पर्धा में तीव्रता से बढ़ोतरी होने के कारण विदेशी मुद्रा आय में पिछले वर्ष की तुलना में कमी आई जिसके कारण इस व्यवसाय में वृद्धि करने हेतु हमें अत्यधिक आकर्षक दरें उद्धृत करनी पड़ीं। यद्यपि बैंक द्वारा किए जाने वाले विदेशी मुद्रा के क्रय-विक्रय व्यवसाय में वास्तव में वृद्धि हुई फिर भी विदेशी मुद्रा व्यवसाय से हुई आय में कमी आई।

परिचालन व्यय

परिचालन व्ययों में 2.5 प्रतिशत की बहुत मामूली वृद्धि हुई और वृद्धि होने से यह राशि 4721 करोड़ रुपये हो गई। वर्ष 1996-97 में इन व्ययों में 3.30 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। स्टाफ व्यय राशि में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष यह राशि 3323 करोड़ रुपये थी। तथापि, उपरि व्ययों में 9.3 प्रतिशत की भारी कमी आई। यह कमी निःसंदेह बैंक द्वारा, निक्षेप बीमा एवं प्रत्यय गारंटी निगम की योजना के अंतर्गत उपलब्ध गारंटी सुरक्षा सम्बन्धी प्रीमियम का भुगतान बचाने के कारण सम्भव हो पाई। बैंक ने योजना से अलग होने का विकल्प अपनाया और निगम को वर्ष-दर-वर्ष भारी प्रीमियम चुकाने के स्थान पर अपनी स्वयं की सुरक्षित पूँजी व्यवस्था निर्मित की।

प्रावधान एवं आकस्मिकताएं

वित्तीय वर्ष 1997-98 के दौरान आयकर संबंधी कारपोरेट दर को घटाकर 35 प्रतिशत तक कर दिया गया जबकि वित्तीय वर्ष 1996-97 के लिए यह तदनुसूची दर 40 प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त, वर्ष 1996-97 के लिए आयकर पर लागू 7.5 प्रतिशत की अधिभार दर वर्ष 1997-98 के लिए समाप्त कर दी गई। गत वर्ष के 3 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 1997-98 के लिए लागू 2 प्रतिशत ब्याज कर की निम्न दर के कारण आय करों के लिए प्रावधान की जाने वाली राशि भी कम थी। यद्यपि, वर्ष 1996-97 में संविभाग के लिए 71 प्रतिशत के स्तर तक “बाजार के लिए चिह्नित” (एम टी एम) आधार पर निवेश मूल्यह्रास के रूप में 3.87 प्रतिशत करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया था, जबकि चालू वर्ष में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा की गई घोषणा के कारण विभिन्न प्रतिभूतियों की परिपक्वता पर आय में काफी गिरावट आने के कारण 100 प्रतिशत के स्तर तक “बाजार के लिए चिह्नित” आधार पर पुनरांकन के रूप में पर्याप्त राशि उपलब्ध थी। परिणामस्वरूप, वर्ष 1997-98 में आयकर के लिए प्रावधान की गई राशि बढ़कर 1001 करोड़ रुपये हो गई जबकि पिछले वर्ष यह राशि 925 करोड़ रुपये थी। बैंक को अपनी अलाभकारी आस्तियों के लिए वर्ष 1997-98 के दौरान 1151 करोड़ रुपये की राशि का उच्चतर प्रावधान करना पड़ा, जबकि पिछले वर्ष 833 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया था। इस राशि में वृद्धि होने का मुख्य कारण बैंक द्वारा निक्षेप बीमा एवं प्रत्यय गारंटी निगम की गारंटी योजना से अलग होने पर प्रावधान संबंधी अपेक्षाओं में लगभग 300 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी करना था। इन प्रावधानों का परिमाण आगे चलकर कम होता जाएगा और बैंक द्वारा निगम की गारंटी योजना में बने रहने की स्थिति में संदेय गारंटी प्रीमियम की राशि की तुलना में बहुत कम होगा।

मार्च 1998 के अंत में, बैंक के निवल ऋणों की तुलना में, निवल अलाभकारी आस्तियों में गिरावट आई और यह 6.07 प्रतिशत रही जबकि पिछले वर्ष के अंत में यह 7.30 प्रतिशत थी।

निम्नलिखित प्रमुख संकेतकों में बैंक के बेहतर निष्पादन को दर्शाया गया है।

तालिका 1: प्रमुख निष्पादन संकेतक

संकेतक	1995-96	1996-97	1997-98
औसत आस्तियों पर आय (प्रतिशत)	0.598	0.88	1.09
औसत ईक्विटी पर आय (प्रतिशत)	15.22	16.67	19.37
आय की तुलना में व्यय (प्रतिशत)	59.54	57.54	57.39
प्रति शेयर आय (रुपये)	17.54	26.66	35.36
प्रति कर्मचारी निवल लाभ (रुपये)	35,703	56,278	77,000
पूँजी पर्याप्तता अनुपात (प्रतिशत)	11.60	12.17	14.58
श्रेणी - I	6.9	8.45	10.69
श्रेणी - II	4.7	3.72	3.89

recorded in 1996-97. The growth in non-interest income was mainly contributed by commission on government treasury business, exchange on remittances, profit on sale of investments and other miscellaneous income. The leasing income, which forms a part of non-interest income, recorded a substantial increase of Rs.28 crore over that in 1996-97. Forex income declined from the previous year due to intensifying competition that necessitated quoting very fine rates to attract the business. The fall in earnings from the foreign exchange business was despite the fact that the volume of forex sales/purchase business handled by the Bank actually increased.

Operating Expenses

There was only a very modest increase in operating expenses which went up by 2.5% to Rs.4,721 crore. Expenses in 1996-97 had gone up by 3.3%. Staff expenses recorded a growth of 7.1% over Rs.3,323 crore incurred during the previous year. However, growth of overhead expenses came down substantially by 9.3%. This containment was no doubt helped by the saving the Bank was able to effect on the payment of fee for guarantee cover available under the scheme of the DI&CGC. The Bank has chosen to opt out of the scheme and build its own cover instead of paying huge fee to the Corporation year after year.

Provisions and Contingencies

The corporate rate for income tax during the financial year 1997-98 was reduced to 35% from the corresponding rate of 40% for the financial year 1996-97. Further, the surcharge on income tax at the rate of 7.5% applicable for the year 1996-97 was abolished for the year 1997-98. Provision towards interest tax was also lower because of lower rate of interest tax at 2% applicable for 1997-98, as against 3% for the earlier year. While in the year 1996-97, an amount of Rs.3.87 crore was provided for as investment depreciation based on the "marked to market" (MTM) level of 71% of the portfolio, during the current year with 100% MTM, a substantial amount was available by way of write-back due to drastic fall in YTM of various securities, as announced by RBI. As a result, the provision towards income tax in 1997-98 went up to Rs.1,001 crore as against Rs.925 crore in the preceding year. The Bank had to make a higher provision of Rs.1,151 crore during 1997-98 towards its non-performing assets (NPAs) as against Rs.833 crore made in the previous year. This was mainly due to increase in provisioning requirement by about Rs.300 crore consequent upon the Bank's withdrawal from the credit guarantee scheme of DI&CGC. The quantum of such provisions will in future go down and be quite modest in comparison to the guarantee fee payable had the Bank continued with the Corporation's guarantee scheme.

At end-March 1998, the net NPAs to the net loans of the Bank decreased to 6.07% from 7.30% at the end of the previous year.

The improved performance of the Bank is reflected in the following key indicators.

Table 1: Key Performance Indicators

Indicators	1995-96	1996-97	1997-98
Return On Average Assets (%)	0.598	0.88	1.09
Return On Average Equity (%)	15.22	16.67	19.37
Expenses to Income (%)	59.54	57.54	57.39
Earning Per Share (Rs.)	17.54	26.66	35.36
Net Profit Per Employee (Rs.)	35,703	56,278	77,000
Capital Adequacy Ratio (%)	11.60	12.17	14.58
Tier I	6.9	8.45	10.69
Tier II	4.7	3.72	3.89

औसत आस्तियों पर आय (आर ओ ए ए)

वर्ष के दौरान, औसत आस्तियों पर आय में सुधार हुआ और इसमें 1.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि 1996-97 में यह वृद्धि 0.88 प्रतिशत ही थी. औसत आस्तियों पर आय का एक अपघटन विश्लेषण नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है.

तालिका 2: औसत आस्तियों पर आय के घटक
(औसत आस्तियों का प्रतिशत)

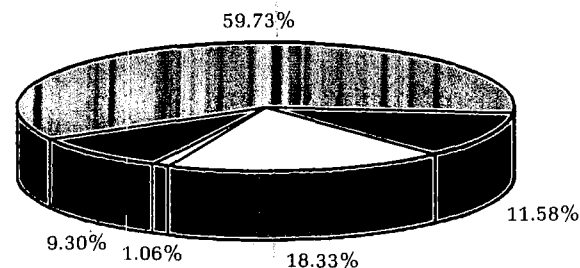
	1995-96	1996-97	1997-98
1) ब्याज आय	9.31	9.94	9.28
2) व्यय किया गया ब्याज	5.91	6.38	6.12
3) (1) - (2)	3.40	3.56	3.16
4) अन्य आय	1.98	1.76	1.65
क. कुल आय {(3)+(4)}	5.38	5.32	4.81
5) कर्मचारी लागत	2.41	2.21	2.08
6) अन्य परिचालन व्यय	0.79	0.85	0.68
7) प्रावधान एवं आकस्मिकताएं	1.58	1.38	0.96
ख. कुल लागत {(5)+(6)+(7)}	4.78	4.44	3.72
औसत आस्तियों पर आय, अर्थात्, (क)-(ख)	0.60	0.88	1.09

औसत आस्तियों पर हुई आय में वृद्धि, आय में होने वाली वृद्धि से कहीं अधिक व्ययों में कमी करने और प्रावधान एवं आकस्मिकताओं में कटौती करने के फलस्वरूप हुई. इसी तरह, औसत आस्तियों की आय में सुधार होने के कारण और उच्च ईक्विटी गुणक के कारण भी चालू वर्ष के दौरान ईक्विटी पर आय में 19.37 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष इसमें 16.67 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी. प्रति शेयर आय, जो लेखा मूल्य का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, में भी वर्ष के दौरान 32.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई.

पूंजी

भारत में वाणिज्यिक बैंक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी जोखिम आधारित पूंजी पर्याप्तता दिशा-निर्देशों के अधधीन कार्य करते हैं. इन दिशा-निर्देशों का उपयोग पूंजी पर्याप्तता अनुपात निकालने के लिए किया जाता है जो तुलन-पत्र की आस्तियों से सम्बद्ध ज्ञात जोखिम के साथ-साथ तुलन-पत्र में शामिल नहीं किए गए कुछ अन्य जोखिमों पर भी आधारित होता है. वर्ष 1997-98 के दौरान बैंक ने एक सुदृढ़ पूंजी स्थिति बनाए रखी. मार्च 1998 के अंत तक कुल पूंजी (श्रेणी-1 एवं श्रेणी-2) 11,150 करोड़ रुपये रही जो जोखिम समायोजित आस्तियों का 14.58 प्रतिशत है और जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत 8 प्रतिशत के अनुपात से काफी अधिक था. लाभ पुनर्निवेश एवं आस्तियों के जोखिम विवरण में परिवर्तन करने से श्रेणी-1 की पूंजी में पिछले वर्ष की तुलना में 2.24 प्रतिशत की वृद्धि हुई.

मार्च 1998 के अंत तक बैंक की शेयरधारिता का स्वरूप
Shareholding Pattern
of the Bank at end-March 1998



भारतीय रिजर्व बैंक
 RBI
 पारस्परिक निधियों सहित वित्तीय संस्थाएं
 Financial Institutions including Mutual Funds
 अन्य कम्पनी
 Other Corporate
 अनिवासी (विदेशी संस्थागत निवेशक/विदेशी कम्पनी निकाय/अनिवासी भारतीय)
 Non Residents (FIIs/OCBs/NRIs)*
 अन्य व्यक्ति एवं कर्मचारी
 Other Individuals & Employees
 * विश्वजमा रसीदों हेतु निक्षेपी के रूप में बैंक ऑफ न्यूयार्क सहित
 * Including the Bank of New York as depository for GDRs.

Return on Average Assets (ROAA)

The Return on Average Assets (ROAA) improved from 0.88% in 1996-97 to 1.09% for the year. A decomposition analysis of ROAA is given in Table below.

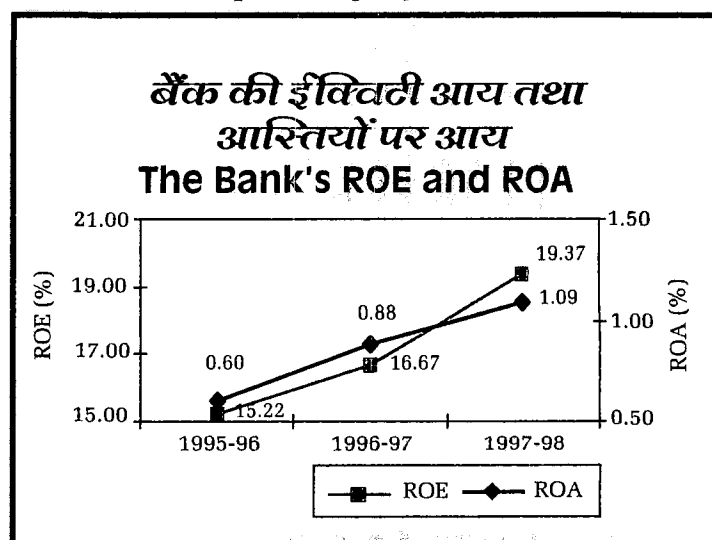
Table 2: Components of ROAA
(Percentages are to Average Assets)

	1995-96	1996-97	1997-98
i) Interest Income	9.31	9.94	9.28
ii) Interest Expended	5.91	6.38	6.12
iii) (i) – (ii)	3.40	3.56	3.16
iv) Other Income	1.98	1.76	1.65
A. Total Income {(iii) + (iv)}	5.38	5.32	4.81
v) Employee Cost	2.41	2.21	2.08
vi) Other Operating Expenses	0.79	0.85	0.68
vii) Provisions & Contingencies	1.58	1.38	0.96
B. Total Cost {(v)+(vi)+(vii)}	4.78	4.44	3.72
ROAA i.e., (A)-(B)	0.60	0.88	1.09

The ROAA improved more due to the containment of expenditure and reduction in provision and contingencies than due to increase in income. Similarly, ROE also improved from 16.67% to 19.37% during the current year because of the improvement of ROAA and also due to higher equity multiplier. EPS, which is an important determinant of the accounting value, also improved during the year by 32.6%.

Capital

The commercial banks in India are subject to risk-based capital adequacy guidelines issued by the RBI. These guidelines are used to evaluate capital adequacy based on the perceived risk associated with balance sheet assets as well as certain off-balance sheet exposures. The Bank continued to maintain a strong capital position during 1997-98. Total capital (Tier I and Tier II) amounted to Rs.11,150 crore at end-March 1998, representing 14.58% of risk adjusted assets, which was well over the internationally accepted ratio of 8%. Plough-back of profits and change in the risk-profile of the assets increased Tier I capital by 2.24% over the previous year.



ऋण प्रबंधन

जोखिम प्रबंधन

बैंक एक ऐसी सुदृढ़ ऋण संस्कृति के प्रति वचनबद्ध है, जो उच्च आस्ति गुणवत्ता को सुनिश्चित करने की आवश्यकता को मान्यता देती है। इस प्रयास में, जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया के वर्तमान उपायों में सुधार करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। संशोधित आंतरिक ऋण जोखिम आकलन प्रणाली का प्रवर्तन इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है जो वित्तीय जोखिमों के साथ-साथ अन्य प्रकार के जोखिम, जैसे एक ऋण खाते से जुड़े उद्योग जोखिम, पर भी नियंत्रण रखती है। यह प्रणाली सुस्थापित हो गई है और इसमें बैंक के बड़े वाणिज्यिक एवं औद्योगिक ऋण संविभाग का एक प्रमुख भाग सम्मिलित है। जोखिम आकलन की पद्धति में एकरूपता लाने के उद्देश्य से ऋण जोखिम आकलन प्रणाली लघु उद्योग एवं इसी तरह कृषि खण्डों के उच्च राशि वाले खातों के लिए भी लागू की गई है।

प्रत्येक श्रेणी के विभिन्न उद्योगों को प्रदान किए जाने वाले ऋणों को समुचित स्तरों तक सीमित रखते हुए बैंक का ऋण संविभाग काफी विविध है। विभिन्न उद्योगों को प्रदान किए गए ऋण, सीमा के अंदर हैं जिनका निर्धारण विभिन्न जोखिमों के प्रबंधन के अधीन है और उन्हें गहन निगरानी में रखा गया है।

ऋण नीति एवं कार्यविधि

अपनी स्वयं की ऋण निर्धारण एवं ऋण वितरण प्रणालियों को निर्धारित करने और उनका विकास करने के लिए और अधिक स्वतंत्रता मिलने से, बैंक ने ऋण लेने वाली इकाइयों की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं का निर्धारण करने की कार्य-पद्धति, जिसे सामान्यतः अधिकतम अनुमत बैंक वित्त के नाम से जाना जाता है, में संशोधन किया है और ऋण देने के दृष्टिकोण से जुड़ी अधिकांश कठिनाइयों एवं कमियों को दूर किया है जो काफी समय से कार्यशील पूंजी के लिए इकाई को तैयार करने और बैंक से सहायता के लिए ऋणी की वास्तविक आवश्यकताओं का स्थिति विशेष निर्धारण करने में रुकावटें पैदा कर रही थीं। परिवर्तित प्रक्रिया ग्राहकों के और अधिक अनुकूल है क्योंकि इससे उन्हें जानी और अनजानी दोनों परिस्थितियों के कारण अनुभव की जाने वाली उनकी ऋण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिलेगी। इन क्षेत्रों के लिए बैंक की पैठ एवं बैंक निवेश बढ़ाने की दृष्टि से व्यापार एवं सेवाओं का वित्तपोषण करने संबंधी दिशा-निर्देशों को भी और अधिक लचीला बनाया गया है। एक अन्य क्षेत्र जिसने ध्यान आकर्षित किया वह था साफ्टवेयर उद्योग का वित्तपोषण करने से संबंधित नीति तैयार करना। इसमें शीघ्रता से तकनीकी परिवर्तन हो रहे हैं और इसमें अत्यधिक निर्यात की संभावनाएं हैं।

ऋण लेखा-परीक्षा

बैंक ने अपने वाणिज्यिक ऋण संविभाग की गुणवत्ता में निरंतर सुधार सुनिश्चित करने के लिए एक विस्तृत ऋण लेखा-परीक्षा प्रक्रिया आरंभ की है। इस ऋण लेखा-परीक्षा में सभी बड़े वाणिज्यिक ऋणियों (5 करोड़ रुपये और उससे अधिक की कुल ऋणग्रस्तता वाले) के खातों की संस्वीकृति पूर्व एवं संस्वीकृति पश्चात् की ऋण प्रक्रिया की लेखा-परीक्षा करना शामिल है। उच्च जोखिम एवं अधिक बकाया राशि वाले ऋण खातों को वरीयता देते हुए निर्दिष्ट ऋण सीमा से कम राशि वाले कुछ खातों को भी ऋण लेखा-परीक्षा में शामिल किया गया है।

अलाभकारी आस्ति प्रबंधन

अलाभकारी आस्तियों पर नियंत्रण करने हेतु निवारक एवं उपचारी उपायों को शामिल करते हुए एक दुहरा दृष्टिकोण अपनाया गया है। अलाभकारी आस्ति बनने की संभावना वाले खातों की शीघ्रतापूर्वक पहचान की जाती है और सुधारात्मक उपाय शुरू किए जाते हैं जिससे कि ऋण खाता अलाभकारी आस्ति की श्रेणी में न आए। आस्तियों द्वारा प्रतिभूत किए गए उन खातों पर लगातार निगरानी रखी जाती है जिनमें आस्तियों का मूल्य नगण्य हो गया है या नगण्य हो जाने की संभावना है। ऋणियों से संबंधित अपनी अलाभकारी आस्तियों का प्रबंध करने के लिए बैंक, एक नीति के रूप में, उन ऋणियों के साथ समझौता एवं एकमुश्त निपटान करना स्वीकार करता है, जो वास्तविक कारणों से बैंक के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने में असमर्थ रहे हैं।

ऋण वसूली टिब्यूनलों में हस्तांतरित किए गए मामलों का शीघ्रतापूर्वक निपटान करने हेतु स्थानीय प्रधान कार्यालयों में विशेष विधिक कक्ष बनाए गए हैं। वर्ष के दौरान दो चयनित केन्द्रों में पुनर्वास एवं वसूली शाखाएं, खोली गई हैं। बेहतर अलाभकारी आस्ति नियंत्रण एवं प्रबंधन के लिए संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ बनाने के लिए ऐसी ही कुछ और शाखाएं खोले जाने का प्रस्ताव है।

ऋण पुनर्गठन उपायों के माध्यम से रुग्ण औद्योगिक इकाइयों का पुनर्वास करने के लिए बैंक, औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड के साथ घनिष्ठ सहयोग से कार्य कर रहा है। औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड ने अभी तक बैंक की 112 रुग्ण इकाइयों के लिए पुनर्वास पैकेजों को अनुमोदित किया है, जिसमें से 84 पैकेज कार्यान्वित किए जा चुके हैं। वर्ष के दौरान, चार कम्पनियों को सफलतापूर्वक पुनः निष्पादन योग्य बनाया गया और 11 कम्पनियों की आस्तियों को मानक आस्तियों की श्रेणी में लाया गया। विलयन योजनाओं के द्वारा सात कंपनियों की आस्तियों में सुधार लाने का प्रयास किया गया।

Credit Management

Risk Management

The Bank is committed to a healthy credit culture that recognizes the need to ensure high asset quality. In this endeavour, improvement in the existing measures in the risk management process is receiving special attention. A major step in this direction is the introduction of the revised in-house Credit Risk Assessment (CRA) system, which captures financial risks as also other types of risks, such as, industry risk in a borrowal account. The system has well stabilized, and covers a major part of the Bank's large commercial and industrial loan portfolio. In order to bring about uniformity in the risk assessment methodology, the CRA system has also been extended to high value accounts in the SSI and agricultural segments as well.

The Bank's credit portfolio is well diversified cutting across various industries with exposures in each category restricted to reasonable levels. Exposures to different industries are *within limits set on the consideration of management of different risks and are kept under close monitoring.*

Credit Policy and Procedures

With the greater freedom to develop and determine its own credit assessment and credit delivery systems, the Bank revised the methodology of assessing the working capital requirements of the borrowing units known generally as Maximum Permissible Bank Finance (MPBF) and removed many of the rigidities and infirmities associated with the approach which for long had stood in the way of making unit and situation specific assessment of a borrower's actual requirements of assistance from the Bank for working capital. The changed process is far more customer-friendly as it enables them to meet their requirements arising out of foreseen as well as unforeseen circumstances. Guidelines for financing trade and services were also made more flexible with a view to increasing the Bank's reach and exposure to these sectors. Another area that received attention was the policy towards the financing of the software industry, which has been making rapid technological strides and holds large export potential.

Credit Audit

The Bank has put in place an elaborate credit audit process to ensure continuous improvement in the quality of its commercial credit portfolio. The credit audit covers pre-and post-sanction credit process in respect of accounts of all large commercial borrowers (total indebtedness of Rs.5 crore and above). Some of the accounts below the cut-off limit are also covered, giving preference to high risk-rated and high-value accounts.

NPA Management

A two-pronged approach comprising preventive and curative measures is followed to control NPAs. Potential borderline accounts are quickly diagnosed and remedial measures initiated so that the accounts do not slip into the NPA category. Accounts secured by assets, which have lost or are likely to lose value, are monitored on an ongoing basis. The Bank as a policy accepts compromises and one-time settlements as measures of managing its non-performing assets relating to borrowers who have failed to meet their obligations to the Bank on account of genuine reasons.

In order to expedite disposal of cases transferred to the Debt Recovery Tribunals, special legal cells have been created at Local Head Offices. Rehabilitation and recovery branches were opened at two select centres during the year. More such branches are proposed to be opened to strengthen the institutional set-up for better NPA control and management.

The Bank is working in close association with the BIFR to rehabilitate sick industrial units through debt restructuring measures. The BIFR has so far approved rehabilitation packages for 112 sick units of the Bank, of which 84 packages have been implemented. During the year, four companies were successfully restored to health, and the assets of 11 companies were upgraded to the standard assets category. Assets of seven companies were sought to be improved through merger plans.

बाजार जोखिम प्रबंधन एवं राजकोषीय परिचालन

कारपोरेट कार्यालय में आस्ति-देयता प्रबंधन समिति, बैंक की आस्ति-देयता संरचना की निरंतर आधार पर जाँच करती है और बैंक की तुलन-पत्र नीति तैयार करती है। आस्ति-देयता प्रबंधन समिति की अध्यक्षता बैंक के मुख्य वित्तीय अधिकारी द्वारा की जाती है और इसमें प्रमुख व्यवसाय इकाइयों के शीर्ष अधिकारियों सहित मुख्य ऋण अधिकारी शामिल होते हैं। अधिकतम लाभ की प्राप्ति के लिए आस्ति-देयता प्रबंधन समिति आस्ति एवं देयता संरचना की देखरेख और उनका नियंत्रण करती है तथा उसके साथ ही पूंजी पर्याप्तता एवं समुचित चलनिधि प्रबंधन भी सुनिश्चित करती है। बैंक की विदेश स्थित शाखाओं की आस्तियों एवं देयताओं का प्रबंधन मेजबान देश के विनियमों और रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुरूप किया जाता है।

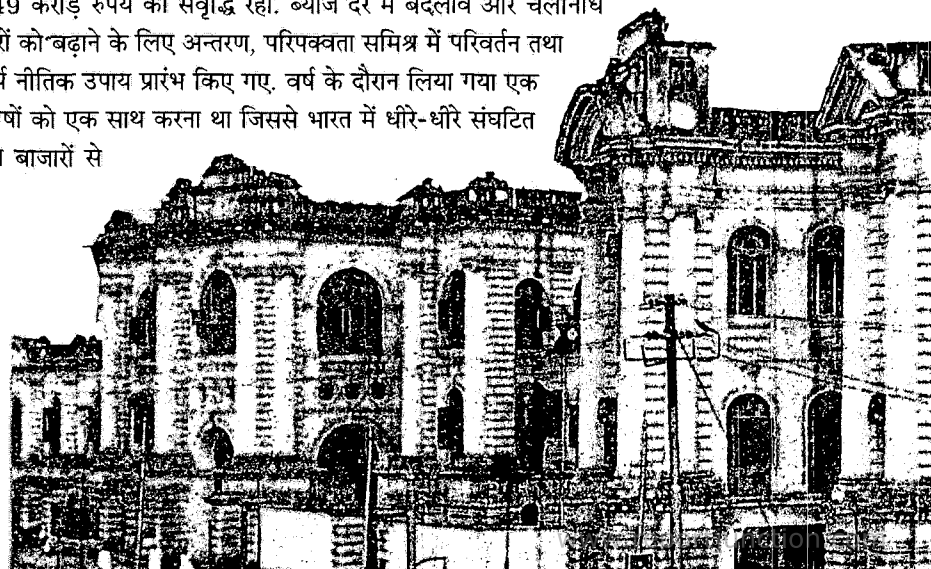
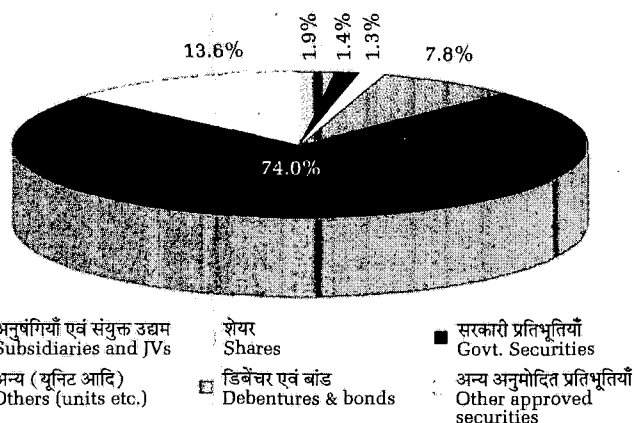
बैंक के बाजार सम्बन्धी जोखिमों का मूल्यांकन विभिन्न आधुनिकतम प्रौद्योगिकियों, जैसे समय-विश्लेषण, जोखिम मूल्य (वैल्यू एट रिस्क) प्रणाली की निगरानी करने संबंधी कार्य-प्रणाली अपनाना और जोखिम सम्बद्धताओं का प्रबंध करने के लिए अंतर एवं अनुकृति अभ्यास करना, का प्रयोग करके किया जाता है।

ब्याज दर विनिमय (स्वैप), परस्पर लेनदेन की मुद्रा (क्रॉस करेंसी) एवं दीर्घावधि विनिमय (लॉंग डेटेड स्वैप) के रूप में व्युत्पन्न उत्पादों का उपयोग बैंक की देश एवं विदेश स्थित शाखाओं में लगातार बढ़ता जा रहा है। बैंक अपने ग्राहकों को व्युत्पन्न उत्पाद, जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमत है, भी प्रस्तावित करता है और ऐसी जोखिम सम्बद्धता को आधार प्रति आधार पर प्रारक्षित किया जाता है। जोखिम की स्थिति बाजार के लिए चिह्नित की जाती है। रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुरूप, इसकी एक दिवसीय निवल विदेशी मुद्रा से संबंधित जोखिम की स्थिति सीमा को बैंक की श्रेणी-1 पूंजी के 5% तक सीमित रखा जाता है।

कोष परिचालन

कोष परिचालनों में आरक्षित नकदी निधि अनुपात और सांविधिक चलनिधि अनुपात के रखरखाव के रूप में आरक्षित अवधारणों का अनुपालन करने के अलावा, अवशिष्ट नकद प्रबंधन, अर्थात् अल्पावधि अधिशेषों एवं घाटे का प्रबंधन करना, लाभप्रदता एवं जोखिम प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित करना और विभिन्न कोष उत्पादों की आपूर्ति करना शामिल है। वर्ष के दौरान, भारत में निवेश में 7,049 करोड़ रुपये की संवृद्धि रही। ब्याज दर में बदलाव और चलनिधि की स्थिति दर आधारित आय के अवसरों को बढ़ाने के लिए अन्तरण, परिपक्वता समिश्र में परिवर्तन तथा राइडिंग द ईल्ड कर्व जैसे समुचित कार्य नीतिक उपाय प्रारंभ किए गए। वर्ष के दौरान लिया गया एक महत्वपूर्ण निर्णय देशीय एवं विदेशी कोषों को एक साथ करना था जिससे भारत में धीरे-धीरे संघटित हो रहे विदेशी मुद्रा, प्रतिभूति और मुद्रा बाजारों से फिर फायदा उठाया जा सके।

बैंक के देशीय निवेश का संघटन, 1997-98
Composition of the Bank's
Domestic Investment, 1997-98



Market Risk Management and Treasury Operations

The Asset-Liability Management Committee (ALCO) at the corporate office examines the Bank's asset-liability structure on an on-going basis and formulates the balance sheet policy for the Bank. ALCO is headed by the Bank's Chief Financial Officer and includes the heads of the key business units and the Chief Credit Officer. The ALCO manages and controls the structure of assets and liabilities to optimize profits, at the same time, ensuring capital adequacy and proper liquidity management. The assets and liabilities of the Bank's foreign branches are managed in conformity with the host country regulations and the RBI's directives.

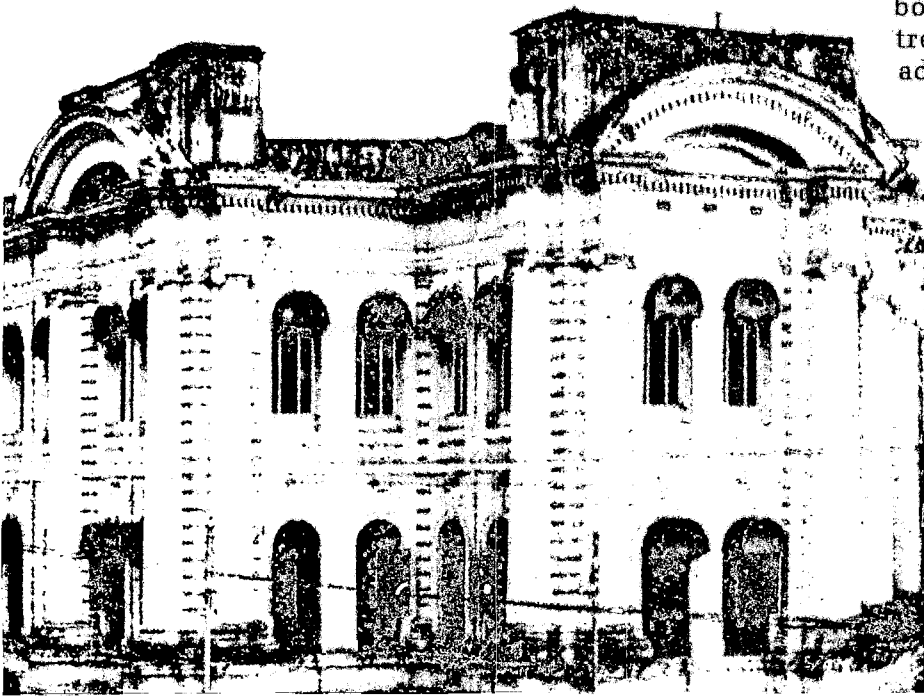
The Bank's market risk exposures are measured by using various sophisticated techniques like duration analysis, adoption of methodologies for monitoring value-at-risk and undertaking gap and simulation exercises for management of risk exposures.

Derivative products in the form of interest rate swaps, cross-currency and long-dated swaps are being increasingly employed by the Bank's Indian and foreign branches. The Bank also offers derivative products, as permitted by the RBI, to its customers, and such exposures are covered on a back-to-back basis. Open positions are marked to market. In conformity with the RBI guidelines, the net overnight forex open position limit of the Bank is restricted to 5% of its Tier I capital.

Treasury Operations

Treasury operations include, apart from complying with the reserve prescriptions in the form of maintenance of CRR and SLR, residual cash management, i.e., management of short-term surpluses and deficits, performance of other investment functions with focus on profitability and risk management and delivery of various treasury products. During the year, the growth of investment in India was of the order of Rs.7,049 crore. Appropriate strategic responses like switching, altering maturity mix and riding the yield curve were initiated regularly to enhance income opportunities based on interest rate movements and liquidity position. A crucial decision, which was taken during the year, was to combine

both domestic and forex treasuries, again to take advantage of the gradually integrating forex, securities and money markets in India.



बैंक के परिचालन

आस्ति संवृद्धि

31 मार्च 1998 तक बैंक की कुल आस्तियाँ 1,79,673 करोड़ रुपये रही जिनमें 31 मार्च 1997 के स्तर से 14.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 31 मार्च 1998 तक बैंक के कुल ऋण संविभाग में 31 मार्च 1997 के स्तर से 19.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। देश के वाणिज्यिक क्षेत्र में खाद्येतर ऋण और शेयरों, डिबेंचरों, बाण्डों, वाणिज्यिक पत्रों एवं अन्य आस्तियों के रूप में बैंक द्वारा निवेश किये गए संसाधनों में 15.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष यह वृद्धि 6.7 प्रतिशत ही हुई थी। कुल निवेशों में 17.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। निवेशों का अधिकांश भाग सरकारी एवं अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में किया गया देशीय निवेश था। बैंक ने अपने सांविधिक चलनिधि अनुपात निवेशों का 100 प्रतिशत भाग बाजार के लिए चिह्नित किया जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित 60 प्रतिशत के मानदण्ड से काफी अधिक है।

देयताएं

31 मार्च 1998 तक बैंक की कुल देयताओं में 31 मार्च 1997 के स्तर की तुलना में 14.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। देयताओं में वृद्धि होने का प्रमुख कारण जमाराशियों में वृद्धि होना था जो 31 मार्च 1998 को बढ़कर कुल रु.1,31,091 करोड़ हो गई और इनमें मार्च 1997 को समाप्त वर्ष की तुलना में 18.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

कार्यकलाप के स्तर और बैंक के प्रमुख चार व्यवसाय समूहों के परिचालनों के विस्तृत विवरण एतदपश्चात् दर्शाए गए हैं।

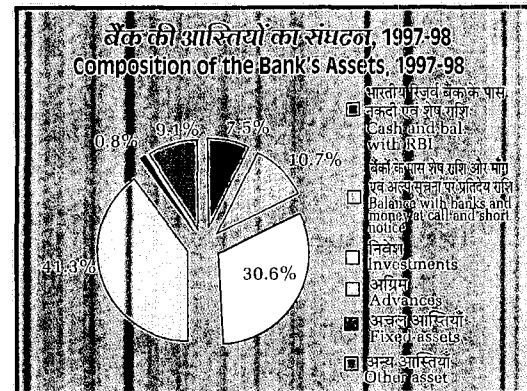
क. कारपोरेट बैंकिंग समूह

कारपोरेट लेखा समूह (का.ले.स.)

अपने कारपोरेट ग्राहकों को प्रभावी ढंग से गुणवत्ता संबंध प्रबंधन के माध्यम से वाणिज्यिक एवं निवेश बैंकिंग उत्पाद उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कारपोरेट लेखा समूह की स्थापना की गई थी। इस इकाई की स्थापना जिस आशा से की गई थी, बैंक के व्यवसाय विकास तथा लाभ में कारपोरेट लेखा समूह के योगदान से वह पूरी हुई है। कारपोरेट लेखा समूह ने अपने वर्तमान ग्राहकों से अधिक मात्रा में व्यवसाय करने के साथ-साथ वर्ष 1997-98 के दौरान बैंक के खाते में 15 कारपोरेट ग्राहकों को और जोड़ लिया है। यह मार्केटिंग

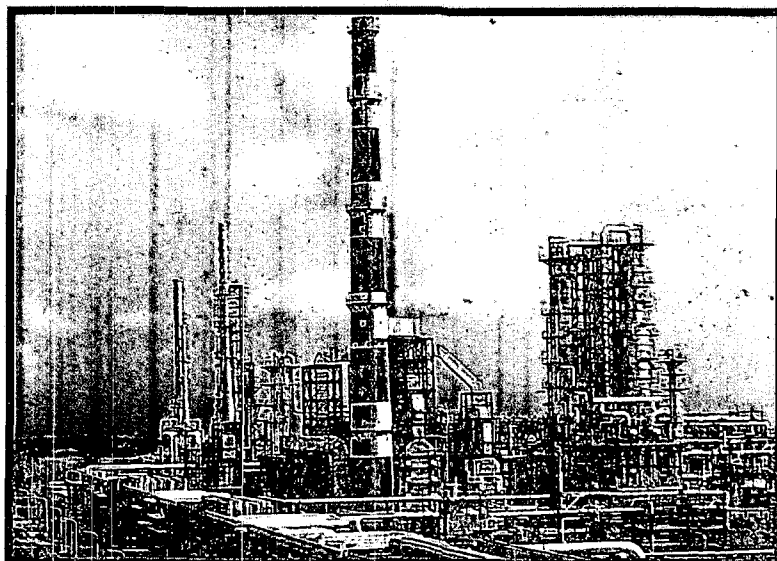
पर विशेष ध्यान देने तथा तत्काल उत्पाद वितरण के कारण ही संभव हो पाया। वर्ष के दौरान, कारपोरेट लेखा समूह के ऋण संविभाग में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा यह मार्च 1998 तक बैंक के कुल कारपोरेट ऋण का लगभग 25 प्रतिशत रहा।

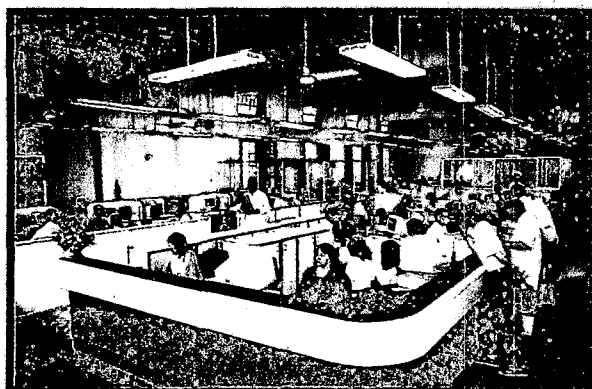
बैंक के आधार में इस इकाई का योगदान सराहनीय रहा और दक्षता के सभी मानदण्डों के अनुसार उच्च स्तर पर तथा अपेक्षानुरूप रहा। आस्तियों पर 4 प्रतिशत की आय तथा अलाभकारी आस्तियों (1 प्रतिशत से कम) के अत्यंत नगण्य स्तर के साथ, कारपोरेट लेखा समूह, बैंक का उत्कृष्टतम निष्पादक बना रहा। वर्तमान चार शाखाओं के अतिरिक्त, कारपोरेट लेखा समूह, शीर्ष कारपोरेट्स की कुल संख्या 200 तक ले जाने के लिए, अहमदाबाद तथा बंगलूर में अपनी शाखाएं खोलने की योजना बना रहा है। स्पष्टतः,



कारपोरेट लेखा समूह शाखा, मुंबई द्वारा सहायता प्राप्त "रिफाइनरी सह पेट्रोलियम काम्पलेक्स का एक दृश्य

View of a refinery cum petroleum complex - assisted by CAG Branch, Mumbai





Bank's Operations

Asset Growth

The Bank's total assets were Rs.1,79,673 crore at March 31, 1998, which increased by 14.8% from the level at March 31, 1997. At March 31, 1998, the Bank's total loan portfolio increased by 19.3% from the level at March 31, 1997. Resources flow from the Bank to the country's commercial sector in the form of non-food credit and investments in shares,

debentures, bonds, commercial papers and others grew by 15.9% as against 6.7% last year. Total investments increased by 17.4%. Large part of the investment was domestic investment in government and other approved securities. The Bank marked to market 100% of its SLR investments, well above the RBI's norm of 60%.

Liabilities

At March 31, 1998, the Bank's total liabilities increased by 14.5% from the level at March 31, 1997. The increase in liabilities was primarily due to increase in deposits which totalled Rs.1,31,091 crore as at March 31, 1998, an increase of 18.4% over end-March 1997.

The activity levels and the details of the operations of the Bank's four main business groups are described hereafter.

A. Corporate Banking Group

Corporate Accounts Group (CAG)

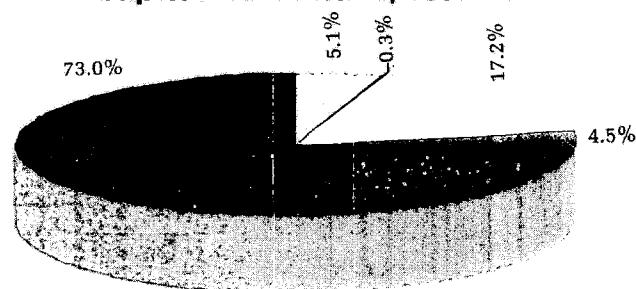
The CAG platform was set up by the Bank with the objective of delivering a host of commercial and investment banking products to the corporate customers efficiently through Quality Relationship Management. The Bank's optimism while setting up this outfit has been amply borne out by the contribution made by CAG to the Bank's business development and profits. The CAG brought in 15 corporate clients to the Bank's books during 1997-98 apart from handling a higher volume of business from existing clients. This was possible on account of focussed marketing and efficient product delivery. The CAG's credit portfolio grew by 35% during the year and accounted for about 25% of the Bank's total corporate credit as at March 1998.

The outfit's contribution to the Bank's bottomline has been considerable and on all the efficiency parameters it ranks quite

पूर्णतः कम्प्यूटीकृत बंगलूर
मुख्य शाखा का आंतरिक दृश्य

Inside view of fully
computerized Bangalore
Main Branch

बैंक की पूँजी एवं देयताओं का संघटन, 1997-98
Composition of the Bank's
Capital & Liabilities, 1997-98



■ जमा राशियाँ
Deposits
■ उधार राशियाँ
Borrowings

■ अन्य देयताएँ एवं
उपबंध
Other Liabilities &
Provisions

■ पूँजी
Capital
■ आरक्षितियाँ तथा आधिन्य राशियाँ
Reserves & Surplus

‘कारपोरेट लेखा समूह’ एक सफल प्रयोग रहा है और निश्चय ही निजी बैंकिंग जैसे अन्य प्रमुख क्षेत्रों में इस प्रकार की विशेषीकृत कार्यनीति से उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

पट्टा व्यवसाय

बैंक की पट्टा कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई, देश की प्रमुख कार्यनीतिक व्यवसाय इकाइयों में से एक है और इसने अपना वह कारपोरेट लक्ष्य भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त कर लिया है जिसके माध्यम से कारपोरेट ग्राहकों को पूंजीगत उपस्करों के अभिग्रहण हेतु बहुत कम लागत पर त्वरित रूप से वित्तपोषण के द्वारा एक अतिरिक्त उत्पाद उपलब्ध कराना है। पट्टा कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई ने वर्ष के दौरान 20 शीर्ष कारपोरेट ग्राहकों को 534 करोड़ रुपये की पट्टा वित्त सहायता प्रदान की है और इसके अंतर्गत 31 मार्च 1998 तक संचयी संस्वीकृतियां 850 करोड़ रुपये से अधिक दी जा चुकी हैं। इन संस्वीकृत पट्टों में पूरे देश से उच्च श्रेणी के कारपोरेट तथा उद्योग जगत के विविध खण्डों को शामिल किया गया है। कार्यनीतिक व्यवसाय इकाइयों द्वारा पट्टे पर विविध प्रकार के उपकरण, जैसे रेल्वे ट्रेक्स, रोलिंग स्टॉक, मिनी बल्क कैरियर्स, बायलर्स, टरबाइन, वेस्ट रिकवरी सिस्टम, आटोमेटिक लोड मॉनिटरिंग सिस्टम, डी.जी.सेट, विनिर्माण उपकरण, रोलिंग मिल तथा विविध संयंत्र एवं मशीनरी आदि शामिल हैं। ये उपकरण, सार्वजनिक तथा निजी दोनों क्षेत्रों के कारपोरेट्स को पट्टे पर दिए जाते हैं, जो आधारिक संरचना के विकास तथा स्टील, सीमेंट, पेट्रोलियम उत्पाद, पेपर, केमिकल्स, टेक्सटाईल्स, फर्टिलाइज़र्स, आटोमोबाइल्स तथा हेवी इंजिनियरिंग गुड्स के निर्माण में लगे हैं। इन पट्टों पर औसत आय लगभग 16.5 प्रतिशत रही। वर्ष 1997-98 के दौरान, बैंक में कार्यनीतिक व्यवसाय इकाइयों का अंशदान 37 करोड़ रुपये रहा। हालांकि, भारत में कीमती वस्तुओं के पट्टा बाजार में प्रमाणित आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी, अनुमानतः वर्ष 1997-98 के दौरान, कार्यनीतिक व्यवसाय इकाइयों ने बाजार का 10 प्रतिशत भाग तथा प्रासंगिक अनुमोदनों का 22 प्रतिशत भाग प्राप्त करने में सफलता पाई है।

परियोजना वित्त

बैंक की परियोजना वित्त संबंधी कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई, उच्च मूल्य वाली आधारिक परियोजनाओं तथा विद्युत उत्पादन, दूरसंचार, तेल एवं रिफाइनरी उत्पाद, पेट्रोसायन, सड़क तथा बंदरगाह जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र के उद्योगों को निधि प्रदान करने का कार्य कर रही है। कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई के पास 1,54,210 करोड़ रुपये से भी अधिक मूल्य के 78 परियोजना वित्त प्रस्ताव थे। 22 परियोजनाओं के संबंध में 3,716 करोड़ रुपये मूल्य की निधि आधारित एवं गैर-निधि आधारित ऋणों के लिए अनुमोदन प्राप्त किए गए। अन्य 17 परियोजनाओं के मूल्यांकन का कार्य प्रगति पर था। तथापि परियोजना वित्तपोषण के क्षेत्र में नवागत कार्यनीतिक व्यवसाय इकाई ने अखिल भारतीय विकास वित्त संस्थाओं के साथ बराबरी का दर्जा प्राप्त कर लिया।

ख. राष्ट्रीय बैंकिंग समूह

राष्ट्रीय बैंकिंग समूह के पास बैंक की देशीय जमा राशियों का लगभग 99 प्रतिशत और देशीय अग्रिमों का 88 प्रतिशत भाग है। राष्ट्रीय बैंकिंग समूह की शाखाओं के विशाल नेटवर्क के कारण इसकी पहुंच व्यापक रूप से देश के दूर-दराज के क्षेत्रों तक संभव बन सकी है। राष्ट्रीय बैंकिंग समूह द्वारा मूल बैंकिंग उत्पाद, शाखाओं के विशेष रूप से अलग-अलग दो नेटवर्कों के माध्यम से वितरित किए जाते हैं। वाणिज्यिक नेटवर्क जो मध्यम कारपोरेट ग्राहकों और बैंक की लघु औद्योगिक एवं कृषि इकाइयों के बड़े खातों पर ध्यान केन्द्रित करता है तथा रिटेल नेटवर्क जिसमें व्यक्तियों, संस्थानों, लघु उद्योग एवं व्यवसाय, कृषि तथा सरकारी खाते शामिल हैं।

विशिष्ट ग्राहक समूह की बैंकिंग आवश्यकताओं की पूर्ति करने के माध्यम सृजित करने की अपनी नीति से प्रेरित होकर बैंक ने वर्ष के दौरान 40 विशेषीकृत शाखाएं खोलीं। वर्ष 1997-98 के दौरान बैंक के वर्तमान नेटवर्क में 49 शाखाएं और जोड़ी गईं, इससे देशीय शाखाओं की कुल संख्या बढ़कर 8,873 हो गई। इन विशेषीकृत शाखाओं में से 5 शाखाएं भारतीय स्टेट बैंक - वैयक्तिक बैंकिंग शाखाएं थीं। बैंक ने देश के महानगरीय और शहरी क्षेत्रों में इसी तरह की आधुनिक तकनीक वाली और अधिक शाखाएं खोलने की योजना बनाई है ताकि उच्च निवल मालियत वाले व्यक्तियों को ध्यान में रखकर उन्हें सभी प्रकार की सेवाएं और उत्पाद उपलब्ध कराए जा सकें।

high, as expected. With a Return on Assets of 4.0% and an almost negligible level of NPA (less than 1%), CAG continues to be the Bank's arm of excellence. In addition to the existing four branches, the CAG has plans to branch out further to Ahmedabad and Bangalore to cover a total of 200 top corporates. Clearly, the CAG experiment has been a success and can indeed be replicated in the other niche areas like Private Banking where such a specialized delivery can bring in outstanding results.

Leasing

The Leasing SBU is one of the leading Big Ticket players in the country and has substantially achieved the corporate objective of offering lease finance as an additional product at substantially lower cost for financing acquisition of capital equipments expeditiously. The SBU extended lease assistance to 20 top corporates to the tune of Rs.534 crore during the year and the cumulative sanctions exceeded Rs.850 crore as on the 31st March 1998. The leases written by the SBU cover a wide range of equipments like railway tracks, rolling stock, mini-bulk carriers, boilers, turbines, waste recovery systems, automatic load monitoring systems, DG sets, construction equipments, rolling mill, and miscellaneous plant and machinery. These equipments have been leased out to corporates, both in public and private sectors, engaged in infrastructure development and manufacture of steel, cement, petroleum products, paper, chemicals, textiles, fertilizers, automobiles and heavy engineering goods. The average return on these leases worked out to about 16.5%. The contribution of the SBU to the Bank was Rs.37 crore during 1997-98. Although no authentic figures are available on big ticket leasing market in India, at a rough estimate, the SBU has been successful in acquiring a 10% share of the market and a 22% share in incremental approvals during 1997-98.

Project Finance

The Bank's Project Finance SBU is engaged in funding high-value projects in infrastructure and core sector industries like power generation, telecommunication, oil and refinery products, petrochemicals, roads and ports. The SBU had on hand 78 project finance proposals with project cost of over Rs.1,54,210 crore. Approvals were obtained for fund-based and non-fund-based facilities worth Rs.3,716 crore in respect of 22 projects. Appraisal of another 17 projects was in progress. Although a recent entrant in the field of project financing, the SBU achieved a status of equal participant with the all-India development financial institutions.

B. National Banking Group (NBG)

The NBG commands about 99 per cent of the domestic deposits and 88 per cent of the domestic advances of the Bank. A vast network of branches allows NBG a wide reach even in the distant corners of the country. Basic banking products are delivered by the NBG through two distinctly separate networks of branches - the Commercial Network focussing on mid-corporates and the larger accounts among the Bank's small industrial and agricultural units, and the Retail Network covering accounts of individuals, institutions, small industry and business, agriculture and the Government.

Driven by its policy emphasis on creating delivery platforms for meeting the banking requirements of specific customers' group, the Bank opened 40 'specialized' branches during the year. In all, 49 branches were added to the Bank's existing network during 1997-98, taking the total number of domestic branches to 8,873. Of the specialized branches, five were 'SBI — Personal Banking' branches. The Bank has plan to open more such branches equipped with state-of-the-art technology in the metro and urban areas of the country, targeting high net worth individuals, in order to provide them with a full range of services and products.

उत्पाद नवोन्मेष एवं ग्राहकों की आवश्यकताओं की पूर्ति

प्रमुख ग्राहकों अथवा ग्राहकों के समूह की आवश्यकता के अनुरूप उत्पादों का नवीकरण करके और उन्हें ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाकर ही, उभरते हुए परिवेश में प्रतिस्पर्धा का सामना किया जा सकता है। वैयक्तिक बैंकिंग खंड के ग्राहकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु, एक बहुविकल्पीय जमा योजना, बंगलूर में परीक्षण के तौर पर आरंभ की गई और पहली जुलाई 1998 से इसे सभी कम्प्यूटरीकृत शाखाओं में परिचालित कर दिया गया है। जमाकर्ताओं को दीर्घावधि पूंजीगत लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से एक कर बचत सावधि जमा योजना भी वर्ष के दौरान शुरू की गई।

उपभोक्ता वित्तपोषण पर बैंक द्वारा बल दिए जाने की नीति के अनुरूप, टिकाऊ उपभोक्ता सामान खरीदने हेतु बड़ी खरीद योजना एवं कार ऋण योजना के अंतर्गत उपलब्ध ऋण की अधिकतम राशि में वृद्धि कर दी गई और योजना की शर्तों को उदार बना दिया गया। स्वर्ण आभूषणों की प्रतिभूति पर प्रदान किए जाने वाले ऋण की योजना और अधिक लचीली बना दी गई। आवास वित्त एक अन्य प्रमुख क्षेत्र था जिसके लिए 497 शाखाओं की पहचान गहन केन्द्रों के रूप में की गई। आवास वित्त को ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तारित करने हेतु भी एक विशेष योजना प्रारंभ की गई।

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋणान्वयन

वर्ष 1997-98 में, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अग्रिम निवल बैंक ऋण के 37.45 प्रतिशत रहे। क्षेत्रवार विवरण तालिका 3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 3: प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अग्रिम (सकल)

(रु. करोड़ में)

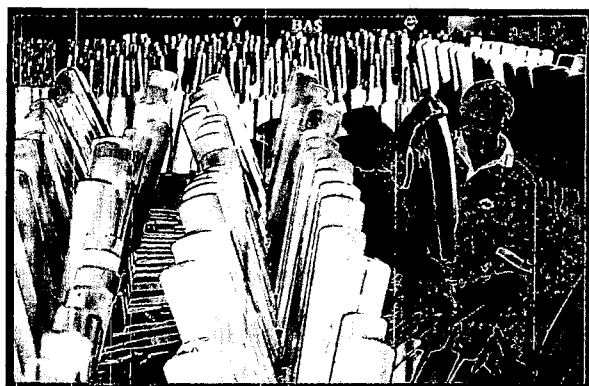
क्षेत्र	1996-97	1997-98	संवृद्धि (%)
कृषि	7,807	8,794	12.6
लघु उद्योग	8,622	10,014	16.1
लघु व्यवसाय	2,794	3,711	32.8
योग	19,223	22,519	17.1

औद्योगिक क्षेत्र शाखा,
जलंधर द्वारा सहायता प्राप्त
निर्यात-मुख्य इकाई

An export-oriented
unit assisted by
Industrial Area
Branch, Jullunder

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति, लघु एवं सीमांत कृषकों, भूमिहीन श्रमिकों, सफाई कर्मचारियों और स्वयं सहायता समूहों सहित समाज के कमजोर वर्गों तथा समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं विभेदक ब्याज दर योजनाओं के लाभार्थियों को प्रदान की जानेवाली सहायता 4,242 करोड़ रुपये थी जो मार्च 98 के अंत तक निवल बैंक ऋण का 7.05 प्रतिशत रही।

सरकार द्वारा प्रायोजित ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन योजनाओं में एक प्रमुख सहभागी के रूप में बैंक ने समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अंतर्गत, वर्ष के दौरान 2,50,851 लाभार्थियों को 336.88 करोड़ रुपये की सहायता दी। इन लाभार्थियों में से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं महिला लाभार्थियों की संख्या कुल लाभार्थियों की संख्या का क्रमशः 35.8 प्रतिशत और 24.9 प्रतिशत थी। प्रायोगिक परियोजना, जिसके अंतर्गत बैंक अपने स्वयं के लाभार्थियों की पहचान करता है, को पहले से कार्यान्वित किए गए 13 जिलों के अलावा, 32 और जिलों तक विस्तारित किया गया। प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अंतर्गत 55,501 लाभार्थियों को अभी तक 360 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई है।



परियोजना उन्नयन

बैंक के परियोजना उन्नयन को कार्य करते हुए अब लगभग नौ वर्ष हो गए हैं। इस परियोजना का लक्ष्य चयनित लघु एवं मध्यम इकाइयों के समूहों में परियोजना उन्नयन को बढ़ावा देना है। किसी वाणिज्यिक बैंक द्वारा की जाने वाली अपने प्रकार की यह पहली पहल थी, जो उद्यमियों और बैंक के लिए एक सुखद अनुभव रही। वर्ष के दौरान बेलगाम, कर्नाटक में ढलाई कारखाना समूह के लिए एक नई परियोजना शुरू की गई।

सामाजिक सेवा बैंकिंग

बैंक न केवल एक सामाजिक संगठन है बल्कि यह जिम्मेदार कारपोरेट नागरिक भी है जिसका समाज की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायित्व होता

Product Innovation and Customization

Product innovation and customization to suit the needs of the major clients or a group of clientele hold the key to beat competition in the emerging environment. In order to meet the requirement of personal banking customers, a deposit scheme having the convenience of exercising multiple option was test-launched at Bangalore, and has since been operationalized at all computerized branches from the 1st July 1998. A Tax Saving Term Deposit Scheme aimed at enabling the depositors to derive the benefits of long-term capital gains was also launched during the year.

In consonance with the Bank's thrust on consumer finance, the maximum loan amount available under the Big Buy Scheme for purchase of consumer durables and the Car Loan Scheme was increased, and the terms of the schemes liberalized. The scheme to grant loans against gold ornaments was made more flexible. Yet another thrust area was the housing finance, for which 497 branches were identified as intensive centres. A special scheme was also launched to extend coverage of housing finances in rural areas.

Priority Sector Lending

The priority sector advances of the Bank stood at 37.45% of net bank credit in 1997-98. The sectoral break-up is presented in Table 3.

Table 3: Priority Sector Advances (Gross) (Rs. Crore)

Sectors	1996-97	1997-98	Growth (%)
Agriculture	7,807	8,794	12.6
Small Scale Industries	8,622	10,014	16.1
Small Business	2,794	3,711	32.8
Total	19,223	22,519	17.1

The Bank's assistance to weaker sections including Scheduled Castes and Scheduled Tribes, small and marginal farmers, landless labourers, scavengers, self-help groups and beneficiaries of IRDP and DRI schemes stood at Rs.4,242 crore, constituting 7.05% of net bank credit at end-March 1998.

A major partner in the government-sponsored schemes for rural development and poverty alleviation, the Bank assisted 2,50,851 beneficiaries to the extent of Rs.336.88 crore under the IRDP during the year. SC/ST and women beneficiaries constituted 35.8% and 24.9% respectively of the total number of beneficiaries. The Pilot Project, under which the Bank identifies its own beneficiaries, was extended to 32 districts in addition to the 13 districts, where it was already implemented. Under the Prime Minister Rojgar Yojna, 55,501 beneficiaries have been assisted to the tune of Rs.360 crore so far.

Project Uptech

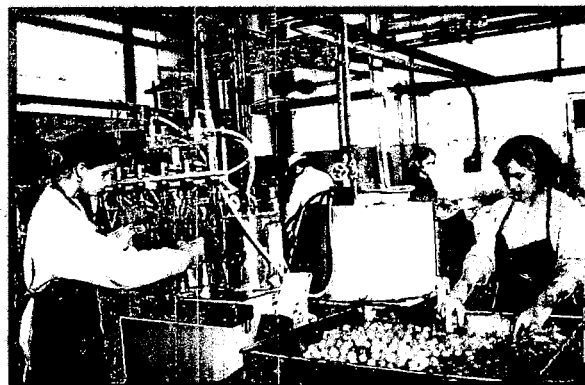
The Project Uptech of the Bank is in operation for about nine years now. The project mission is to catalyze technology upgradation in select small and medium enterprises clusters. The initiative, first of its kind from a commercial bank, has been a satisfying experience for entrepreneurs and the Bank. A new project for foundry cluster at Belgaum, Karnataka was launched during the year.

Community Services Banking

The Bank is not only a commercial organization, but also a responsible corporate citizen, responsive

▼
परवानू शाखा, हिमाचल प्रदेश
द्वारा वित्तपोषित फल प्रसंस्करण
इकाई

A fruit processing
unit financed by
Parwanoo Branch, H.P.



है। बैंक की उद्दिष्ट योजनाओं की परिधि से आगे बढ़कर, समाज के विभिन्न वर्गों को लाभ पहुंचाने वाले बैंकिंग और गैर-बैंकिंग कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। बैंक की अनुसंधान एवं विकास निधि से अनुदान के रूप में सामाजिक रूप से प्रासंगिक परियोजनाओं को भी प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। इसने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, एकेडमिक संस्थानों द्वारा शुरू की गई 70 पीठों/अनुसंधान परियोजनाओं को अब तक 6.50 करोड़ रुपये के अनुदान दिए हैं।

मार्गदर्शी बैंक योजना

बैंक ने 109 जिलों में मार्गदर्शी बैंक का उत्तरदायित्व निर्वाह करना और नौ राज्यों तथा दो संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य स्तरीय बैंकर समिति की बैठक के संयोजन का उत्तरदायित्व निर्वाह करना जारी रखा।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

बैंक ने 13 राज्यों के 75 से भी अधिक जिलों में फैले हुए 30 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक प्रायोजित किए हैं। इन क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की 2,383 शाखाओं का नेटवर्क देश के सभी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का 16 प्रतिशत है। वर्ष के दौरान (सितम्बर 1997 के अंत तक) बैंक द्वारा प्रायोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की जमा राशियां और अग्रिम क्रमशः 2,666.45 करोड़ रुपये और 1183.22 करोड़ रुपये रहे।

हानियों के निधीयन के द्वारा 25 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का वित्तीय पुनर्गठन प्रारम्भ किया गया है और बैंक ने हानियों के निधीयन के लिए 62.94 करोड़ रुपये प्रदान किए हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि मार्च 1999 के अंत तक ये क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक लाभ-अलाभ की स्थिति में आ जाएं, बैंक द्वारा प्रायोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की सूक्ष्म निगरानी की गई।

ग. अन्तरराष्ट्रीय बैंकिंग

विदेश स्थित कार्यालयों के परिचालन

विश्वस्तर पर, बैंक का उद्देश्य भारत संबंधित व्यवसाय में उत्कृष्टता प्राप्त करने के साथ-साथ एक विश्व श्रेणी का बैंक बनना है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इसके विदेश स्थित कार्यालय मुख्य रूप से, क) निवेश एवं व्यापार संबंधी सलाहकारी सेवाएं प्रदान करने, ख) बहुदेशीय निधीयन एजेंसियों के संरक्षण के अन्तर्गत परियोजना-निर्यात वित्त उपलब्ध कराने, ग) भारतीय बैंकों को संपर्की बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने और घ) प्रौद्योगिकी उन्नयन के माध्यम से परम्परागत व्यवसाय में विविधता लाने और ग्राहक संतुष्टि में वृद्धि सुनिश्चित करने में लगे हुए हैं। विदेशों में विस्तार संबंधी बैंक की योजना का उद्देश्य उन केन्द्रों में अपने को स्थापित करना है जहां भारत से संबंधित व्यवसाय की संभावनाएं हैं। अगस्त 1997 में शंघाई, चीन में बैंक का एक प्रतिनिधि कार्यालय स्थापित किया गया। इसे मिलाकर बैंक के वर्तमान नेटवर्क में कार्यालयों की संख्या 52 हो गई है और वे 33 देशों में फैले हुए हैं।

तालिका 4: विदेश स्थित कार्यालयों की आस्तियाँ/देयताएँ

(अनुषंगियों तथा संयुक्त उद्यमों को छोड़कर) (मार्च 1998 के अंत में)

	रुपये करोड़ में	अमरीकी डालर मिलियन में
संसाधन		
जमा	6,490.28	1,643.109
अन्य निधियां	3,575.77	905.259
उधार	22,407.66	5,672.824
कुल	32,473.71	8,221.192
अभिनियोजन		
बैंकों के पास नकदी एवं शेष	220.92	55.930
निवेश एवं स्थानन (प्लेसमेन्ट)	21,542.38	5,453.767
अग्रिम (निवल)	10,182.00	2,577.721
अन्य आस्तियां	528.41	133.774
कुल	32,473.71	8,221.192

मार्च 1998 के अंत में विदेश स्थित कार्यालयों (अनुषंगियों तथा संयुक्त उद्यमों को छोड़कर) की आस्तियां इसकी विश्वव्यापी आस्तियों का 18.1 प्रतिशत हैं और इन कार्यालयों ने बैंक के निवल लाभ में 8.7 प्रतिशत का योगदान किया। मार्च 1998 के अंत में विदेश स्थित कार्यालयों की आस्तियों पर आय परिचालन लाभ के अनुसार 0.89 प्रतिशत रही जबकि मार्च 1997 के अंत में यह 0.76 प्रतिशत थी।

to the needs of the community. Banking and non-banking activities, beyond the scope of the Bank's structured schemes, are initiated to benefit different sections of the society. Researches in socially relevant projects are also encouraged through grants from the Bank's Research and Development Fund. It has so far released grants of Rs.6.50 crore to 70 chairs/ research projects undertaken by various universities and academic institutions in the country.

Lead Bank Scheme

The Bank continued to discharge its lead responsibility in 109 districts and convenorship responsibility for State Level Bankers' Committee meeting in nine States and two Union Territories.

Regional Rural Banks

The Bank has sponsored 30 RRBs spread over 75 districts in 13 States. A network of 2,383 branches of these RRBs accounts for 16% of all RRB branches in the country. During the year (as at end-September 1997), the deposits and advances of the RRBs sponsored by the Bank stood at Rs.2,666.45 crore and Rs.1,183.22 crore respectively.

Financial restructuring by way of funding of losses has been initiated in 25 of the RRBs, and the Bank has contributed Rs.62.94 crore for funding the losses. The performance of the RRBs sponsored by the Bank was closely monitored with the objective of enabling these RRBs break even by March 1999.

C. International Banking

Operations of Foreign Offices

Globally, the Bank's objective is to become a world class bank with excellence in India-related business. Keeping this in view, its foreign offices are mainly engaged in: a) providing investment and trade advisory services, b) providing project export finance under the aegis of multilateral funding agencies, c) providing correspondent banking services to Indian banks, and d) diversifying traditional business and ensuring increased customer satisfaction through technology upgradation. The Bank's plan for overseas expansion aims at establishing its presence at centres with potential for India-related business. A Representative Office of the Bank was set up in Shanghai, China in August 1997. With this, the Bank's present network covers 52 offices spread over 33 countries.

Table 4: Assets/Liabilities of Foreign Offices

(excluding Subsidiaries and Joint Ventures) (At end-March 1998)

	Rs. crore	US \$ million
Resources		
Deposits	6,490.28	1,643.109
Other Funds	3,575.77	905.259
Borrowings	22,407.66	5,672.824
Total	32,473.71	8,221.192
Deployment		
Cash & Balance with Banks	220.92	55.930
Investments & Placements	21,542.38	5,453.767
Advances (Net)	10,182.00	2,577.721
Other Assets	528.41	133.774
Total	32,473.71	8,221.192

Assets of the Bank's foreign offices (excluding subsidiaries and joint ventures) at end-March 1998 constituted 18.1% of its global assets, and these offices contributed 8.7% to the Bank's net profit. The Return on Assets (ROA) of the foreign offices as per operating profits at end-March 1998 stood at 0.89% as against 0.76% at end-March 1997.

विदेश स्थित कार्यालयों में प्रौद्योगिकी उन्नयन

अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बैंक के विदेश स्थित कार्यालयों में प्रौद्योगिकी उन्नयन में वर्ष के दौरान महत्वपूर्ण प्रगति हुई. न्यूयार्क शाखा में एक महत्वाकांक्षी तकनीकी उन्नयन परियोजना को पूरा कर लिया गया है और इसी तरह की एक परियोजना लंदन शाखा में भी शीघ्र ही पूरी की जाएगी. लेनदेनों को प्रक्रियागत करने और खाता-बहियों के रख-रखाव हेतु एक उभयनिष्ठ साफ्टवेयर प्राप्त करने की दृष्टि से, आधुनिकतम फ्रेम रिले प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए एक व्यापक क्षेत्र नेटवर्क की न्यूयार्क में स्थापना की गई है जिससे न्यूयार्क में बैंक की सभी शाखाओं को और स्टेट बैंक आफ इंडिया (कनाडा) के टोरोन्टो एवं बैकुवर में स्थित शाखाओं को न्यूयार्क में स्थित बैंक की मुख्य शाखा से जोड़ा गया है. पूरे उद्यम हेतु प्रणालियों में एकरूपता लाने की बैंक की नीति के अनुसरण में, वर्ष के दौरान सिंगापुर, हांगकांग, जोहानसबर्ग और बहरीन की शाखाओं में बैंक मास्टर स्थापित किए गए जिससे बैंक मास्टर प्रणाली का प्रयोग करने वाले विदेश स्थित कार्यालयों की संख्या 10 हो गई है. व्यापार वित्त परिचालनों के लिए सात विदेश स्थित कार्यालयों में आइ बी एस नेट ने कार्य करना शुरू कर दिया है और शेष कार्यालयों में इसकी स्थापना का कार्य वर्ष 1999 के अंत तक पूर्ण हो जाने की आशा है. बैंक के स्विफ्ट से जुड़े 14 विदेश स्थित कार्यालयों ने नवीनतम स्विफ्ट संधि करने के लिए कार्रवाई शुरू कर दी है.

विदेशी अनुषंगियां/विदेश स्थित संयुक्त उद्यम

विदेश में बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली तीन अनुषंगियां तथा चार संयुक्त उद्यम हैं. एस बी आई यूरोपियन बैंक पी एल सी, एस बी आई कनाडा और एस बी आई कैलिफोर्निया बैंक की अनुषंगियां हैं. नेपाल एस बी आई बैंक, बैंक आफ भूटान, एस बी इंटरनेशनल लि., मॉरिशस तथा इंडो नाइजीरियन मर्चेन्ट बैंक लि., लागोस, बैंक के संयुक्त उद्यम हैं.

तालिका 5: विदेशी अनुषंगियों और संयुक्त उद्यमों के कार्य परिणाम

(मार्च 1998 के अंत में)

(रुपये करोड़ में)

अनुषंगियां/संयुक्त उद्यम	जमा राशियां	अग्रिम	निवेश	निवल लाभ
अनुषंगियां				
एसबीआई यूरोपियन बैंक पीएलसी	179.04	525.55	1,394.48	23.09
एस बी आई कनाडा	145.48	339.07	59.95	5.04
एस बी आई कैलिफोर्निया	181.80	93.01	131.17	2.33
संयुक्त उद्यम				
नेपाल एस बी आई बैंक ¹	152.62	111.21	25.67	2.91
बैंक आफ भूटान ²	439.69	156.68	122.06	3.62
एस बी इंटरनेशनल लि. मॉरिशस ²	493.03	359.47	23.70	1.73
इंडो नाइजीरियन मर्चेन्ट बैंक लि. (लागोस) ²	15.64	15.27	2.79	1.21

¹ 15.7.1997 को ; ² दिसम्बर 1997 के अंत तक.

इसके अतिरिक्त, बैंक विश्व भर में बहुत से बैंकों के साथ अपने संपर्की संबंध बनाए रखने से लाभान्वित हुआ है.

देशीय परिचालन

निर्यात ऋण

देश का निर्यात बढ़ाने के लिए निर्यातक समुदाय को समय पर तथा पर्याप्त सहायता उपलब्ध कराकर बैंक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. पिछले वर्ष की तरह, वर्ष 1997-98 के दौरान भी देश की निर्यात संवृद्धि मंद रही. परिणामस्वरूप, बैंक का निर्यात ऋण 7,151 करोड़ रुपये रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.8 प्रतिशत की साधारण वृद्धि दर्शाता है. निवल बैंक ऋण के अनुपात में यह 10.25 प्रतिशत रहा.

Technology Upgradation of Foreign Offices

Considerable progress has been achieved during the year in upgrading the technology at the Bank's foreign offices to contemporary international standards. The New York Branch has completed an ambitious technology upgradation project, and a similar project at the London Main Branch will soon be completed. In order to have a common software for processing transactions and maintaining books of account, a Wide Area Network (WAN), using the state-of-the-art frame relay technology, has been established to connect all branches of the Bank in New York and those of State Bank of India (Canada) at Toronto and Vancouver, with the Bank's main branch at New York. Following the Bank's policy of bringing about enterprise-wide uniformity of systems, Bankmaster software has been installed at Singapore, Hong Kong, Johannesburg and Bahrain branches during the year, bringing the total number of foreign offices using the Bankmaster system to 10. For trade finance operations, IBSnet has been made operational at seven foreign offices, and installation in the remaining offices is expected to be completed by the end of 1999. Fourteen SWIFT-linked foreign offices of the Bank have initiated steps to migrate to the latest SWIFT Alliance.

Foreign Subsidiaries/Joint Ventures Abroad

The Bank has three wholly-owned subsidiaries and four joint ventures abroad. The subsidiaries are SBI European Bank PLC, SBI Canada and SBI California. The joint ventures of the Bank are Nepal SBI Bank, Bank of Bhutan, SB International Ltd., Mauritius and Indo Nigerian Merchant Bank Ltd., Lagos.

Table 5: Working Results of Subsidiaries and Joint Ventures Abroad

(At end-March 1998)

(Rs. crore)

Subsidiaries/Joint Ventures	Deposits	Advances	Investment	Net Profit
Subsidiaries				
SBI European Bank PLC	179.04	525.55	1,394.48	23.09
SBI Canada	145.48	339.07	59.95	5.04
SBI California	181.80	93.01	131.17	2.33
Joint Ventures				
Nepal SBI Bank ¹	152.62	111.21	25.67	2.91
Bank of Bhutan ²	439.69	156.68	122.06	3.62
SB International Ltd., Mauritius ²	493.03	359.47	23.70	1.73
Indo Nigerian Merchant Bank Ltd. (Lagos) ²	15.64	15.27	2.79	1.21

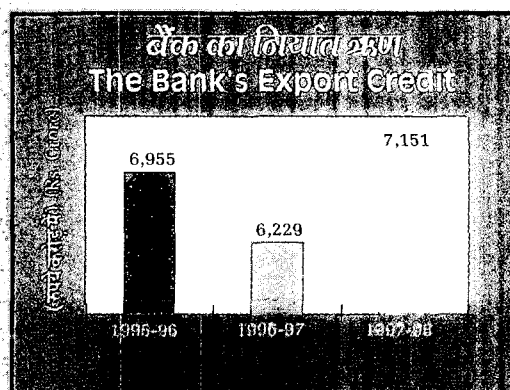
¹ As on 15.7.1997; ² At end-December 1997

In addition, the Bank benefits from its correspondent relationship maintained with a large number of banks worldwide.

Domestic Operations

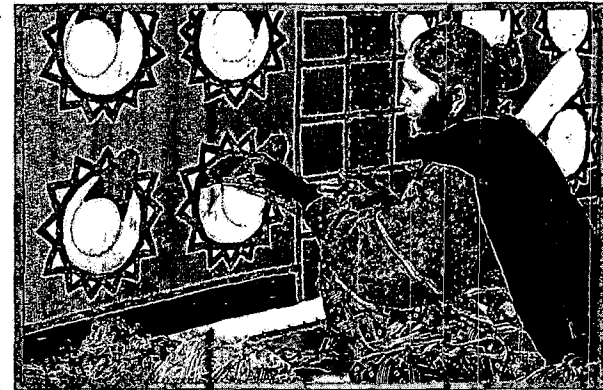
Export Credit

For promoting the country's exports, the Bank plays a key role by providing timely and adequate assistance to the exporter community. As in the last year, India's export growth remained sluggish during 1997-98. Consequently, the Bank's export credit at Rs.7,151 crore reflected a modest increase of 14.8% over that in the previous year. As a proportion of the net bank credit, it stood at 10.25%.



परियोजना निर्यात वित्त

देश के कुछ प्रमुख परियोजना निर्यातक बैंक की सहायता से विदेशी अनुबंध निष्पादित कर रहे हैं। भारतीय कारपोरेट कंपनियाँ अल्प-विकसित देशों की उन आधारिक परियोजनाओं पर ज्यादा बल देती है, जिन पर बहुदेशीय एजेन्सियों द्वारा निधि लगाई गई है। वर्ष के दौरान, बैंक ने 4,662.19 करोड़ रुपये की कुल सहायता राशि के साथ 21 देशों की 40 परियोजनाओं में सहयोग दिया है।



नौवहन वित्त

बैंक प्रमुख निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की नौवहन कम्पनियों को मुख्य रूप से विदेशों से जहाज प्राप्त करने हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता रहा है और समुद्री-पोतों के लिए भारतीय शिपयार्डों से जहाजों का निर्माण करवाने/को प्राप्त करने हेतु नौवहन कम्पनियों को सहायता प्रदान करता रहा है। वर्ष के दौरान 229 करोड़ रुपये के ऋण और दिए गए जिससे नौवहन उद्योग को दिए गए कुल ऋण की राशि 935.01 करोड़ रुपये हो गई।

निर्यात सहायता : औद्योगिक वित्त शाखा, चण्डीगढ़ द्वारा वित्तपोषित कार्पेट बुनने की इकाई

Assisting exports - a carpet weaving unit financed by IFB, Chandigarh

मर्चेट बैंकिंग

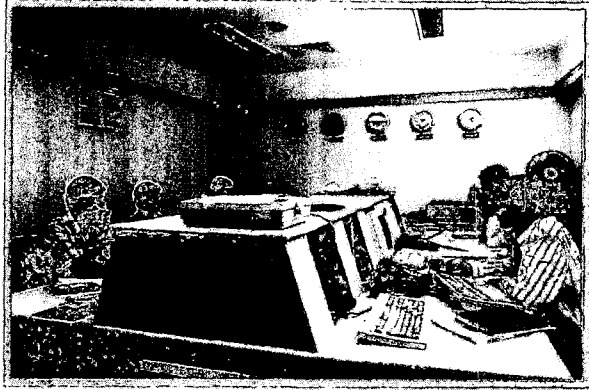
वर्ष के प्रथमार्ध के दौरान बाह्य/विदेशी वाणिज्यिक ऋण से सम्बन्धित बाजार में आई तेजी से बैंक के ऋण समूहन कार्यकलाप को प्रोत्साहन मिला। इसने 372.58 मिलियन अमरीकी डालर की कुल राशि के 45 द्विपक्षीय ऋणों के अलावा व्यवस्थापकों, सहभागियों एवं हमीदारों के रूप में 751.37 मिलियन अमरीकी डालर के 14 ऋण समूहों की व्यवस्था की। वर्ष के दौरान इसने क्रेता एवं आपूर्तिकर्ता ऋणों (बायर्स एण्ड सप्लायर्स क्रेडिट्स) के माध्यम से 1,011 मिलियन अमरीकी डालर की राशि का अल्पकालीन वित्त भी उपलब्ध कराया। वर्ष के द्वितीयार्ध में, दक्षिणपूर्व एशियाई मुद्रा संकट उत्पन्न होने से, अधिकांश कारपोरेट कम्पनियों ने जागरूक दृष्टिकोण अपनाते हुए देशी मुद्रा में ऋण लेना चाहा। तथापि, इस संकट ने बैंक को नकदी से वंचित हो चुके दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य बैंकों से अच्छी कीमत-लागत अंतर पर द्वितीयक बाजार में उपलब्ध भारत संबंधित पत्र को क्रय करने का अवसर प्रदान किया।

स्वर्ण व्यापार

भारत सरकार की स्वर्ण/चांदी आभूषण निर्यात संवर्धन एवं पुनः पूर्ति योजना के अंतर्गत स्वर्ण/चांदी का आयात करने वाली एक नामित एजेंसी के रूप में बैंक की अधिकृत शाखाएं, स्वर्ण/चांदी के आभूषण निर्यातों के आधार पर पुनः पूर्ति द्वारा निर्यातकों को अन्तरराष्ट्रीय कीमतों पर बहुमूल्य धातुओं की आपूर्ति कर रही हैं। इस वर्ष देशीय बिक्री के लिए स्वर्ण का आयात करने के लिए और अधिक उदार नीति अपनाई गई। भारतीय स्टेट बैंक ने इस कीमती धातु से संबंधित अपने व्यवसाय का विस्तार करने के अवसर का फायदा उठाया। देशीय उपभोक्ताओं को थोक में स्वर्ण की बिक्री करने का कार्य फरवरी 1998 से शुरू किया गया। इस प्रयोजन से बैंक ने परेषण के आधार पर स्वर्ण का आयात करने के लिए कुछ प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय बैंकों के साथ अनुबंध किए हैं। अन्तरराष्ट्रीय मूल्य उतार-चढ़ाव संबंधी ऑन लाइन सूचना की पहुँच रखने वाली अधिकृत शाखाएं, देशीय निर्माताओं को स्वर्ण क्रय करने के लिए स्क्रीन आधारित व्यापार सुविधा प्रदान कर रही हैं।

विश्व-व्यापी संपर्क सेवा

विदेश स्थित केन्द्रों पर आधारित निर्बंध एवं प्रलेखी उगाही संबंधी आगम राशियों को प्राप्त करने हेतु एक दक्ष प्रणाली उपलब्ध कराने की दृष्टि से, वर्ष के दौरान बैंक के अन्तरराष्ट्रीय प्रभाग द्वारा विश्व-व्यापी संपर्क सेवा नामक एक नई विशेष सेवा प्रारम्भ की गई। विश्व-व्यापी संपर्क सेवा ने वर्ष के दौरान कार्य करना प्रारम्भ कर दिया एवं विदेशी बैंकों के उत्पादों के तदनुसूची बैंकिंग उत्पादों को उन्हीं शर्तों पर प्रस्तावित कर रही हैं जिन शर्तों पर वे प्रदान कर रहे हैं। यह आशा की जाती है कि सरकारी एवं निजी दोनों क्षेत्रों के बड़े तथा छोटे, विविध प्रकार के भारतीय बैंकों द्वारा इन सेवाओं का लाभ उठाया जाएगा जिनका मूल्य निर्धारण एवं निर्माण बहुत ही आकर्षक ढंग से किया गया है। आगामी वर्षों में बैंक सम्पर्ककर्ता बैंकिंग सेवाओं को अपनी संवृद्धि के एक प्रमुख क्षेत्र एवं लाभ के स्रोत के रूप में मानता है।



Project Export Finance

Some of the major project exporters of the country are executing contracts overseas with the assistance of the Bank. The thrust of the Indian corporates is on infrastructure projects of less developed countries funded by the multilateral agencies. During the year, the Bank supported 40 projects in 21 countries with an aggregate assistance of Rs.4,662.19 crore.

Shipping Finance

The Bank has been providing financial support to major private and public sector shipping companies for acquisition of ships mainly from abroad, and extending support to shipping companies for construction/acquisition of ships from the Indian shipyards for coastal vessels. The additional exposure during the year was Rs.229 crore, taking the total exposure to shipping industry to Rs.935.01 crore.

Merchant Banking

A buoyant market for external commercial borrowing during the first half of the year gave a fillip to the Bank's loan syndication activity. It arranged 14 syndications as arrangers, participants and underwriters amounting to US \$ 751.37 million, besides 45 bilateral loans amounting to US \$ 372.58 million. It also provided short-term finance through buyers' and suppliers' credits amounting to US \$ 1,011 million during the year. In the later part of the year, as a result of a cautious approach arising out of the Southeast Asian currency crisis, many of the corporates preferred to borrow in the domestic currency. The crisis, however, provided an opportunity to the Bank to purchase from other cash strapped banks in the South East Asia India-related paper, available in the secondary market at a good spread.

Dealing in the Yellow Metal

As one of the nominated agencies for import of gold/silver under the Gold/Silver Jewellery Export Promotion and Replenishment Scheme of the Government of India, authorized branches of the Bank are supplying precious metals to the exporters at international prices by way of replenishment against the gold/silver jewellery exports. The year witnessed a more liberalized policy towards import of gold for domestic sale. SBI seized the opportunity to expand its business in the precious metal. The sale of gold to domestic consumers on bulk basis started from February 1998. For this purpose, the Bank has entered into arrangements with a few international banks of repute to import gold on consignment basis. Authorized branches having access to on-line information on international price movement are offering screen-based trading facility in the yellow metal to the domestic manufacturers.

Global Link Services

With a view to providing an efficient system for realizing the proceeds of clean and documentary collections drawn on overseas centres, the Bank's International Division has begun a new specialised service, the Global Link Services (GLS). The service became operational during the year and is offering correspondent banking products on matching terms with similar products of foreign banks. It is expected that a wide variety of Indian banks, large as well as small, both in public and private sectors will make use of these services which have been tailored and priced very attractively. The Bank considers correspondent banking services as an important area of growth and source of profits in the coming years.

विदेश व्यापार शाखा मुंबई के
संव्यवहार कक्ष का एक दृश्य

A view of the
Dealing Room,
Overseas Branch,
Mumbai

घ. सहयोगी बैंक एवं अनुषंगियाँ

भारत में भारतीय स्टेट बैंक के सात सहयोगी बैंक, एक पूर्ण स्वामित्व वाली बैंकिंग अनुषंगी एवं पांच गैर-बैंकिंग अनुषंगियाँ हैं।

सहयोगी बैंक

सहयोगी बैंकों ने समूह संबंधी सहक्रियाओं को सुसज्जित करने एवं आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी वर्तमान संरचना एवं कार्य प्रणालियों का नवीकरण करने का कार्य प्रारम्भ किया है। वर्ष के दौरान स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर और स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर ने ईक्विटी शेयरों के सार्वजनिक निर्गमों के साथ प्राथमिक पूंजी बाजार का पहली बार निर्धारण किया और क्रमशः 65.94 करोड़ रुपये एवं 69.24 करोड़ रुपये संग्रहित किए। परिणामस्वरूप, इन दोनों बैंकों में भारतीय स्टेट बैंक की धारित राशि घटकर 75 प्रतिशत हो गई।

तालिका 6: भारतीय स्टेट बैंक एवं सहयोगी बैंक

(मार्च 1998 के अंत में)

(रुपये करोड़ में)

बैंक का नाम	कुल शाखाएँ	जमाराशियाँ	अग्रिम	निवेश	निवल लाभ
भारतीय स्टेट बैंक	8,925	1,31,091	74,237	54,982	1,861.20
सहयोगी बैंक	4,291	42,513	23,329	17,721	599.00
कुल	13,216	1,73,604	97,566	72,703	2,460.20

गैर-बैंकिंग अनुषंगियाँ

बैंक की अनुषंगियों/बैंक से सम्बद्ध इकाइयों के कार्य निष्पादन की प्रमुख विशेषताएँ

एस बी आई कैपिटल मार्केट्स (एस बी आई कैप)

- पूंजी बाजार के कार्यकलाप में गिरावट होने के बावजूद 10 निर्गमों के अग्रणी प्रबंधकों के रूप में कार्य करते हुए कुल 2,575.22 करोड़ रुपये की राशि संग्रहित करके एस बी आई कैपिटल मार्केट्स ने अपना प्रथम स्थान बनाए रखा है। (कुल निधि का 89.3 प्रतिशत सार्वजनिक निर्गमों द्वारा प्राप्त किया गया)।
- कुल 12,515 करोड़ रुपये की ऋण राशि के निजी स्थानन हेतु प्राइम डाटाबेस द्वारा प्रथम स्थान दिया गया है।
- महानगर टेलिफोन निगम लिमिटेड की विश्व जमा रसीदों के निर्गम हेतु सह-अग्रणी प्रबंधक के रूप में कार्य किया है।
- कुल 620 करोड़ रुपये के रुपया ऋणों एवं 50 मिलियन अमरीकी डालर के विदेशी मुद्रा ऋणों का समूहन किया है।
- परियोजना मूल्यांकन सम्बन्धी कार्यकलाप में महत्वपूर्ण वृद्धि (14,000 करोड़ रुपये की परियोजना लागत वाली 49 परियोजनाएँ)।
- कारपोरेट सलाहकार सेवाओं के एक भाग के रूप में इसने "एम एण्ड ए", निजीकरण एवं "जे बी" से सम्बद्ध 24 लेन-देनों का संचालन किया है।
- सकल आय - 140.49 करोड़ रुपये एवं कर उपरान्त लाभ - 27.91 करोड़ रुपये।

एस बी आई फैक्टर्स एण्ड कमर्शियल सर्विसेज लिमिटेड (एस बी आई फैक्टर्स)

- आर्थिक कार्यकलापों के स्तर में गिरावट होने के बावजूद एस बी आई फैक्टर्स ने व्यवसाय में अपना बाजार अंश लगभग 45 प्रतिशत बनाए रखा।
- विगत वर्ष के 438 करोड़ रुपये के व्यावसायिक टर्न-ओवर की तुलना में मामूली वृद्धि के साथ इसका व्यावसायिक टर्न-ओवर 461 करोड़ रुपये रहा।

एस बी आई फण्ड्स मैनेजमेन्ट लिमिटेड (एस बी आई एफ एम एल)

- एस बी आई फण्ड्स मैनेजमेन्ट लिमिटेड मार्च 1998 के अंत में कुल 1,490 करोड़ रुपये की निधि एवं 1,742 करोड़ रुपये की निवल आस्ति मूल्य वाली 16 योजनाओं का प्रबंधन कर रहा था। इसके अतिरिक्त 1,258 करोड़ रुपये की निवल आस्ति मूल्य सहित दो अपतटीय निधियों की कुल राशि 297 करोड़ रुपये थी।

D. Associates and Subsidiaries

In India, SBI has seven Associate Banks, one fully-owned banking subsidiary and five non-banking subsidiaries.

Associate Banks

The Associate Banks initiated an exercise for revamping their existing structure and processes to harness the Group synergies and meet the emerging challenges. During the year, the State Bank of Bikaner and Jaipur and the State Bank of Travancore accessed the primary capital market for the first time with the public issues of equity shares and mobilized Rs. 65.94 crore and Rs.69.24 crore respectively. Consequently, the holding of the State Bank of India came down to 75% in these two banks.

Table 6: SBI and Associate Banks

(At end-March 1998)					(Rs. crore)
Banks	Number of Branches	Deposits	Advances	Investment	Net Profit
State Bank of India	8,925	1,31,091	74,237	54,982	1,861.20
Associate Banks	4,291	42,513	23,329	17,721	599.00
Total	13,216	1,73,604	97,566	72,703	2,460.20

Non-banking Subsidiaries

Highlights of Performance of the Bank's Subsidiaries/Affiliate

SBI Capital Markets (SBICAP)

- Despite subdued capital market activity, SBICAP retained its No.1 position by acting as Lead Managers to 10 issues raising Rs.2,575.22 crore (89.3% of the total funds raised through public issues).
- Ranked as No.1 by Prime Database for the total amount of private placement of debt aggregating Rs.12,515 crore.
- Acted as Co-Lead Manager for the MTNL GDR issue.
- Syndicated rupee loan aggregating Rs.620 crore and foreign currency loan US \$ 50 mn.
- Significant pick-up in project appraisal activity (49 assignments involving project cost of Rs.14,000 crore).
- As a part of corporate advisory services, it handled 24 deals relating to M&A, privatization and JVs.
- Gross income - Rs.140.49 crore and PAT - Rs.27.91 crore

SBI Factors and Commercial Services Ltd. (SBI Factors)

- Despite downturn in the level of economic activity, SBI Factors retained its market share in the business at about 45%.
- The business turnover increased to Rs.461 crore from Rs.438 crore in the previous year.

SBI Funds Management Ltd. (SBIFML)

- SBIFML was managing 16 schemes with an aggregate corpus of Rs.1,490 crore and NAV of Rs.1,742 crore at end-March 1998. Besides, the aggregate corpus of the two offshore funds was Rs.297 crore with NAV of Rs.1,258 crore.

- वर्ष के दौरान सीमित अवधि वाली दो योजनाओं को असीमित अवधि वाली योजनाओं में परिवर्तित किया गया और एक योजना का ऋणमोचन किया गया. एम एम आई एस 1998(I) नामक एक नई योजना प्रारम्भ की गई.

एस बी आई गिल्ट्स लिमिटेड

- बैंक की प्राथमिक डीलर अनुषंगी एस बी आई गिल्ट्स ने हामीदारी बोली लगाने एवं सरकारी प्रतिभूतियों के सौदों के क्षेत्रों में स्वयं को सुस्थापित किया.
- बोली लगाने, सफलतम बोली लगाने एवं टर्न-ओवर से सम्बन्धित भारतीय रिजर्व बैंक से किए गए अपने वायदे से अधिक का निष्पादन किया.
- वर्ष का लाभ 30.73 करोड़ रुपये रहा जो विगत वर्ष के 12.91 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में पर्याप्त अधिक था.

बैंक से सम्बद्ध इकाइयाँ

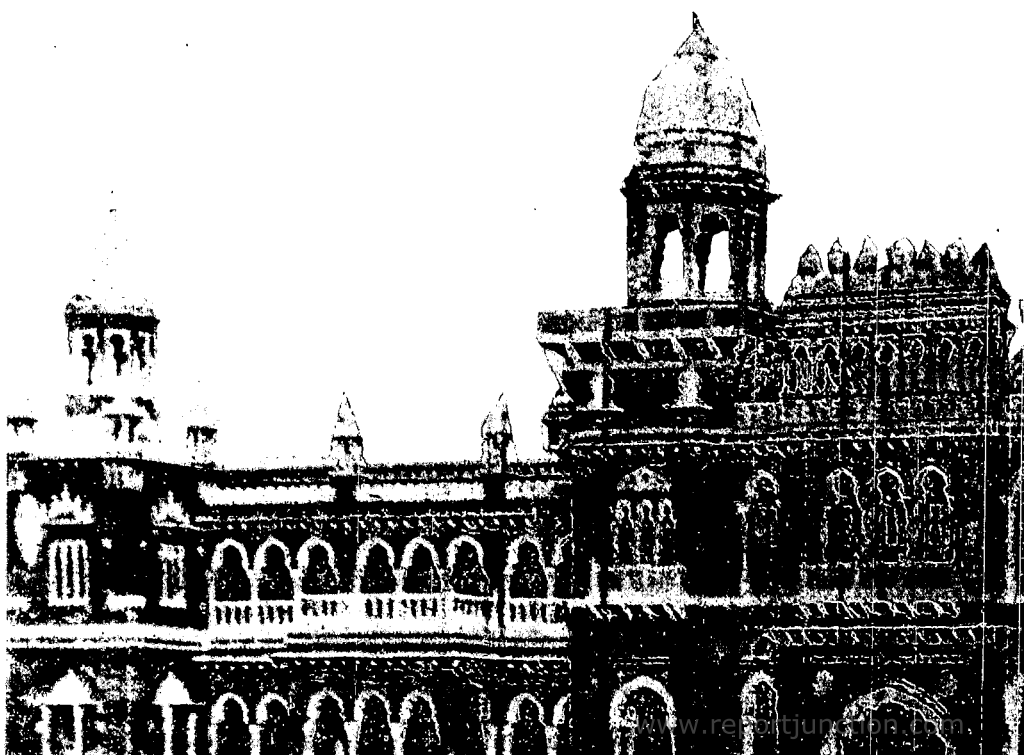
एस बी आई होम फाइनेंस लिमिटेड

- बैंक से सम्बद्ध इस इकाई ने वर्ष 1997-98 में खोले गए दो शाखा कार्यालयों सहित देश के विभिन्न भागों में विगत कुछ वर्षों के दौरान 8 क्षेत्रीय कार्यालयों एवं 16 शाखा कार्यालयों की स्थापना करते हुए अपने परिचालन क्षेत्र का विस्तार किया है.
- कम्पनी ने वर्ष के दौरान क्रमशः 89.39 करोड़ रुपये एवं 88.77 करोड़ रुपये की राशि संस्वीकृत एवं संवितरित की. कम्पनी द्वारा 95,910 आवास गृहों को वित्तपोषित कर विगत वर्ष की तुलना में 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई.

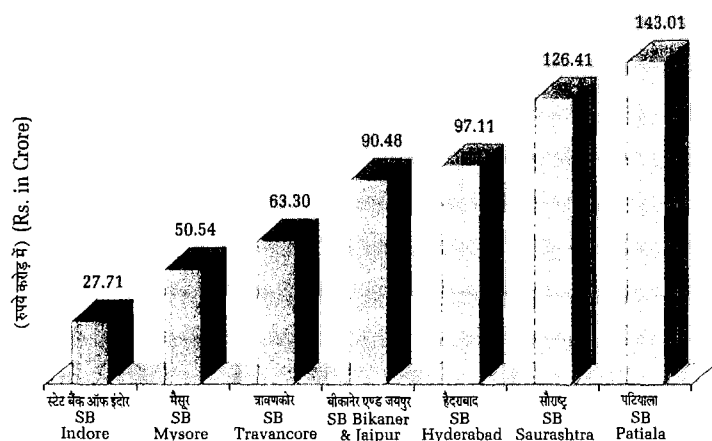
बैंकिंग अनुषंगी

एस बी आई कामर्शियल एण्ड इंटरनेशनल बैंक लिमिटेड (एस बी आई सी आई)

- वर्ष के दौरान जमाराशियों एवं अग्रिमों में क्रमशः 49 प्रतिशत एवं 74 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई - ग्राहकोन्मुखता और प्रौद्योगिकी के बृहत्तर उपयोग एवं उत्पाद नवोन्मेषन के द्वारा सेवाओं पर अधिक ध्यान दिये जाने के परिणामस्वरूप ही यह उपलब्धि संभव हो पाई है.
- इसकी अलाभकारी आस्तियों का अनुपात वर्ष की समाप्ति पर 7.89 प्रतिशत रहा एवं इसका निवल लाभ विगत वर्ष की तुलना में दो गुने से भी अधिक बढ़कर 14.12 करोड़ रुपये रहा.



सहयोगी बैंकों के निवल लाभ, 1997-98 Net Profit of The Associate Banks, 1997-98



- During the year, two close-ended schemes were made open-ended, and one scheme was redeemed. A new scheme called MMIS 1998(I) was launched.

SBI Gilts Ltd.

- The Primary Dealer subsidiary of the Bank carved out a niche for itself in underwriting, bidding and dealing in government securities.
- It outperformed its commitment to RBI in regard to bidding, bidding success and turnover.
- The year's profit at Rs.30.73 crore was substantially higher than that at Rs.12.91 crore last year.

Affiliate

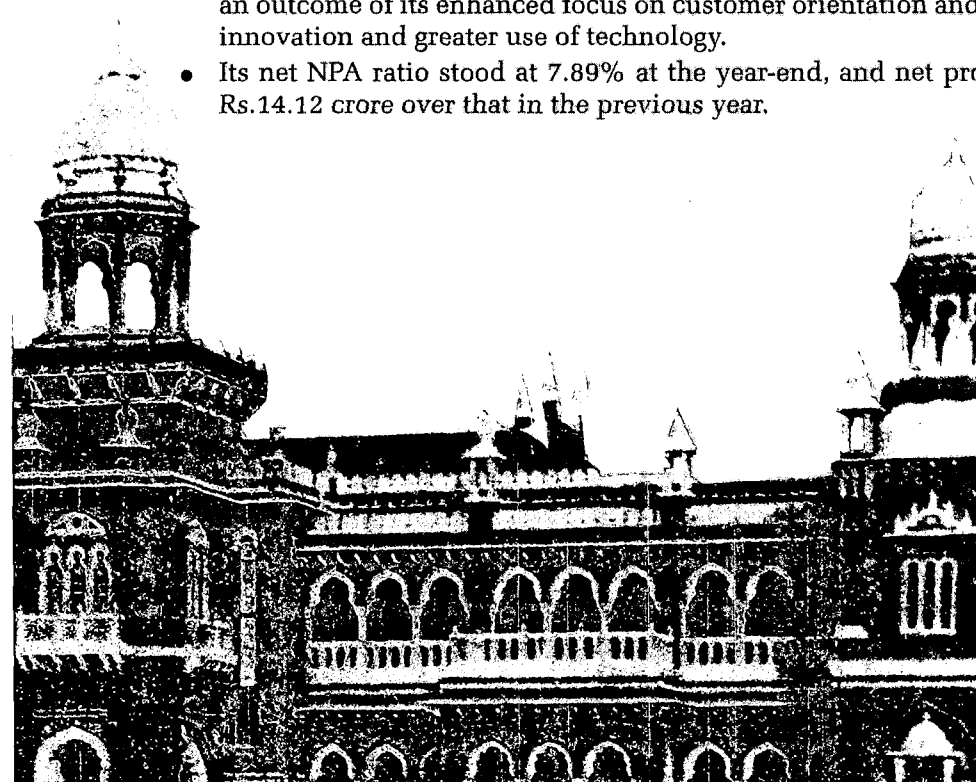
SBI Home Finance Ltd.

- The Bank's affiliate has extended over the years its area of operation by establishing eight regional offices and 16 branch offices, including two branch offices opened in 1997-98, in different parts of the country.
- The company sanctioned and disbursed Rs.89.39 crore and Rs.88.77 crore respectively during the year. The number of dwelling houses financed by the company at 95,910 recorded an increase by 10% over the previous year.

Banking Subsidiary

SBI Commercial and International Bank Ltd. (SBICI)

- Over the year, deposits and advances grew substantially by 49% and 74% respectively - an outcome of its enhanced focus on customer orientation and services through product innovation and greater use of technology.
- Its net NPA ratio stood at 7.89% at the year-end, and net profit more than doubled to Rs.14.12 crore over that in the previous year.



सहायक प्रणालियाँ

मानव संसाधन विकास

नए आर्थिक परिवेश ने बैंक के समक्ष कई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए कर्मचारियों की क्षमता एवं विश्वास में वृद्धि करने के उद्देश्य से बैंक के प्रशिक्षण संस्थानों में आयोजित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा एवं पुनर्संरचना की गई ताकि उन कार्यक्रमों को वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं के लिए और अधिक संगत बनाया जा सके। जिन क्षेत्रों में बैंक ने आंतरिक प्रशिक्षण क्षमताओं का विकास नहीं किया था, उनमें कुछ चुने हुए अधिकारियों को विशेषीकृत कार्यक्रमों हेतु बाह्य प्रशिक्षण संस्थानों में प्रतिनियुक्त किया गया। नीति के भाग के रूप में उत्कृष्ट निष्पादन को मान्यता प्रदान करने एवं पुरस्कृत करने के लिए वर्ष के दौरान अपने कार्य का उत्कृष्ट निष्पादन करने वाले क्षेत्र अधिकारियों का निर्धारण करने एवं उन्हें पुरस्कृत करने के लिए एक योजना प्रारम्भ की गई। यह योजना, शाखा प्रबंधकों और क्षेत्रीय प्रबंधकों तथा अन्य वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए पहले से ही लागू की गई मान्यता योजनाओं और शाखाओं एवं उनकी चुनी हुई श्रेणियों के स्टाफ सदस्यों हेतु बहुपुरस्कार एवं मान्यता योजना के अतिरिक्त थी।

औद्योगिक सम्बन्ध

बैंक के औद्योगिक सम्बन्ध के दर्शन का लक्ष्य, सहयोग आधारित संस्कृति का विकास करना और संयुक्त रूप से किए जाने वाले समझौतों के माध्यम से विवादों का समाधान करना है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बैंक में प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर एक सुस्थापित एवं सतत परामर्शदात्री तंत्र कार्य कर रहा है। वर्ष 1996 में आयोजित की गई एक त्रिपक्षीय कार्यशाला के अनुक्रम स्वरूप एक और कार्यशाला मार्च 1998 में आयोजित की गई जिसमें बैंक के शीर्ष प्रबंधन वर्ग के सदस्यों एवं अधिकारी और कर्मचारी महासंघों के शीर्ष स्तरीय पदाधिकारी सम्मिलित थे। इस कार्यशाला का उद्देश्य बैंक की कार्य-संस्कृति को और अधिक समृद्ध बनाना तथा ग्राहक सेवा, बैंक की उत्पादकता और लाभ-प्रदता में सुधार करना था। वर्ष के दौरान औद्योगिक सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बने रहे।

अंतरराष्ट्रीय परामर्श

अपने अनुभव और विशेषज्ञता के साथ, समान परिस्थितियों में कार्य करनेवाले अन्य बैंकों/संगठनों की सहायता करने की क्षमता सहित इस क्षेत्र में अग्रणी के रूप में बैंक मान्यता में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वृद्धि होनी जारी है। बैंक ने समीक्षाधीन वर्ष में अंतरराष्ट्रीय परामर्श के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की। वर्ष के दौरान, नेशनल बैंकिंग कालेज, घाना, को अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग के लिए संकाय सहायता प्रदान की गई और कैरो में 200 इजिप्शियन बैंकों के लिए विकासात्मक बैंकिंग पर पांच कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इजिप्शियन एवं उजबेक बैंकों के लिए बैंक के प्रशिक्षण संस्थानों में भी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उपर्युक्त सभी कार्यक्रमों से बैंक को शुल्क आधारित आय का एक स्रोत प्राप्त हुआ।

निरीक्षण एवं लेखा-परीक्षा

बैंक की आंतरिक लेखा-परीक्षा मोटे तौर पर क) निरीक्षण एवं लेखा-परीक्षा और ख) प्रबंधन लेखा-परीक्षा शीर्षक के अंतर्गत की जाती है। निरीक्षण एवं लेखा-परीक्षा, लेखा-परीक्षा की जाने वाली इकाई के संपूर्ण कार्य संचालन की महत्वपूर्ण समीक्षा करता है। निर्धारित प्रणाली एवं कार्यविधि, आस्तियों एवं देयताओं की गुणवत्ता एवं मूल्य और सांविधिक तथा विनियामक आवश्यकताओं का अनुपालन हो रहा है या नहीं, इसका सत्यापन करना ही इस प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य है। आंतरिक नियंत्रण और निरीक्षण एवं लेखा-परीक्षा प्रणालियों की समीक्षा करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा गठित कार्यदल की अधिकांश संस्तुतियां कार्यान्वित की गई हैं। वर्ष के दौरान, 5,033 देशीय शाखाओं और 23 विदेश स्थित कार्यालयों/शाखाओं की निरीक्षण एवं लेखा-परीक्षा की गई।

वर्ष के दौरान बैंक में महत्वपूर्ण कंप्यूटर प्रणालियों की प्रणाली लेखा-परीक्षा शुरू की गई। इस लेखा-परीक्षा में बैंक मास्टर और आई बी एस नेट प्रणालियों की लेखा-परीक्षा करना शामिल है। बैंक में उपयोग में लाई जा रही अन्य बड़ी कंप्यूटर प्रणालियों की भी प्रणाली लेखा-परीक्षा शुरू करने की व्यवस्था की गई है।

Support Systems

Human Resource Development

The new economic environment has thrown several challenges before the Bank. With a view to enhancing the competence and confidence of the employees to enable them to face the emerging challenges, the training programmes being conducted at the Bank's training institutions were reviewed and redesigned to make them more relevant to the current and future needs. In areas, where the Bank had not developed in-house training capabilities, select officers were deputed to external training institutes for specialized training programmes. As part of the policy to recognize and reward excellence in performance, a scheme was introduced during the year for identifying and rewarding field officers who excel in performance of their jobs. This was in addition to the recognition schemes already in effect for branch managers and regional managers and other senior executives and the Multiple Reward and Recognition Scheme for branches and select categories of their staff members.

Industrial Relations

The industrial relations philosophy of the Bank aims at development of a collaborative culture and resolving disputes through jointly negotiated settlements. A well-established and on-going consultative machinery is functioning at various tiers of administration in the Bank to achieve the objectives. As a sequel to a tripartite workshop held in 1996, another workshop associating members of the top management of the Bank and the top leadership of both officers and staff federations was held in March 1998 with a view to further enriching the work culture and improving upon customer service, productivity and profitability of the Bank. Industrial relations remained cordial during the year.

International Consultancy

The Bank's recognition internationally as a leader in its area, capable of helping other banks/organizations operating in comparable conditions, with its experience and expertise, continues to grow. The Bank made significant progress in the area of international consultancy in the year under review. Faculty support in international banking was provided to the National Banking College, Ghana and five workshops on developmental banking were conducted for 200 Egyptian bankers at Cairo. Programmes were also organized at the Bank's training institutions for Egyptian and Uzbek bankers. All the above programmes provided a source of fee-based income for the Bank.

Inspection and Audit

The internal audit of the Bank is conducted under the broad heads - (a) Inspection & Audit and (b) Management Audit. Inspection & Audit undertakes a critical review of the entire working of the auditee unit. The objective of the exercise is to verify adherence to the laid down systems and procedures, quality and value of assets and liabilities and compliance with statutory and regulatory requirements. A majority of the recommendations of the Working Group set up by the RBI to review the internal control and inspection and audit systems has been implemented. During the year, operations of 5,033 domestic branches and 23 foreign offices/branches were reviewed through the process of inspection and audit.

Systems Audit of the Critical Computer Systems in the Bank started during the year. The Audit covered the Bankmaster and IBSnet systems. Arrangements were also made to take up Systems Audit of the other major Computer Systems in use in the Bank.

भारतीय स्टेट बैंक, प्रबंधन लेखा-परीक्षा में अग्रणी है और यह बैंक की संरचना प्रणालियों, कार्यनीतियों, प्रबंधन एवं निष्पादन की प्रभावशीलता की जांच करता है। बैंक की पुनर्संरचना के परिणामी उद्देश्यों तथा कार्यनीतियों के अनुरूप प्रबंधन लेखा-परीक्षा के पुनरीक्षित मापदंड/सीमा निर्धारित करने के लिए वर्ष के दौरान कार्रवाई शुरू की गई।

राजभाषा

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन तथा इसकी सांविधिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बैंक के गहन प्रयास जारी रहे।

सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

आधुनिक बैंकिंग, अपने अस्तित्व के साथ-साथ वृद्धि के लिए सूचना प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भर है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, उत्पाद नवोन्मेषन तथा उत्पाद वितरण दोनों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग न किए जाने से कम से कम शहरी तथा महानगरीय क्षेत्रों में, अपने ग्राहकों को बनाए रखने पर असर पड़ेगा, अर्थात् उद्देश्य लगभग असफल सिद्ध होगा। अपने अनेक समानधर्मियों तथा प्रतिस्पर्धियों की तुलना में इस तथ्य को पहले ही स्वीकार कर लेने के कारण, बैंक प्रौद्योगिकी आधार के उन्नयन की ओर विशेष ध्यान देता रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी का बढ़ता हुआ उपयोग, भविष्य के लिए बैंक की कार्यनीति का प्रमुख तत्व होगा।

बैंक का शाखा-कंप्यूटरीकरण का कार्य तेजी से जारी रहा। वर्ष 1997-98 के अंत तक, बैंक की 1,211 शाखाएं पूर्णतया कंप्यूटरीकृत थीं। इनमें हमारे बैंक की 2,350 शहरी एवं महानगरीय शाखाओं में से 1,009 शाखाएं शामिल है। मार्च 1998 की समाप्ति तक, कंप्यूटरीकृत शाखाओं का हिस्सा बैंक जमाशायियों में 36 प्रतिशत, अग्रिमों में 58 प्रतिशत और विदेशी मुद्रा व्यवसाय में 72 प्रतिशत रहा। अंतर-शाखा सम्बद्धता कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष के दौरान एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। एक प्रायोगिक परियोजना शुरू की गई जिसके अन्तर्गत चार शाखाएं, बंगलूर और मुंबई की दो-दो शाखाओं को शाखा स्तर पर पृथक रूप से स्वतंत्र डाटा आधार रखने की बजाय दूरस्थ केन्द्रीकृत डाटा आधारों (बंगलूर और मुंबई में एक-एक) से जोड़ दिया गया। शाखा कंप्यूटरीकरण में वृद्धि के साथ बैंक ने नवोन्मेषी एवं ग्राहकों के अनुकूल उत्पादों, जैसे नकद प्रबंधन उत्पाद, बहु विकल्पीय जमा योजनाएं, टेली-बैंकिंग सेवाएं और कारपोरेट ग्राहकों के लिए दूरस्थ लाग-इन सुविधा, की शुरुआत की है।

बैंक ने भागीदारी भुगतान नेटवर्क प्रणाली (स्वधन) प्रारम्भ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह नेटवर्क भारतीय बैंक संघ के तत्वावधान में मुंबई स्थित बैंकों के स्वचालित टेलर मशीनों का नेटवर्क है। स्वधन के अन्तर्गत, भारतीय स्टेट बैंक, की आठ स्वचालित टेलर मशीनों ने परिचालन प्रारम्भ कर दिया है। मार्च 1998 तक 14 महत्वपूर्ण केन्द्रों पर कुल मिलाकर बैंक के पास 23 स्वचालित टेलर मशीनें परिचालन में थीं।

भारत सरकार के सीमा-शुल्क विभाग ने आयात शुल्क की वसूली एवं आयात शुल्क वापसी के लिए इलेक्ट्रॉनिक डाटा इंटरचेंज (ईडीआई) प्रणाली अपनाने की एक योजना शुरू की है। इलेक्ट्रॉनिक डाटा इंटरचेंज प्रणाली के अन्तर्गत इन लेनदेनों का निपटान करने के लिए बड़े बंदरगाहों एवं हवाई अड्डों पर स्थित बैंक की शाखाओं को सुसज्जित किया जा रहा है।

सम्पूर्ण बैंक स्तर पर उपयोग में लाई जा रही कंप्यूटर प्रणाली को प्रभावित करने वाली सहस्राब्दि संबंधी समस्या और बैंक के परिचालनों पर उसके प्रभाव की समीक्षा की गई। बैंक की शाखा स्वचालन और अन्तर-कार्यालय समाधान के संबंध में लक्ष्य की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण क्रमादेश समूह में 'वाई 2 के' की समस्या पाई गई। क्रमादेश समूह के अन्य क्षेत्रों में इस समस्या पर ध्यान देने के लिए और इसका समाधान करने में की गई प्रगति की निगरानी करने के लिए भी एक समयबद्ध कार्य-योजना प्रारम्भ की गई है।

बैंक में नई प्रौद्योगिकी का सुचारु रूप से उपयोग करने हेतु सभी स्थानीय प्रधान कार्यालयों में सेटलाइट प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए हैं। इन केन्द्रों और स्टेट बैंक सूचना एवं संचार प्रबंधन संस्थान ने, जो सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में बैंक की शीर्ष प्रशिक्षण संस्था है, सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए काफी संख्या में अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया है।

SBI is a pioneer in Management Audit, which examines the effectiveness of the structure, systems, strategies, management and performance of the Bank. Steps were initiated during the year to formulate the revised parameters/contours of Management Audit, in harmony with strategies and objectives resulting from the Bank's restructuring.

Official Language

Implementation of the official language policy and meeting its statutory requirements continued to receive close attention of the Bank.

Use of Information Technology

Modern banking relies heavily for its existence as well as growth on information technology (IT). In today's context, without the use of information technology both product innovation and product delivery are bound to suffer, making client retention in at least urban and metropolitan areas almost a lost cause. Having recognized the fact earlier than most of its compatriots and competitors, the Bank continues to pay special attention to upgradation of its technological base. Increased use of IT will be a key element of the Bank's strategy for future.

Computerization of the Bank's branches continued at a rapid pace. At the end of the year 1997-98, the Bank had fully computerized 1,211 branches, which included 1,009 urban and metropolitan branches out of 2,350 such branches of the Bank. The computerized branches accounted for 36 per cent of the Bank's deposits, 58 per cent of advances and 72 per cent of forex turnover at end-March 1998. A significant development during the year was initiation of inter-branch connectivity programme. A Pilot Project was implemented, under which four branches, two each in Bangalore and Mumbai, were connected to remote centralized databases (one each in Bangalore and Mumbai), instead of having separate independent databases at the branch level. With branch computerization in place, the Bank launched customer-friendly products like cash management, multi-option deposits, tele-banking services and remote login facility for corporate customers.

The Bank played a key role in the implementation of the Shared Payment Network System (Swadhan), which is a network of ATMs of banks in Mumbai under the aegis of the IBA. Under the Swadhan, eight SBI ATMs have become operational. In all, the Bank had 23 ATMs spread over 14 important centres by March 1998.

The Customs Department of the Government of India launched a plan to switch over to Electronic Data Interchange (EDI) system for duty collection and duty drawback disbursements. The Bank's branches at major seaports and airports are being equipped to handle these transactions under the EDI system.

The millenium problem affecting the computer system in use across the Bank and its impact on the Bank's operations were reviewed. The most mission critical applications used for its branch automation and inter-office reconciliation are already Y2K compliant. A time-bound action plan has also been put in place to address the problem in other application areas and to monitor the progress made towards its solution.

In order to support smooth transition to the use of new technology in the Bank, Satellite Training Centres have been set up at all LHOs. These centres and the SBIICM, the Bank's apex training institution in information and communication technology, trained a large number of its employees in the use of IT.

क्रेडिट कार्ड - एस बी आई कार्ड एण्ड पेमेन्ट सर्विसेज़ प्रा. लि.

एक विशिष्ट खर्च शैली वाले मध्य वर्ग की तेजी से बढ़ती संख्या को देखते हुए क्रेडिट कार्ड के लिए असीम संभावनाएं हैं जिसके द्वारा उपभोक्ता वित्तपोषण के क्षेत्र में गहरी पैठ की जा सकती है। इस उभरते हुए अवसर का लाभ प्राप्त करने के लिए बैंक ने वर्ष 1998-99 के दौरान एस बी आई कार्ड शुरू करने की योजना तैयार की है। प्लास्टिक कार्डों के व्यवसाय में नवीनतम प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है। इस प्रयोजन से बैंक ने अमरीका की जी ई कैपिटल कॉरपोरेशन, जो उपभोक्ता वित्त में विश्वस्तर पर अग्रणी के रूप में स्वीकार की गई है, के साथ संयुक्त उद्यम समझौता किया है।

इस समझौते में एस बी आई कार्ड एवं पेमेंट सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड (150 करोड़ रुपये की प्राधिकृत पूंजी) और जी ई कैपिटल बिजनेस प्रोसेस मैनेजमेंट सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड (100 करोड़ रुपये की प्राधिकृत पूंजी) के नाम से संयुक्त उद्यम कम्पनियां स्थापित करने का प्रावधान है। पूर्ववर्ती कम्पनी में भारतीय स्टेट बैंक की धारिता 60 प्रतिशत होगी और यह विपणन का कार्य देखेगी जबकि दूसरी कंपनी में बैंक की धारिता 40 प्रतिशत होगी और वह प्रक्रिया संबंधी सेवाएं उपलब्ध कराएगी।

एस बी आई सिक्यूरिटीज लि.

एस बी आई सिक्यूरिटीज लि., जिसकी प्राधिकृत पूंजी 100 करोड़ रुपये है और जिसे एशियाई विकास बैंक एवं अन्य संस्थाओं की ईक्विटी सहभागिता से स्टेट बैंक समूह के एक एजेंट के रूप में स्थापित किया गया है, इस वर्ष के अंत तक कार्य करना प्रारंभ कर देगी और अतिशीघ्र ही विश्व स्तर की एक प्रतिभूत फर्म के रूप में इसके उभरने की आशा है। इस प्रकार कारपोरेट ग्राहकों को एक ही स्थान पर सभी प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए एस बी आई बैंक और एस बी आई गिल्ट्स लि. के साथ मिलकर एस एस एल भारत आधारित एक शीर्ष निवेश बैंकिंग समूह बन जाएगा जिससे मर्चेन्ट बैंकिंग कार्यकलापों, ऋण बाजार और निवेश बैंकिंग परिचालनों पर युतिप्रभाव सुनिश्चित हो सके।

भविष्य विलोकन

नई सहस्राब्दि समीप आ रही है और भारतीय वित्तीय प्रणाली जो अब तक एक परीक्षण के दौर से गुजर रही है, और जिसे लगातार उन परिवर्तनों का सामना करना होगा, जो एक व्यवहार्य एवं लचीली प्रणाली के रूप में इसकी प्रभावकारिता को बनाए रखने के लिए परिवेश में घटित हो रहे हैं। प्रणाली के अत्यधिक महत्वपूर्ण घटकों में से एक घटक के रूप में आपके बैंक पर भी वही जिम्मेदारी आ जाती है। इसलिए, जिस ढंग से आज हम अपना व्यवसाय करते हैं और परिवेश के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, उस ढंग को हमें तेजी से बदल रहे परिवेश के साथ बदलने की आवश्यकता है। हम इस तथ्य से पूर्णतया अवगत हैं कि एक उद्योग अग्रणी के रूप में, अन्य बैंकों से पीछे रहना और उनसे यह अपेक्षा रखते हुए चैन से बैठना कि दूसरे बैंक हमारे लिए रास्ता साफ करेंगे और मार्ग निर्धारित करेंगे। पिछले चार दशकों की तरह, आपके बैंक को लगातार नए रास्ते खोजने होंगे और दोराहा आने पर सही रास्ता चुनना होगा। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट होना चाहिए। हमारे बैंक के व्यवसाय का आकार जो देश में वाणिज्यिक बैंकों में सबसे बड़ा है, इसे और भी बड़ा बनाना होगा। हमारी सेवाओं के क्षेत्र एवं पहुँच को अत्यधिक व्यापक एवं समकालीन बनाना होगा और गुणवत्ता एवं लागत दोनों प्रकार से हमारे प्रतिस्पर्धियों की तुलना में इन्हें बेहतर होना होगा। हम इसे कैसे कर सकते हैं, इस पर दूसरों की निगाह रहेगी और वे हम से प्रतिस्पर्धा भी करेंगे।

किसी संगठन का आकार और प्रतिस्पर्धा में बने रहने की उसकी श्रेष्ठता इस समय गहन चर्चा का विषय है। इस संबंध में मुख्य बिन्दु दो हैं; प्रथम, क्या बढ़ते हुए आकार का हमेशा यही अर्थ होता है कि इससे प्रतिस्पर्धा में बढ़त प्राप्त होती है और यदि संगठन के आकार से प्रतिस्पर्धा में बढ़त प्राप्त होती है, तो संगठन के आकार में वृद्धि करने का सबसे अच्छा तरीका कौनसा है ? इस दिशा में तात्कालिक संभावनाएं विलय और अधिग्रहण का संकेत देती हैं जिससे ग्राहकों के व्यापक समूह को शामिल करने हेतु ऋण वितरण प्रणाली में व्यापक विस्तार करते समय स्टाफ एवं प्रौद्योगिकी लागत बांटने

Credit Card - SBI Card and Payment Services Private Limited (SBICPSL)

With the vast expanding middle-class population, which is increasingly taking to consumer spending, credit card business offers immense scope to make a serious foray into the area of consumer financing. To capture this emerging opportunity, the Bank has plans to launch SBI Card during 1998-99. The business of plastic cards requires state-of-the-art technology. For this purpose, the Bank has entered into a joint venture agreement with GE Capital Corporation, USA, the acknowledged world leader in consumer finance.

The Agreement provides for setting up of two joint venture companies named as SBI Cards and Payment Services Private Limited (authorized capital of Rs.150 crore) and GE Capital Business Process Management Services Private Limited (authorized capital of Rs.100 crore). SBI will have holdings of 60 per cent in the former, which will be engaged in marketing and 40% in the latter, which will render processing services.

SBI Securities Ltd. (SSL)

SBI Securities Ltd., set up as a broking arm of the State Bank Group with an authorized capital of Rs.100 crore and with the equity participation from the Asian Development Bank and other institutions, will commence operations by this year-end and is expected to emerge as a world class securities firm in no time. SSL along with SBI CAP and SBI Gilts Limited will thus become the top India-based Investment Banking Group to provide single-window service to corporate clients by ensuring synergies in merchant banking activities, debt-market and investment banking operations.

Looking Ahead

The new millennium is beckoning and the Indian financial system, which has till now stood the test of time, will have to continue to respond to the changes that are taking place in the environment in order to maintain its effectiveness as a viable and resilient system. As one of the most important constituents of the system, the same responsibility befalls your Bank as well. Therefore, much of the way we do our business and respond to the environment today would need to change with the fast changing environment. We are fully aware that as industry leaders, we cannot afford to sit back and wait for others to clear the path and set the route for us. As in the past four decades, your Bank shall have to continue to break new paths and exercise the right option wherever the road to future forks. To achieve this objective, our focus has to be clear. The size of business, which is the biggest amongst the commercial banks in the country, shall have to grow even bigger. The range and reach of our services shall have to be much wider and contemporaneous and our delivery shall have to be better than our competitors in terms of both quality and cost. How we achieve this, will be watched and emulated.

The size of an organization and its advantages in managing competition are presently subject matter of intense debate. The main points in this regard are two. Firstly, does increasing size always mean enhanced competitive edge and, if size gives an edge, what is the best way of achieving increase in size? Mergers and acquisitions lead to instant possibilities in this direction giving rise to opportunities to share staff and technology cost, while expanding the delivery platform wider for covering a much larger population of customers. This route may not, however, be available to us in

के अवसरों को बढ़ाया जा सके. तथापि, निकट भविष्य में हमारे पास यह रास्ता उपलब्ध नहीं हो सकता क्योंकि कानूनी अड़चनें, सामाजिक अपेक्षाएं और संगठनों के बीच में कार्य संस्कृति की भिन्नता वर्तमान में संगठन का आकार बढ़ाने में सहायक होती हुई नहीं दिखाई देती हैं.

हमें यह प्रतीत होता है कि इसका उत्तर उस माध्यम पर आधारित होगा जो आकार का लाभ देते समय उन कठिनाइयों से बचाता है जो तेजी से बढ़ते हुए आकार में सन्निहित हैं. तथापि हम समझते हैं कि आकार के कुछ लाभों को, चयनित प्रौद्योगिकीय साधनों तथा परिचालन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अवलम्बन लेकर और अनुषंगियों के साथ-साथ अन्य समान विचार तथा समान स्थिति वाले संगठनों का नेटवर्क बनाकर, प्राप्त किया जा सकता है. निकट भविष्य में इस प्रकार का दृष्टिकोण किसी संगठन को अपनी मूल सामर्थ्य बनाए रखने में सहायक होगा. साथ ही इससे व्यावसायिक संबंध तथा लाभ बढ़ाने में अपनी सामर्थ्य का उपयोग करने के अवसर भी मिलेंगे. आपके बैंक के लिए भी यह एक सुगम उपाय होगा. हमारे बैंक को अनुषंगियों के परिचालन का सुदीर्घ तथा अच्छा अनुभव है. बैंकिंग तथा गैर-बैंकिंग अनुषंगियों की स्थापना ने आपके बैंक को और सुदृढ़ किया है तथा भारतीय स्टेट बैंक समूह को देश के सबसे बड़े वित्तीय समूह के रूप में स्थापित किया है. यह अनुभव और अधिक उपयोगी हो सकता है यदि हम सेवाओं का एक नेटवर्क विकसित करें जिसकी सीमाएं हमारे देश के बाहर तक फैली हो. इस उपाय से, नवोन्मेषी उत्पादों के विभिन्न प्रकारों तथा अपने प्रमुख ग्राहकों तथा ग्राहक समूहों की बदलती प्राथमिकताओं को पूरा करने में बैंक के बहुआयामी परिचालन को प्रभावी बनाने में सहायता मिलेगी.

आज जिस बाहरी परिवेश में बैंक कार्य कर रहे हैं. इसे पुनःपरिभाषित करने की आवश्यकता है. तेजी से बदलते हुए वातावरण की चुनौतियों का सामना करने में बैंकों को सक्षम बनाने के लिए विधायी ढांचे में परिवर्तन की आवश्यकता है. बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों के लिए गठित समिति के सुझावों के अनुसार विनियमन में कुछ परिवर्तनों के साथ साथ भारतीय रिज़र्व बैंक तथा सरकार की स्वामित्व भूमिका में भी परिवर्तन की आवश्यकता है. हमें आशा है कि आवश्यक परिवर्तन किये जायेंगे, जिससे प्रणाली की सुदृढ़ता एवं व्यवहार्यता बढ़ेगी. बैंकिंग प्रणाली, या उस मामले में सम्पूर्ण वित्तीय प्रणाली को बाजार के प्रति जवाबदारी लेनी होगी क्योंकि परिवर्तनों को देर सवेर लाने के सिवाय कोई और रास्ता नहीं होगा. हम इन परिवर्तनों की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं.

केन्द्रीय बोर्ड की बैठकें

वर्ष के दौरान, केन्द्रीय बोर्ड की सात बैठकें हुई. इनमें से पाँच मुंबई में और एक-एक कलकत्ता और गुवाहाटी में हुई.

केन्द्रीय निदेशक बोर्ड के लिए
और उनकी ओर से

एम. एस. वर्मा
अध्यक्ष

दिनांक : 18 जून, 1998

the immediate future as the legal constraints, social expectations and differences of work cultures between organizations presently do not seem to be supporting efficiencies of scale. The answer, it appears to us, would lie in a route which, while giving the advantages of size, protects against pains that are inherent in increasing size very rapidly. However, some of the advantages of size, we believe, can be achieved by resorting to outsourcing of selected technological and operational needs and by networking through subsidiaries as well as other like-minded and like-positioned organizations. In the immediate future, we think such an approach would help an organization in retaining its core competencies while providing it with an opportunity to leverage these competencies for increasing business relationships and profitability. This could be a good route for your Bank as well. The Bank has long and good experience of operating with subsidiaries. The set of its banking as well as non-banking subsidiaries adds to the strength of your Bank and makes the SBI Group the largest financial conglomerate in the country. This experience can stand in good stead if and when we embark upon developing a network of services, the limits of which could extend beyond our own boundaries. Through this route we could well effectuate diversifications of the Bank's operations to cover a much wider range of innovative products and respond to the changing preferences of its major clients and customer groups.

The external environment in which banks are operating today, quite clearly needs to be redefined. Changes in the legislative framework are necessary to enable banks to face the challenges of a rapidly changing milieu. As suggested by the Committee on Banking Sector Reforms, some changes would also be called for in the regulatory as also ownership roles of the Reserve Bank of India and the Government. We are hopeful that the necessary changes, which will add to the strength and the viability of the system, would be forthcoming. Your Bank, while preparing its strategies for future, has factored these changes in.

Meetings of the Central Board

During the year, seven meetings of the Central Board were held, five at Mumbai and one each at Calcutta and Guwahati.

For and on behalf of
the Central Board of Directors

M.S.Verma
Chairman

June 18, 1998

प्रमुख लेखा नीतियां**1. सामान्य**

इसके साथ संलग्न वित्तीय विवरण अवधिगत लागत पर तैयार किए गए हैं तथा वे भारत में स्थित कार्यालयों के संबंध में भारत में विद्यमान, एवं विदेश स्थित कार्यालयों के संबंध में विभिन्न देशों में विद्यमान सांविधिक प्रावधानों एवं प्रथाओं के अनुरूप हैं।

2. विदेशी मुद्रा से जुड़े लेनदेन

- 2.1 विदेश स्थित कार्यालयों की आय और व्यय की मदों को तथा विदेशी मुद्रा में आस्तियों और देयताओं को वर्ष की समाप्ति के समय प्रचलित विनिमय दरों पर परिवर्तित कर दिया गया है।
- 2.2 लम्बित वायदा संविदा के लाभ या हानि को लेखे में ले लिया गया है।
- 2.3 मुद्रा विनिमय ब्याज अंतरण पर उपचित आय और व्यय को ब्याज आय/व्यय के रूप में लेखे में लिया गया है।

3. निवेश

- 3.1 सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेशों का वर्गीकरण भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार 'स्थायी' और 'चालू' श्रेणियों के अंतर्गत किया गया है। (ऐसे सभी निवेश 31.3.1998 को चालू श्रेणी में हैं)।
- 3.2 नीचे अनुच्छेद 3.3 के अंतर्गत बताए गए परिशोधन के अध्ययन 'स्थायी' श्रेणी में वर्गीकृत सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश को लागत मूल्य पर लेखे में लिया गया है क्योंकि ये प्रतिभूतियाँ परिपक्वता अवधि तक रखी जानी हैं।
- 3.3 जहाँ 'स्थायी' श्रेणी में लागत मूल्य प्रतिभूतियों के अंकित मूल्य (प्रतिदेय मूल्य) से अधिक है, अतिरिक्त राशि प्रतिभूति की शेष परिपक्वता अवधि पर परिशोधित कर दी गई है। जहाँ लागत मूल्य अंकित मूल्य (प्रतिदेय मूल्य) से कम है, अंतर की उपेक्षा की गई है।
- 3.4 'चालू' श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत सरकारी एवं अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों और अधिकृत प्रतिभूतियों में निवेश, जहाँ बाजार भाव उपलब्ध हैं, वर्ष की समाप्ति पर लागत मूल्य या बाजार मूल्य पर, इनमें से जो भी कम हो, लेखे में लिए गए हैं।
- 3.5 ऐसे मामलों को छोड़कर जिन पर लागत के मूल्यांकन के लिए भारि.बैं. का अनुमोदन प्राप्त कर लिया गया है, 'चालू' श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत सरकारी एवं अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियाँ और दूसरी अधिकृत प्रतिभूतियों में निवेश, जहाँ बाजार भाव उपलब्ध नहीं है, उनका मूल्यांकन (भारि.बैं. के दिशा-निर्देशों के अनुसार निकाले गए) लागत मूल्य या अनुमानित वसूली मूल्य पर इनमें से जो भी कम हो, किया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार राजकोषीय विलों का धारित मूल्य लगाया गया है। ऐसे डिबेंचरों का जहाँ दो से अधिक तिमाहियों के लिए ब्याज नहीं दिया गया है, अग्रिमों हेतु आय अभिज्ञान एवं आस्ति वर्गीकरण मानकों के अनुसार मूल्य लगाया जा रहा है।
- 3.6 भारत और विदेश दोनों ही स्थानों की सहयोगी कम्पनियों एवं सह उद्यमों में निवेश अवधिगत लागत आधार पर, यदि कोई प्रावधान हो, तो उसे घटाकर लिए गए हैं।
- 3.7 दिनांक 31.3.97 तक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा उठाई गई हानि के प्रति किए प्रावधानों को घटाकर और उसे भारतीय स्टेट बैंक के निवेश की राशि तक सीमित रखते हुए, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में किए गए निवेशों को लेखे में लिया गया है।
- 3.8 अंशदानों पर प्राप्त दलाली/कमीशन को प्रतिभूतियों की लागत में से घटा दिया गया है। प्रतिभूतियों के अभिग्रहण के संबंध में संदत्त दलाली, कमीशन, स्टाम्प शुल्क को राजस्व व्ययों के रूप में माना गया है।

4. अग्रिम

भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों/निर्देशों के अनुसार अग्रिमों के प्रति प्रावधान निम्न प्रकार से किए गए हैं :

4.1 भारतीय कार्यालय

- 4.1.1 सभी अग्रिमों का वर्गीकरण चार श्रेणियों में किया गया है, अर्थात् (क) मानक आस्तियाँ, (ख) अव-मानक आस्तियाँ, (ग) संदिग्ध आस्तियाँ तथा (घ) हानिकर आस्तियाँ।
- 4.1.2 अलाभकारी आस्तियों (एनपीए) पर वसूल न किए गए ब्याज को घटाकर, सभी बकाया राशियों के लिए प्रावधान निम्न प्रकार किए गए हैं :
 - (क) अव-मानक आस्तियों के लिए बकाया राशियों के 10 प्रतिशत तक.
 - (ख) निर्यात प्रत्यय गारंटी निगम (ई सी जी सी) की योजनाओं के अंतर्गत गारंटी प्रावरण की प्रतिधारण योग्य अथवा वसूली योग्य राशि, यदि कोई हो, और वे दावे जिनकी गणना निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम के अंतर्गत की गई है, घटाने के बाद संदिग्ध आस्तियों के लिए खाता

PRINCIPAL ACCOUNTING POLICIES**1. General**

The accompanying financial statements are prepared on the historical cost basis and conform to the statutory provisions and practices prevailing in India in respect of Indian offices and in various foreign countries in respect of foreign offices.

2. Transactions involving foreign exchange

- 2.1 Items of income and expenditure in respect of foreign offices and assets and liabilities in foreign currencies are converted at the rate of exchange prevailing at the close of the year.
- 2.2 Profit or loss on pending forward contracts are accounted for.
- 2.3 On interest arbitrage currency swaps, the accrued income and expenditure are accounted for as interest income/expenditure.

3. Investments

- 3.1 Investments in Government and other approved securities are classified under 'Permanent' and 'Current' categories in terms of Reserve Bank of India (RBI) guidelines. (All such investments are in the 'Current Category' as on 31.3.1998).
- 3.2 Investments in Government and other approved securities classified as 'Permanent' are accounted for at cost (subject to amortisation detailed under paragraph 3.3 below) as these securities are intended to be held till maturity.
- 3.3 Where the cost price is higher than the face value (redemption value) of securities in the 'Permanent' category, the excess is amortised over the remaining period of maturity of the security. Where the cost price is less than the face value (redemption value), the difference is ignored.
- 3.4 Investments in Government and other approved securities classified as 'Current' and other authorised securities wherever market quotations are available are accounted for at lower of cost or market value as at the close of the year.
- 3.5 Investments in Government and other approved securities classified as 'Current' and other authorised securities where market quotations are not available are valued at cost or estimated realisable value (worked out as per RBI guidelines), whichever is less except in certain cases where RBI approval has been obtained for valuing at cost. Treasury Bills are valued at carrying cost as per RBI guidelines. Debentures where interest is not serviced for more than two quarters are being valued as per Income Recognition and Asset Classification norms for advances.
- 3.6 Investments in subsidiaries and joint ventures (both in India and abroad) are valued at historical cost after netting-off provisions, if any.
- 3.7 Investments in Regional Rural Banks (RRBs) are accounted for after netting off the provisions held on account of losses incurred by RRBs up to 31.3.1997 restricted to amount of SBI's investment.
- 3.8 Brokerage/commission received on subscriptions have been deducted from the cost of securities. Brokerage, commission, stamp duty paid in connection with acquisition of securities have been treated as revenue expenses.

4. Advances

Provisions on advances have been arrived at in accordance with RBI guidelines/directives as under:

4.1 Indian Offices

- 4.1.1 All advances are classified under four categories i.e. (a) Standard Assets, (b) Sub-standard Assets, (c) Doubtful Assets and (d) Loss Assets.
- 4.1.2 Provisions are arrived on all outstandings net of interest not realised on Non-Performing Assets (NPAs), as under :-
 - (a) Sub-standard Assets at 10% of the outstandings.
 - (b) Doubtful Assets at 20%/30%/50% of the secured portion based on the number of years the account remained as 'Doubtful Asset' (i.e. up to one year, one to three years and more than three years

जितने वर्षों तक संदिग्ध अस्तित्व के रूप में रहा, उतने वर्षों की संख्या (अर्थात् एक वर्ष, एक से तीन वर्ष और तीन वर्षों से अधिक) के आधार पर प्रतिभूत भाग के क्रमशः 20/30/50 प्रतिशत और बकाया राशियों के अप्रतिभूत भाग का शत-प्रतिशत.

(ग) हानिकर अस्तित्वों की बकाया राशियों का शत-प्रतिशत.

4.1.3 वर्ष के दौरान जो अग्रिम अलाभकारी अस्तित्वों हो गए, उन पर गत वर्ष के वसूल न किए गए ब्याज के लिए प्रावधान किया गया है.

4.2 विदेश स्थित कार्यालय

4.2.1 प्रावधान करने के लिए इन अग्रिमों का चार श्रेणियों में उसी प्रकार वर्गीकरण किया गया है जैसा भारत स्थित कार्यालयों के सम्बन्ध में किया गया है.

4.2.2 स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार या भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारत स्थित कार्यालयों के लिए निर्धारित मानदंडों के अनुसार, इनमें से जो भी अधिक हों, प्रावधान किए गए हैं.

4.3 अग्रिमों के संबंध में किए गए प्रावधान को तथा अलाभकारी अस्तित्वों पर वसूल न किए गए ब्याज को कुल अग्रिमों में से घटाया गया है.

5. अचल अस्तित्व

5.1 परिसर एवं अन्य अचल अस्तित्वों को अवधिगत लागत के आधार पर लेखे में लिया गया है.

5.2 मूल्य-ह्रास का प्रावधान ह्रासित मूल्य प्रणाली के अनुसार आयकर नियम, 1962 के अन्तर्गत निर्धारित दरों पर किया गया है. पट्टा-अस्तित्वों के सम्बन्ध में मूल्य-ह्रास का प्रावधान पूंजी वसूली प्रणाली के अनुसार किया गया है.

5.3 पट्टे पर दी गई अस्तित्वों का मूल्य और पट्टे पर दी जाने वाली अस्तित्वों पर अग्रिमों के रूप में संदत्त राशियों के क्रमशः "पट्टाकृत अस्तित्वों" और "प्रगति पर पूंजीगत कार्य" के रूप में अचल अस्तित्वों के अंतर्गत दर्शाया गया है. अलाभकारी अस्तित्वों पर प्रावधान, भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार अस्तित्वों के बही मूल्य पर अग्रिमों के लिए लागू आय निर्धारण और अस्तित्व वर्गीकरण मानदंड के अनुसार किए गए हैं.

5.4 पट्टे पर लिए गए परिसरों के संबंध में, पट्टे की संदत्त राशि को पट्टे की अवधि के अनुरूप परिशोधित किया गया है.

5.5 विदेश स्थित कार्यालयों में धारित अचल अस्तित्वों पर मूल्य-ह्रास स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार किया गया है.

6. राजस्व अभिज्ञान

6.1 भारतीय कार्यालय

निर्माकित मामलों को छोड़कर, आय एवं व्यय को उपचित आधार पर लेखे में लिया गया है :

6.1.1 भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार अलाभकारी अस्तित्वों पर ब्याज और पट्टे से आय का अभिज्ञान वसूली आधार पर किया जाता है.

6.1.2 भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार सरकारी गारंटी रहित प्रतिभूतियों पर पिछली दो तिमाहियों के लिए अतिदेय ब्याज का अभिज्ञान वसूली आधार पर किया गया है.

6.1.3 कमीशन (आस्थगित भुगतान गारंटी एवं सरकारी लेन-देन पर कमीशन के अतिरिक्त) विनियम एवं दलाली का अभिज्ञान वसूली आधार पर किया जाता है.

6.1.4 भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार अतिदेय बिलों पर ब्याज का अभिज्ञान वसूली आधार पर किया जाता है.

6.1.5 अवकाश नगदीकरण को भुगतान आधार पर लेखे में लिया जाता है.

6.2 विदेश स्थित कार्यालय

संबंधित देश के स्थानीय कानूनों के अनुसार आय का अभिज्ञान किया गया है.

7. स्टाफ हित-लाभ

स्टाफ की ग्रेजुटी के लिए वास्तविक मूल्यंकन पर, पेंशन हित-लाभ के लिए उपचय आधार पर, तथा बोनस के लिए सांविधिक अपेक्षाओं के आधार पर प्रावधान किए गए हैं. ग्रेजुटी/पेंशन के लिए पृथक् निधियाँ स्थापित की गई हैं.

8. निवल लाभ

निवल लाभ निम्नलिखित प्रकार से निकाला गया है :-

8.1 सांविधिक अपेक्षाओं के अनुरूप आयकर, संपत्ति कर, तथा ब्याज कर के प्रति प्रावधान करने के पश्चात्,

8.2 अग्रिमों के प्रति प्रावधान करने के पश्चात्,

8.3 निवेशों के मूल्यों को समयोजित करने के पश्चात्,

8.4 आकस्मिक निधियों में अंतरण करने के पश्चात्,

8.5 अन्य सामान्य एवं आवश्यक प्रावधान करने के पश्चात्.

9. आकस्मिक निधियों को तुलन पत्र में 'अन्य दायित्व और उपबंध' शीर्षक के अंतर्गत समूहित किया जाता है.

respectively) and at 100% of the unsecured portion of the outstandings after netting retainable or realisable amount of the guarantee cover under the scheme of Export Credit Guarantee Corporation (ECGC), if any, and claims which have been reckoned under Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation (DI & CGC).

(c) Loss Assets at 100% of the outstandings.

4.1.3 Unrealised Interest of the Previous Year on advances which became non-performing during the year is provided for.

4.2 Foreign Offices

4.2.1 The advances are classified under four categories in line with Indian Offices for arriving at the provisions.

4.2.2 Provisions are made as per the local requirements or as per Reserve Bank of India norms fixed for Indian Offices, whichever is higher.

4.3 Provisions in respect of advances and interest not realised on NPAs are deducted from total advances.

5. Fixed Assets

5.1 Premises and other fixed assets are accounted for on the historical cost basis.

5.2 Depreciation is provided for on written down value method at the rates prescribed under Income Tax Rules, 1962. In respect of leased assets, depreciation is provided for on capital recovery method.

5.3 The value of the assets given on lease and the amounts paid as advance for assets to be given on lease are disclosed as "Leased Assets" and "Capital Work-in-progress" respectively under fixed assets. Provisions on NPAs are made on the basis of IRAC norms applicable to advances on the book value of the assets, as per RBI guidelines.

5.4 In respect of lease hold premises, the lease amount paid is being amortised over the period of lease.

5.5 In respect of Fixed Assets held in foreign offices, depreciation is provided as per the local requirements.

6. Revenue Recognition

6.1 Indian Offices

Income and expenditure are accounted on accrual basis except in the following cases :

6.1.1 Interest and lease income on Non-Performing Assets is recognised on realisation basis as per RBI guidelines.

6.1.2 Interest which remains overdue for 2 quarters on securities not covered by Government guarantee is recognised on realisation basis as per RBI guidelines.

6.1.3 Commission (other than on Deferred Payment Guarantees and Government Transactions), exchange and brokerage are recognised on realisation basis.

6.1.4 Interest on overdue bills is recognised on realisation basis as per RBI guidelines.

6.1.5 Encashment of leave is accounted for on payment basis.

6.2 Foreign Offices

Income is recognised as per the local laws of the country.

7. Staff Benefits

Provisions for gratuity on an actuarial valuation, pension benefits to staff on accrual basis and bonus to staff as per statutory requirements have been made. Separate funds for gratuity/pension have been created.

8. Net Profit

The net profit is arrived at after:-

8.1 Provisions for income tax, wealth tax and interest tax in accordance with the statutory requirements,

8.2 Provisions on advances,

8.3 Adjustments to the value of investments,

8.4 Transfers to contingency funds,

8.5 Other usual and necessary provisions.

9. Contingency funds are grouped in the Balance Sheet under the head "Other Liabilities and Provisions".

भारतीय स्टेट बैंक का 31 मार्च 1998 की स्थिति के अनुसार तुलन-पत्र (000 को छोड़ दिया गया है)
 BALANCE SHEET OF THE STATE BANK OF INDIA AS ON 31ST MARCH 1998 (000s omitted)

पूंजी और दायित्व	अनुसूची	31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष)
CAPITAL AND LIABILITIES	Schedule	As on 31.3.98 (current year)	As on 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
पूंजी			
Capital	1	526,29,89	526,29,89
आरक्षितियां और अधिशेष			
Reserves & Surplus	2	9081,88,00	7450,87,14
जमा-राशियां			
Deposits	3	131091,32,44	110701,17,08
उधार			
Borrowings	4	8093,44,60	6960,52,87
अन्य दायित्व और उपबंध			
Other liabilities and provisions	5	30879,71,96	30834,30,73
	जोड़		
	TOTAL	179672,66,89	156473,17,71

आस्तियां	अनुसूची	31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष)
ASSETS	Schedule	As on 31.3.98 (current year)	As on 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
भारतीय रिज़र्व बैंक में नकदी और अतिशेष			
Cash and balances with Reserve Bank of India	6	13414,56,78	10847,17,90
बैंको में अतिशेष और मांग पर तथा अल्प सूचना पर प्राप्त धन			
Balance with banks and money at call and short notice	7	19231,25,39	16905,57,20
विनिधान			
Investments	8	54982,23,98	46827,55,82
अग्रिम			
Advances	9	74237,33,19	62233,19,97
स्थिर आस्तियां			
Fixed Assets	10	1506,32,05	1170,91,68
अन्य आस्तियां			
Other Assets	11	16300,95,50	18488,75,14
	जोड़		
	TOTAL	179672,66,89	156473,17,71
समाश्रित दायित्व			
Contingent liabilities	12	रु. Rs. 59953,84,15	रु. Rs. 42399,52,08
संग्रहण के लिए बिल			
Bills for collection		रु. Rs. 8646,15,03	रु. Rs. 13715,73,77

टिप्पणियाँ :

1. विदेशी मुद्रा लेनदेनों तथा वर्ष के अंत में उनके रूपान्तरण के संबंध में बैंक इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के लेखा मानक 11 के बजाय भारतीय विदेशी मुद्रा व्यापारी संघ/भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देश जो कि अनिवार्य हैं, का निरंतर पालन कर रहा है.
2. चूंकि बैंक का कर्मचारी अपनी सेवा की अवधि के दौरान अपने अनुपयोजित अवकाश का नकदीकरण करा सकता है, अतः उस सीमा तक चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा जारी लेखा मानक 15 लागू नहीं होता है तथा सेवा निवृत्ति के समय, संचित अवकाश के नकदीकरण की सुविधा लेनेवाले कर्मचारियों पर व्यय को भुगतान आधार पर लेखे में लिया जाता है.
3. दिनांक 31 मार्च 1998 को समाप्त वर्ष के लिए बैंक का पूंजी पर्याप्तता अनुपात 14.58% रहा (31 मार्च 1997 के लिए 12.17% था). इस अनुपात का परिकलन भारि.बैं. द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के आधार पर किया गया है.
4. दिनांक 31 मार्च 1998 को निवल अलाभकारी आस्तियाँ, निवल अग्रिमों का 6.07% है (31 मार्च 1997 के लिए 7.30%).
5. लाभ एवं हानि खाते के शीर्ष 'व्यय' के अन्तर्गत सम्मिलित "उपबंध और आकस्मिक व्यय" मद का विवरण :

	(रु. हजार में)	(रु. हजार में)
	1997-98	1996-97
क) आयकर के प्रति प्रावधान	1001,00,00	925,00,00
ख) अन्य करों के प्रति प्रावधान	126,85,00	204,60,00
ग) अलाभकारी आस्तियों के प्रति किए गए प्रावधान की राशि (इसमें वर्ष के दौरान निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम की लघु ऋण गारंटी योजना से बैंक के अलग होने के निर्णय का प्रभाव भी सम्मिलित है)	1151,42,38	833,30,47
घ) भारत में (ऋणों एवं अग्रिमों) की कुल मानक आस्तियों पर भारती रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अलावा 0.25% की दर से विवेकपूर्ण प्रावधान	149,00,00	
ङ) भारत में किए गए निवेशों के मूल्य में मूल्य-ह्रास (ऋण)	964,12,71	1,61,83
च) विदेशी स्थित कार्यालयों के निवेशों के मूल्य में मूल्य-ह्रास	13,55,00	2,24,91
छ) अन्य योग	166,06,73	81,60,69
	1643,76,40	2048,37,90

6. वर्ष 1993-94 के दौरान, बैंक ने अपनी श्रेणी - II पूंजी को बढ़ाने के लिए कुल 1000,00,00 हजार रुपये की राशि के अप्रतिभूत, प्रतिदेय, गौण, अस्थिर ब्याज दर पर प्रत्येक बाण्ड 1000 रुपये के अंकित मूल्य वाले (एस.बी.आई.बाण्ड) बाण्ड, नकद सममूल्य पर पब्लिक को जारी किए. 31 मार्च 1998 को शेष बचे हुए बाण्डों का अंकित मूल्य रु. 987,35,02 हजार है (31 मार्च 1997 को रु. 992,06,12 हजार था).
7. भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार अतिरिक्त प्रकटीकरण:

	1997-98 (रुपये हजार में)
पूँजी पर्याप्तता अनुपात - श्रेणी I पूँजी	10.69%
पूँजी पर्याप्तता अनुपात - श्रेणी II पूँजी	3.89%
कार्यशील निधियों की तुलना में प्रतिशत के रूप में ब्याज आय	8.86%
कार्यशील निधियों की तुलना में प्रतिशत के रूप में ब्याजोत्तर आय	1.57%
कार्यशील निधियों की तुलना में प्रतिशत के रूप में प्रचालन लाभ	1.96%
आस्तियों पर आय	1.04%
प्रति कर्मचारी व्यवसाय (जमा एवं अग्रिम)	रुपये 7544
प्रति कर्मचारी लाभ	रुपये 77

8. क) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनिर्दिष्ट न्यूनतम 60% की तुलना में बैंक ने 31 मार्च 1998 को अनुमोदित प्रतिभूतियों में अपने निवेश का 100% (31 मार्च 1997 को 70.9%) बाजार के लिए चिह्नित किया है. परिणामी मूल्य ह्रास को निवेशों में मूल्य ह्रास के लिए वर्ष की समाप्ति पर अतिरिक्त प्रावधान में आभेसित कर लिया गया है.
- ख) वित्तीय वर्ष 1996/97 की समाप्ति पर बैंक द्वारा धरित निवेशों में मूल्य ह्रास हेतु आवश्यक से अधिक किए गए प्रावधान की 964,12,71 हजार रुपये की राशि को 31 मार्च 1998 को "व्यय - उपबंध और आकस्मिक व्यय" शीर्ष के अंतर्गत लाभ और हानि खाते में क्रेडिट की एक मद के रूप में लिया गया है और पूँजी आरक्षिती खाते में 119,06,96 हजार रुपये, कर कटौती हेतु (रु.337,44,45 हजार) और सांविधिक आरक्षितियों में (रु.507,61,30 हजार) की राशि विनियोजित की गई है.
9. विभिन्न अंतर कार्यालय लेखों का समाधान/समायोजन विभिन्न चरणों में है. खातों के समाधान का प्रभाव इस स्तर पर सुनिश्चित करने योग्य नहीं है.
10. पिछले वर्ष के आंकड़े जहाँ कहीं आवश्यक है, चालू वर्ष के वर्गीकरण के अनुरूप पुनर्समूहित किए गए हैं.

NOTES :

1. In respect of Foreign Exchange transactions and their year end translation, the Bank is consistently following FEDAI/RBI guidelines, which are mandatory, instead of the Accounting Standard 11 of the Institute of Chartered Accountants of India.
2. Since employees of the Bank can encash unavailed leave during the period of service, the Accounting Standard 15 issued by the Institute of Chartered Accountants of India does not apply to that extent, and the expenses on employees likely to avail encashment of accumulated leave, if any, at the time of retirement are accounted for on payment basis.
3. The Capital Adequacy Ratio of the Bank is 14.58% as at 31st March, 1998 (12.17% for 31st March, 1997). The ratio has been arrived at on the basis of guidelines/directives issued by the RBI.
4. Net NPAs to Net Advances as at 31st March, 1998 is 6.07%. (7.30% for 31st March 1997).
5. Break up of the item Provisions and Contingencies included under the head Expenditure of Profit and Loss Account:

	(Rs. in Thousand)	(Rs. in Thousand)
	1997-98	1996-97
a) Provision towards Income Tax	1001,00,00	925,00,00
b) Provision towards other taxes	126,85,00	204,60,00
c) Amount of provision made towards NPAs (This includes impact of the Bank's decision to exit from DI&CGC Small Loans Guarantee Schemes during the year)	1151,42,38	833,30,47
d) Prudential provision against total Standard Assets (Loans and Advances) in India @ 0.25% over and above the RBI guidelines	149,00,00	
e) Depreciation in the value of Investment in India (Credit)	964,12,71	1,61,83
f) Depreciation in the value of Investment in Foreign Offices	13,55,00	2,24,91
g) Others	166,06,73	81,60,69
Total	1643,76,40	2048,37,90

6. During 1993-94, the Bank issued to the public unsecured, redeemable, subordinated floating interest rate bonds (SBI Bonds) of the face value of Rs. 1,000/- each for cash at par for an aggregate amount of Rs. 1000,00,00 thousand to augment its Tier II capital. The face value of Bonds outstanding as at 31st March, 1998 is Rs. 987,35,02 thousand (Rs. 992,06,12 thousand for 31st March 1997).
7. Additional disclosures in terms of RBI Guidelines :

	1997-98 (Rs. in Thousand)
Capital Adequacy Ratio - Tier I Capital	10.69%
Capital Adequacy Ratio - Tier II Capital	3.89%
Interest Income as a percentage to Working Funds	8.86%
Non-interest income as a percentage to Working Funds	1.57%
Operating Profit as a percentage to Working Funds	1.96%
Return on Assets	1.04%
Business (Deposits and Advances) per employee	Rs. 7544
Profit per employee	Rs. 77

8. (a) The Bank has marked to market 100% of its investments in approved securities as at 31st March, 1998 (70.9% as at 31st March, 1997), as against minimum of 60% prescribed by RBI. Consequential depreciation has been absorbed in the year-end excess provision for depreciation in investments.
- (b) The excess provision for depreciation in investments held by the Bank as at the end of the financial year 1996-97 over the requirement for the same as at 31st March, 1998 amounting to Rs. 964,12,71 thousand has been taken to the Profit & Loss Account as a credit item under the head "Expenditure-Provisions & Contingencies" and appropriated to Capital Reserve Account to the extent of Rs. 119,06,96 thousand net of taxes (Rs. 337,44,45 thousand) and statutory reserves (Rs. 507,61,30 thousand).
9. Reconciliation/adjustment of various Inter-Office Accounts is at different stages. The impact of reconciliation on the accounts, if any, is not ascertainable at this stage.
10. Previous year's figures have been regrouped, wherever necessary, to conform to current year's classification.

अनुसूची 1 — पूंजी
SCHEDULE 1 — CAPITAL

(000 को छोड़ दिया गया है)

(000s omitted)

	31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
	रु Rs.	रु Rs.
<p>प्राधिकृत पूंजी — 10/- रुपये प्रति शेयर वाले 100,00,00,000 शेयर Authorised Capital — 100,00,00,000 shares of Rs. 10/- each</p>	1000,00,00	1000,00,00
<p>निर्गमित, अभिदत्त और संदत्त पूंजी — 52,62,98,878 शेयर — प्रत्येक शेयर 10/- रु का (इसमें 1996-97 में जारी 2,61,45,000 भूमंडलीय जमा रसीदों द्वारा प्रतिनिधित्व प्राप्त 5,22,90,000 शेयर सम्मिलित हैं.) Issued, Subscribed and Paid-up Capital — 52,62,98,878 shares of Rs. 10/- each (includes 5,22,90,000 shares represented by 2,61,45,000 Global Depository Receipts issued in 1996-97.)</p>	526,29,89	526,29,89
<p>(पिछले वर्ष 10/- रुपये प्रति शेयर वाले 52,62,98,878 शेयर) (Previous year 52,62,98,878 shares of Rs. 10/- each)</p>		
जोड़ TOTAL	526,29,89	526,29,89

अनुसूची 2 — आरक्षितियां और अधिशेष

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 2 — RESERVES & SURPLUS

(000s omitted)

				31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
				रु Rs.	रु Rs.
I.	कानूनी आरक्षितियां				
	Statutory Reserves				
	अधिशेष				
	Opening Balance	2810,90,66	1681,09,56
	वर्ष के दौरान परिवर्धन		
	Additions during the year	1510,55,53	1129,81,10
	वर्ष के दौरान कटौतियां		
	Deductions during the year
				4321,46,19	2810,90,66
II.	पूंजी आरक्षितियां				
	Capital Reserves				
	अधिशेष				
	Opening Balance	51,71,24	48,21,70
	वर्ष के दौरान परिवर्धन		
	Additions during the year	120,45,38	3,49,54
	वर्ष के दौरान कटौतियां		
	Deductions during the year
				172,16,62	51,71,24
III.	शेयर प्रीमियम				
	Share Premium				
	अधिशेष				
	Opening Balance	3510,57,33	2249,17,02
	वर्ष के दौरान परिवर्धन		
	Additions during the year	1261,40,87
	वर्ष के दौरान कटौतियां		
	Deductions during the year	56
				3510,57,33	3510,57,33
*IV.	राजस्व और अन्य आरक्षितियां				
	Revenue and Other Reserves				
	अधिशेष				
	Opening Balance	1077,35,25	1010,13,25
	परिवर्धन : आकस्मिकताओं से अन्तरण (अनुसूची-5)		
	Additions : Transfer from contingencies... (Schedule-5)	67,22,00
	वर्ष के दौरान कटौतियां		
	Deductions during the year
				1077,35,25	1077,35,25
V.	लाभ और हानि खाते का अधिशेष				
	Balance in Profit and Loss Account	32,61	32,66
*	इसमें (भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 की धारा 36 के अन्तर्गत रखी गई) एकीकरण और विकास निधि के 5,00,00,000 रु. शामिल हैं.				
*	Includes Rs. 5,00,00,000 of Integration and Development Fund (maintained under section 36 of the State Bank of India Act, 1955)				
जोड़					
TOTAL				9081,88,00	7450,87,14
(I, II, III, IV, और and V)					

अनुसूची 3 — निक्षेप
SCHEDULE 3 — DEPOSITS

(000 को छोड़ दिया गया है)
 (000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु Rs.	रु Rs.
क. I.	मांग निक्षेप					
A. I.	Demand Deposits					
	(i) बैंकों से					
	From banks	4400,38,98	3973,31,35
	(ii) अन्य से					
	From others	23413,26,03	21673,14,85
II.	बचत बैंक निक्षेप					
	Savings Bank Deposits	29207,84,53	24028,12,95
III.	सावधि निक्षेप					
	Term Deposits					
	(i) बैंकों से					
	From banks	3470,18,45	2578,03,04
	(ii) अन्य से					
	From others	70599,64,45	58448,54,89
	जोड़ TOTAL (I, II, और and III)				131091,32,44	110701,17,08
ख. i)	भारत में शाखाओं के निक्षेप					
B.	Deposits of branches in India	123548,74,29	103767,34,17
	ii) भारत के बाहर शाखाओं के निक्षेप					
	Deposits of branches outside India	7542,58,15	6933,82,91
	जोड़ TOTAL				131091,32,44	110701,17,08

अनुसूची 4 — उधार
SCHEDULE 4 — BORROWINGS

(000 को छोड़ दिया गया है)
 (000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु Rs.	रु Rs.
I.	भारत में उधार					
	Borrowings in India					
	(i) भारतीय रिज़र्व बैंक					
	Reserve Bank of India	6,34
	(ii) अन्य बैंक					
	Other banks	79,80	1,17
	(iii) अन्य संस्थाएं और अधिकरण					
	Other institutions and agencies	836,77,47	883,36,99
II.	भारत के बाहर से उधार					
	Borrowings outside India	7255,87,33	6077,08,37
	जोड़ TOTAL (I और and II)				8093,44,60	6960,52,87
ऊपर I और II में सम्मिलित प्रतिभूत उधार Secured borrowings included in I & II above					रु Rs. 912,12,62	रु Rs. 1042,26,64

अनुसूची 5 — अन्य दायित्व और उपबंध

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 5 — OTHER LIABILITIES & PROVISIONS

(000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु Rs.	रु Rs.
I.	संदेय बिल					
	Bills payable	8754,94,21	8403,53,08
II.	अंतर-कार्यालय समायोजन (शुद्ध)					
	Inter-office adjustments (net)
III.	प्रोद्भूत ब्याज					
	Interest accrued	7619,87,81	7337,68,05
IV.	10 वर्षीय अप्रतिभूत, प्रतिदेय बांड (द्वितीय चरण की पूंजी के लिए अधीनस्थ)					
	10 years Unsecured Redeemable Bonds (Subordinated for Tier II Capital)	987,35,02	992,06,12
V.	अन्य (इसमें उपबंध सम्मिलित हैं)					
	Others (including provisions)	13517,54,92	14101,03,48
जोड़						
TOTAL					30879,71,96	30834,30,73

Report Junction.com

अनुसूची 6 — भारतीय रिज़र्व बैंक में नकदी और अतिशेष

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 6 — CASH AND BALANCES WITH RESERVE BANK OF INDIA

(000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु Rs.	रु Rs.
I.	हाथ नकदी (इसमें विदेशी करेंसी नोट सम्मिलित हैं)					
	Cash in hand (including foreign currency notes)	508,14,81	493,24,99
II.	भारतीय रिज़र्व बैंक में अतिशेष					
	Balances with Reserve Bank of India					
(i)	चालू खाते में					
	In Current Account	12906,41,97	10353,92,91
(ii)	अन्य खातों में					
	In Other Accounts
जोड़						
TOTAL (I और II)					13414,56,78	10847,17,90

अनुसूची 7 — बैंकों में अतिशेष और मांग पर तथा अल्प सूचना पर प्राप्य धन (000 को छोड़ दिया गया है)
 SCHEDULE 7 — BALANCES WITH BANKS & MONEY AT CALL & SHORT NOTICE (000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु. Rs.	रु. Rs.
I. भारत में						
In India						
(i) बैंकों में अतिशेष						
Balances with banks						
(क) चालू खाते में						
(a)	In Current Account	93,86,19	80,52,20
(ख) अन्य जमा खातों में						
(b)	In Other Deposit Accounts	1010,57,40	532,25,77
(ii) मांग पर और अल्प सूचना पर प्राप्य धन						
Money at call and short notice						
(क) बैंकों के पास						
(a)	With banks	821,00,00	1805,00,00
(ख) अन्य संस्थाओं में						
(b)	With other institutions
जोड़						
TOTAL					1925,43,59	2417,77,97
II. भारत के बाहर						
Outside India						
(i) चालू खाते में						
	In Current Account	460,30,63	332,95,86
(ii) अन्य जमा खातों में						
	In Other Deposit Accounts	1215,57,32	1162,38,57
(iii) मांग पर और अल्प सूचना पर प्राप्य धन						
Money at call and short notice					15629,93,85	12992,44,80
जोड़						
TOTAL					17305,81,80	14487,79,23
कुल जोड़						
GRAND TOTAL (I और II)					19231,25,39	16905,57,20

अनुसूची 8 — विनिधान

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 8 — INVESTMENTS

(000s omitted)

					31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
					रु Rs.	रु Rs.
I.	भारत में विनिधान					
	Investments in India in					
	(i)	सरकारी प्रतिभूतियाँ				
		Government Securities			39024,51,30	33973,08,98
	(ii)	अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियाँ				
		Other approved securities			7157,97,06,	7471,60,98
	(iii)	शेयर				
		Shares			693,82,53,	448,44,70
	(iv)	डिबेंचर और बंध पत्र				
		Debentures and Bonds			4132,,31,14	2923,39,83
	(v)	समनुषंगी और/अथवा सह-उद्यम				
		Subsidiaries and/or joint ventures			987,01,38	873,80,09
	(vi)	अन्य (यूनिट आदि)				
		Others (Units, etc.)			765,14,67	22,08,00
			जोड़			
			TOTAL		52760,78,08	45712,42,58
II.	भारत के बाहर विनिधान					
	Investments outside India in					
	(i)	सरकारी प्रतिभूतियों में (इसमें स्थानीय प्राधिकरण सम्मिलित हैं)				
		Government securities (including local authorities)			152,76,22	86,66,43
	(ii)	विदेशों में समनुषंगी और/अथवा सह उद्यम				
		Subsidiaries and/or joint ventures abroad			437,39,79	325,04,20
	(iii)	अन्य विनिधान (शेयर, डिबेंचर आदि)				
		Other investments (Shares, Debentures, etc.)			1631,29,89	703,42,61
			जोड़			
			TOTAL		2221,45,90	1115,13,24
			कुल जोड़			
			GRAND TOTAL		54982,23,98	46827,55,82
			(I और II)			
III.	भारत में विनिधान					
	Investments in India					
	(i)	विनिधानों का सकल मान				
		Gross Value of Investments			54097,90,62	47966,19,03
	(ii)	मूल्यहास के लिए किए गए कुल प्रावधान				
		Aggregate of Provisions for Depreciation...			1337,12,54	2253,76,45
	(iii)	निवल विनिधान (ऊपर I से)				
		Net Investments (vide I above)			52760,78,08	45712,42,58
			जोड़			
			TOTAL		52760,78,08	45712,42,58
IV.	भारत के बाहर निविधान					
	Investments outside India					
	(i)	विनिधानों का सकल मान				
		Gross Value of Investments			2231,88,19	1115,59,08
	(ii)	मूल्यहास के लिए किए गए कुल प्रावधान				
		Aggregate of Provisions for Depreciation			10,42,29	45,84
	(iii)	निवल विनिधान (ऊपर II से)				
		Net Investments (vide II above)			2221,45,90	1115,13,24
			जोड़			
			TOTAL		2221,45,90	1115,13,24
			कुल जोड़			
			GRAND TOTAL		54982,23,98	46827,55,82
			(III और IV)			

अनुसूची 9 — अग्रिम
SCHEDULE 9 — ADVANCES

(000 को छोड़ दिया गया है)

(000s omitted)

				31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
				रु Rs.	रु Rs.
क. (i)	क्रय किए गए और मितिकाटे पर भुगतान किए गए विनिमय पत्र				
A.	Bills purchased and discounted	7933,47,49	6656,41,28
(ii)	कैश क्रेडिट, ओवर ड्राफ्ट और मांग पर प्रति-संदेय उधार				
	Cash credits, overdrafts and loans repayable on demand			43553,46,19	38472,10,97
(iii)	सावधि उधार				
	Term loans	22750,39,51	17104,67,72
जोड़ TOTAL				74237,33,19	62233,19,97
ख. (i)	मूर्त आस्तियों द्वारा प्रतिभूत				
B.	Secured by tangible assets	62786,68,33	53277,17,52
(ii)	बैंक/सरकारी प्रत्याभूतियों द्वारा संरक्षित				
	Covered by Bank/Government Guarantees	...		9097,37,44	7805,55,51
(iii)	अप्रतिभूत				
	Unsecured	2353,27,42	1150,46,94
जोड़ TOTAL				74237,33,19	62233,19,97
ग. (I)	भारत में अग्रिम				
C. (I)	Advances in India				
(i)	पूर्विकता सेक्टर				
	Priority Sector	19522,81,96	16945,75,94
(ii)	पब्लिक सेक्टर				
	Public Sector	12088,19,49	10064,07,51
(iii)	बैंक				
	Banks	785,36,36	225,02,73
(iv)	अन्य				
	Others	31744,11,91	27788,15,19
जोड़ TOTAL				64140,49,72	55023,01,37
(II)	भारत के बाहर अग्रिम				
(II)	Advances Outside India				
(i)	बैंकों से शोध				
	Due from banks	86,81,87	44,80,40
(ii)	अन्यों से शोध				
	Due from others				
(क)	क्रय किए गए और मितिकाटे पर भुगतान किए गए विनिमयपत्र				
(a)	Bills purchased and discounted	2463,68,66	1752,08,92
(ख)	अभिषद उधार				
(b)	Syndicated loans	1972,78,86	1143,80,52
(ग)	अन्य				
(c)	Others	5573,54,08	4269,48,76
जोड़ TOTAL				10096,83,47	7210,18,60
कुल जोड़ GRAND TOTAL (ग C I और ग C II)				74237,33,19	62233,19,97

अनुसूची 10 — स्थिर आस्तियां
SCHEDULE 10 — FIXED ASSETS

(000 को छोड़ दिया गया है)
(000s omitted)

				31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
				रु Rs.	रु Rs.
I.	परिसर Premises				
	पूर्ववर्ती वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार लागत पर At cost as on 31st March of the preceding year	549,68,37	494,40,53
	* वर्ष के दौरान परिवर्धन * Additions during the year	110,80,44	55,40,86
	वर्ष के दौरान कटौतियां Deductions during the year	6,86,36	13,02
	अद्यतन अवक्षयण Depreciation to date	161,33,01	138,30,86
				492,29,44	411,37,51
I.	क. निर्माणाधीन परिसर A. Premises under Construction	101,28,12	182,49,79
II.	अन्य स्थिर आस्तियां (इसमें फर्नीचर और फिक्सचर सम्मिलित हैं) Other Fixed Assets (including furniture and fixtures)		
	पूर्ववर्ती वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार लागत पर At cost as on 31st March of the preceding year	951,03,22	745,20,62
	* वर्ष के दौरान परिवर्धन * Additions during the year	267,39,80	217,23,56
	वर्ष के दौरान कटौतियां Deductions during the year	18,84,29	11,40,96
	अद्यतन अवक्षयण Depreciation to date	659,14,87	544,67,69
				540,43,86	406,35,53
III.	(क/अ) पट्टाकृत आस्तियां Leased Assets		
	पूर्ववर्ती वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार लागत पर At cost as on 31st March of the preceding year	151,17,61	25,00,00
	वर्ष के दौरान परिवर्धन Additions during the year	138,56,78	126,17,61
	वर्ष के दौरान उपबंध सहित कटौतियां Deductions during the year including provisions	41,56	...
	अद्यतन अवक्षयण Depreciation to date	20,81,68	2,90,41
				268,51,15	148,27,20
III.	(ख/ब) प्रगति पर पूंजीगत कार्य (पट्टाकृत आस्तियां) उपबंध को घटाकर Capital works-in-progress (Leased Assets) net of Provisions...	103,79,48	22,41,65
				372,30,63	170,68,85
	जोड़ Total			1506,32,05	1170,91,68
	(I से to III)				

* विदेश स्थित शाखाओं से संबंधित आँकड़ों के 31 मार्च की विनिमय दर पर परिवर्तन का समायोजन सम्मिलित है।

* Including adjustment on account of conversion of figures relating to foreign branches at the rate of exchange as at 31st March.

अनुसूची 11 — अन्य आस्तियां
SCHEDULE 11 — OTHER ASSETS

(000 को छोड़ दिया गया है)
 (000s omitted)

		31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
(i) अंतर-कार्यालय समायोजन (शुद्ध) Inter-office adjustments (net)	...	2924,35,38	4258,82,39
(ii) प्रोद्भूत ब्याज Interest accrued	...	3005,47,87	2474,13,58
(iii) अग्रिम रूप से संदत्त कर/स्रोत पर काटा गया कर Tax paid in advance/tax deducted at source	...	1647,34,12	2417,13,56
(iv) लेखन सामग्री और स्टाम्प Stationery and stamps	...	72,54,21	66,19,98
(v) दावों की संतुष्टि में प्राप्त की गई गैर-बैंककारी आस्तियां Non-banking assets acquired in satisfaction of claims	...	22,09	1,63,76
(vi) अन्य Others	...	8651,01,83	9270,81,87
जोड़ TOTAL		16300,95,50	18488,75,14

अनुसूची 12 — समाश्रित दायित्व
SCHEDULE 12 — CONTINGENT LIABILITIES

(000 को छोड़ दिया गया है)
 (000s omitted)

		31.3.98 की स्थिति के अनुसार (चालू वर्ष) As on 31.3.98 (current year)	31.3.97 की स्थिति के अनुसार (पिछला वर्ष) As on 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
I. बैंक के विरुद्ध दावे जिन्हें ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है Claims against the bank not acknowledged as debts...	...	247,18,50	208,60,56
II. अंशतः संदत्त विनिधानों के लिए दायित्व Liability for partly paid investments	...	7,84,99	15,38,96
III. बकाया वायदा विनिमय संविदाओं की बाबत दायित्व Liability on account of outstanding forward exchange contracts	...	32004,86,85	14138,38,20
IV. संघटकों की ओर से दी गई प्रत्याभूतियां Guarantees given on behalf of constituents	...		
(क) भारत में (a) In India	...	9283,26,34	10736,32,46
(ख) भारत के बाहर (b) Outside India	...	5210,54,56	2704,84,39
V. प्रतिग्रहण, पृष्ठांकन और अन्य बाध्यताएं Acceptances, endorsements and other obligations	...	10830,11,81	11742,23,11
VI. अन्य मदें जिनके लिए बैंक समाश्रित रूप से उत्तरदायी है Other items for which the bank is contingently liable	...	2370,01,10	2853,74,40
जोड़ TOTAL		59953,84,15	42399,52,08

31 मार्च 1998 को समाप्त वर्ष के लिए लाभ और हानि खाता

(000 को छोड़ दिया गया है)

PROFIT AND LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 1998

(000s omitted)

अनुसूची संख्या				31.3.98 को समाप्त वर्ष (चालू वर्ष)	31.3.97 को समाप्त वर्ष (पिछला वर्ष)
Schedule No.				Year ended 31.3.98 (current year)	Year ended 31.3.97 (previous year)
				रु Rs.	रु Rs.
I. आय					
INCOME					
अर्जित ब्याज					
Interest earned	13	15878,88,74	14950,65,51
अन्य आय					
Other Income	14	2820,16,87	2643,07,00
जोड़					
TOTAL				18699,05,61	17593,72,51
II. व्यय					
EXPENDITURE					
व्यय किया गया ब्याज					
Interest expended	15	10473,20,50	9591,42,85
प्रचालन व्यय					
Operating expenses	16	4720,89,12	4604,66,98
उपबंध और आकस्मिक व्यय					
Provisions and contingencies	1643,76,40	*2048,37,90
जोड़					
TOTAL				16837,86,02	16244,47,73
III. लाभ					
PROFIT					
वर्ष के शुद्ध लाभ					
Net Profit for the year	1861,19,59	*1349,24,78
अग्रणीत लाभ					
Profit brought forward	32,66	29,07
जोड़					
TOTAL				1861,52,25	1349,53,85
विनियोजन					
APPROPRIATIONS					
कानूनी आरक्षितियों को अन्तरण					
Transfer to statutory reserves	1510,55,53	1129,81,10
अन्य आरक्षितियों को अन्तरण					
Transfer to other reserves	119,06,96	...
प्रस्तावित लाभांशों को अन्तरण					
Transfer to proposed dividend	210,51,95	199,45,54
लाभांश पर कर का अन्तरण					
Transfer to Tax on dividend	21,05,20	19,94,55
अतिशेष जो आगे तुलन-पत्र में ले जाया गया है					
Balance carried over to Balance Sheet	32,61	32,66
जोड़					
TOTAL				1861,52,25	1349,53,85

* पिछले वर्ष उपबंध और आकस्मिक व्यय में 19,94,55 रुपये के लाभांश पर कर सम्मिलित था, जिसे विनियोजन के रूप में पुनर्समूहित किया गया है। इस प्रकार पिछले वर्ष 1329,30,23 रुपये का प्रकाशित लाभ परिवर्तित होकर 1349,24,78 रुपये हो गया।

* In the previous year, Provisions & contingencies were inclusive of Tax on Dividend of Rs. 19,94,55 which has been regrouped as an appropriation. Hence, the previous year's published profit of Rs. 1329,30,23 has changed to Rs. 1349,24,78

अनुसूची 13 — अर्जित ब्याज

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 13 — INTEREST EARNED

(000s omitted)

		31.3.98 को समाप्त वर्ष (चालू वर्ष) Year ended 31.3.98 (current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष (पिछला वर्ष) Year ended 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
I. अग्रिमों/विनिमय पत्रों पर ब्याज/मितीकाटा	...	7829,11,66	8137,47,04
Interest/discount on advances/bills	...		
II. विनिधानों पर आय	...	6391,61,75	5521,50,71
Income on investments	...		
III. भारतीय रिज़र्व बैंक के अतिशेषों और अन्य अन्तर-बैंक निधियों पर ब्याज	...	631,54,95	721,79,63
Interest on balances with Reserve Bank of India	...		
and other inter-bank funds	...		
IV. अन्य	...	1026,60,38	569,88,13
Others	...		
जोड़ TOTAL		15878,88,74	14950,65,51

अनुसूची 14 — अन्य आय

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 14 — OTHER INCOME

(000s omitted)

		31.3.98 को समाप्त वर्ष (चालू वर्ष) Year ended 31.3.98 (current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष (पिछला वर्ष) Year ended 31.3.97 (previous year)
		रु Rs.	रु Rs.
(I) कमीशन, विनिमय और दलाली	...	2037,76,53	1804,85,19
Commission, exchange and brokerage	...		
(II) विनिधानों के विक्रय पर लाभ (कुल)	...	115,57,34	25,86,43
Profit on sale of investments (Net)	...		
घटाइए : विनिधानों के विक्रय पर हानि	...		
Less : Loss on sale of investments	...		
(III) विनिधानों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ	...		
Profit on revaluation of investments	...		
घटाइए : विनिधानों के पुनर्मूल्यांकन पर हानि	...		
Less : Loss on revaluation of investments	...		
(IV) भूमि, भवनों और अन्य आस्तियों के विक्रय पर लाभ (कुल)	...	1,07,06	34,58
Profit on sale of land, buildings and other assets (Net)	...		
पट्टाकृत आस्तियों के विक्रय पर लाभ	...		
Profit on sale of leased assets	...		
घटाइए : भूमि, भवनों और अन्य आस्तियों के विक्रय पर हानि	...		
Less : Loss on sale of land, buildings and other assets...	...		
घटाए : पट्टाकृत आस्तियों के विक्रय पर हानि	...		
Less : Loss on Sale of leased assets	...		
(V) विनिमय संव्यवहारों पर लाभ (कुल)	...	505,49,90	699,10,18
Profit on exchange transactions (Net)	...		
घटाइए : विनिमय संव्यवहारों पर हानि	...		
Less : Loss on exchange transactions	...		
(VI) विदेश/भारत में स्थापित समनुषंगियों/कंपनियों और/या सह-उद्यमों से	...	50,11,34	40,06,31
लाभांशों आदि के रूप में अर्जित आय	...		
Income earned by way of dividends, etc., from subsidiaries/	...		
companies and/or joint ventures abroad/in India	...		
(VII) पट्टा आय Lease income	...	2,74,24	2,35,25
(क/अ) पट्टा प्रबंध शुल्क Lease management fee	...	34,16,91	8,98,75
(ख/ब) पट्टा किराया Lease rental	...	9,96,43	7,67,03
(ग/स) पट्टा वित्तपोषण प्रभार Lease finance charges	...	16,55	7,48
(घ/द) अतिदेय प्रभार Overdue charges	...		
(VIII) प्रकीर्ण आय	...	63,10,57	53,75,80
Miscellaneous income	...		
जोड़ TOTAL		2820,16,87	2643,07,00

नोट : मद II से V के अंतर्गत घाटे के आंकड़े कोष्ठकों में दिखाए गए हैं

Note : Under items II to V loss figures shown in brackets.

अनुसूची 15 — व्यय किया गया ब्याज

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 15 — INTEREST EXPENDED

(000s omitted)

	31.3.98 को समाप्त वर्ष (चालू वर्ष) Year ended 31.3.98 (current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष (पिछला वर्ष) Year ended 31.3.97 (previous year)
	रु Rs.	रु Rs.
I. निक्षेपों पर ब्याज Interest on deposits	9586,24,30	8300,81,50
II. भारतीय रिज़र्व बैंक/अंतर-बैंक उधारों पर ब्याज Interest on Reserve Bank of India/Inter-bank borrowings ...	481,23,74	481,63,38
III. अन्य Others	405,72,46	808,97,97
जोड़ TOTAL	10473,20,50	9591,42,85

अनुसूची 16 — प्रचालन व्यय

(000 को छोड़ दिया गया है)

SCHEDULE 16 — OPERATING EXPENSES

(000s omitted)

	31.3.98 को समाप्त वर्ष (चालू वर्ष) Year ended 31.3.98 (current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष (पिछला वर्ष) Year ended 31.3.97 (previous year)
	रु Rs.	रु Rs.
I. कर्मचारियों को भुगतान और उनके लिए व्यवस्था Payments to and provisions for employees	3557,74,60	3322,93,05
II. भाटक, कर और रोशनी Rent, taxes and lighting	344,82,15	303,07,92
III. मुद्रण और लेखन-सामग्री Printing and stationery	84,58,44	75,45,73
IV. विज्ञापन और प्रचार Advertisement and publicity	15,02,17	11,72,18
V. (क) बैंक की सम्पत्ति पर अवक्षयण (पट्टाकृत आस्तियों के अतिरिक्त) (a) Depreciation on bank's property (other than leased assets)	146,15,69	94,42,85
(ख) पट्टाकृत आस्तियों पर अवक्षयण (b) Depreciation on Leased Assets	17,91,27	2,90,01
VI. निदेशकों की फीस, भत्ते और व्यय Directors' fees, allowances and expenses	67,49	61,68
VII. लेखा परीक्षकों की फीस और व्यय (इसमें शाखा लेखा-परीक्षकों की फीस और व्यय शामिल है) Auditors' fees and expenses (including branch auditors' fees and expenses)	16,75,92	13,83,93
VIII. विधि प्रभार Law charges	11,68,02	16,25,31
IX. डाक महसूल, तार और टेलीफोन आदि Postages, Telegrams, Telephones, etc.	61,96,79	54,53,43
X. मरम्मत और अनुरक्षण Repairs and maintenance	41,27,06	37,38,31
XI. बीमा Insurance	60,14,79	265,58,36
XII. अन्य व्यय Other expenditure	362,14,73	405,94,22
जोड़ TOTAL	4720,89,12	4604,66,98

हस्ताक्षरकर्ता:

परमाल सिंह मान

एस. रमणी

यावर रशीद

आई. जी. पटेल

वी. बी. कौजलगी

रजत कुमार चक्रवर्ती

अजय जी. पीरामल

आर. एस. लोढ़ा

के. पूर्णचंद्र राव

शशिकांत बी. गरवारे

सी. एम. वासुदेव

अनिला आर. धोलकिया

रोद्धम प्रभाकर राव

जगदिश कपूर

किसन कानुनगो

सी. एन. रामचंद्रन

ओ. पी. सेतिया
प्रबंध निदेशक
एवं समूह कार्यपालक
(राष्ट्रीय बैंकिंग)
निदेशक एम्. पी. राधाकृष्णन
प्रबंध निदेशक
एवं समूह कार्यपालक
(कारपोरेट बैंकिंग)
एम. एस. वर्मा
अध्यक्ष

कलकत्ता

18 जून, 1998



SIGNED BY:

Parmpal Singh Mann

S. Ramani

Yawar Rashid

I. G. Patel

V. B. Kaujalgi

Rajat Kumar Chakrabarti

Ajay G. Piramal

R. S. Lodha

K. Purnachandra Rao

Shashikant B. Garware

C. M. Vasudev

Anila R. Dholakia

Roddam Prabhakar Rao

Jagdish Capoor

Kissen Kanungo

C. N. Ramachandran

O. P. Setia
Managing Director
and Group Executive
(National Banking)
Director M. P. Radhakrishnan
Managing Director
and Group Executive
(Corporate Banking)
M. S. Verma
Chairman

Calcutta,
18th June, 1998.

लेखा-परीक्षकों की रिपोर्ट

प्रति, भारत के राष्ट्रपति,

1. भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 की धारा 41 (1) के अंतर्गत नियुक्त हम, भारतीय स्टेट बैंक के अधोस्ताक्षरित लेखा-परीक्षक बैंक के तुलनपत्र और लाभ और हानि लेखे के बारे में केन्द्र सरकार को एतद्वारा अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं।
2. हमने भारतीय स्टेट बैंक के 31 मार्च 1998 को तुलनपत्र और उसी तारीख को समाप्त होनेवाले वर्ष के लिए लाभ-हानि लेखे की लेखा-परीक्षा की है। इसमें निम्नलिखित शामिल है :-
 - (i) केन्द्रीय कार्यालय, तेरह स्थानीय प्रधान कार्यालयों, कारपोरेट लेखा समूह (केन्द्रीय) और उनतालीस शाखाओं के लेखे जिनकी लेखा परीक्षा हमने व्यक्तिगत हैसियत से की है,
 - (ii) छह हजार एक सौ सतासी भारतीय शाखाओं के लेखे जिनकी लेखा-परीक्षा अन्य लेखा-परीक्षकों ने की,
 - (iii) विदेशी कार्यालयों के लेखे जिनकी लेखा-परीक्षा स्थानीय लेखा परीक्षकों ने की, तथा
 - (iv) शाखा प्रबंधकों द्वारा प्रमाणित अन्य भारतीय शाखाओं की विवरणियां, जिनकी लेखा-परीक्षा नहीं हुई है।
3. तुलनपत्र और लाभ-हानि लेखा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की तृतीय अनुसूची के क्रमशः 'क' और 'ख' फार्मों में तैयार किए गए हैं और वे भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 तथा उसके अंतर्गत बने विनियमों के उपबंधों के अनुसार अपेक्षित जानकारी देते हैं।
4. हम निम्नलिखित की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं :
 - (i) लेखा टिप्पणियों की मद क्र. 1 (विदेशी मुद्रा शेष राशियों के रूपांतरण एवं अंतरण से संबंधित) जिसमें भा.रि.बैं./भा.वि.मु.व्या.संघ के अनुदेशों/दिशा निर्देशों का पालन इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) द्वारा जारी "विदेशी विनियम दरों में होने वाले परिवर्तनों के प्रभावों के लेखे" से संबंधित लेखा मानक 11 की तुलना में किया गया है।
 - (ii) कर्मचारियों की छुट्टी के भुगतान के संबंध में लेखा टिप्पणियों की मद क्र. 2 को भुगतान आधार पर आईसीएआई द्वारा जारी "नियोक्ता के वित्तीय विवरणों में सेवानिवृत्ति के लाभों के लेखे" से संबंधित लेखा मानक 15 की तुलना में अपनाया गया है।

REPORT OF THE AUDITORS

TO THE PRESIDENT OF INDIA,

1. We, the undersigned Auditors of the State Bank of India, appointed under Section 41 (1) of the State Bank of India Act, 1955, do hereby report to the Central Government upon the Balance Sheet and Profit & Loss Account of the Bank.
2. We have audited the Balance Sheet of the State Bank of India as at 31st March, 1998 and the Profit and Loss Account of the Bank for the year ended on that date in which are incorporated the accounts of:-
 - (i) the Central Office, thirteen Local Head Offices, Corporate Accounts Group (Central) and thirty nine branches audited by us in our individual capacity,
 - (ii) Six thousand one hundred eighty seven Indian Branches audited by other auditors,
 - (iii) the foreign offices audited by the local auditors and
 - (iv) Other Indian Branches, the unaudited returns of which are certified by the Branch Managers.
3. The Balance Sheet and the Profit and Loss Account have been drawn up in Forms A and B respectively of the Third Schedule to the Banking Regulation Act, 1949 and they give the information as required to be given by virtue of the provisions of the State Bank of India Act, 1955 and Regulations thereunder.
4. We invite attention to:
 - (i) Item No.1 in the Notes on Accounts (regarding translation/conversion of foreign exchange balances) wherein RBI/FEDAI instructions/guidelines have been followed in preference to the Accounting Standard No. 11 on "Accounting for the Effects of Changes in Foreign Exchange Rates" issued by the Institute of Chartered Accountants of India (ICAI).
 - (ii) Item No. 2 in the Notes on Accounts regarding treatment of encashment of leave of employees on payment basis, in preference to the Accounting Standard No. 15 on "Accounting for Retirement Benefits in the Financial Statements of Employers" issued by ICAI.

5. (क) हमारी राय और हमारी जानकारी में तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के आधार पर और जैसा कि बैंक की बहियों में दिखाया गया है, हम अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं कि लेखों पर दी गई टिप्पणियों के एवं प्रमुख लेखा नीतियों के विवरण के साथ पढ़े जाने पर तुलनपत्र एक पूर्ण एवं सही तुलनपत्र है, जिसमें सभी आवश्यक जानकारी शामिल है और वह इस प्रकार तैयार किया गया है कि वह 31 मार्च, 1998 को बैंक के कामकाज का वास्तविक और सही चित्र दर्शाता है और लाभ-हानि लेखा सम्बन्धित खातों का समावेश करते हुए वर्ष के लाभ का सही शेष प्रदर्शित करता है;
- (ख) हमने जहाँ भी कोई जानकारी और स्पष्टीकरण माँगा है, वह हमें दिया गया है और वह संतोषजनक रहा है,
- (ग) हमारी जानकारी में आए लेन-देन बैंक के अधिकार क्षेत्र में रहे हैं तथा
- (घ) बैंक के कार्यालयों और शाखों से प्राप्त विवरणियाँ लेखा-परीक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से पर्याप्त पाई गई हैं.

5. (a) In our opinion and to the best of our information and the explanations given to us and as shown by the books of the Bank, read with paragraph 4 above and with the notes on Accounts and Statement of Principal Accounting Policies, we report that the Balance Sheet is a full and fair Balance Sheet containing all the necessary particulars and it is properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the affairs of the Bank as at 31st March 1998 and the Profit and Loss Account shows a true balance of profit for the year covered by the accounts;
- (b) where we have called for any explanation and information, such explanation and information have been given to us and we have found them to be satisfactory;
- (c) the transactions of the Bank which have come to our notice have been within the powers of the Bank and
- (d) the returns received from the offices and branches of the Bank have been found adequate for the purposes of the Audit.

लेखा-परीक्षक

भट्टाचार्य दास एण्ड कं.
खिमजी कुंवरजी एण्ड कं.
प्राइस पैट एण्ड कं.
पी. के. चोपड़ा एण्ड कं.
के. के. सोनी एण्ड कं.
खंडेलवाल जैन एण्ड कं.
सत्यनारायण एण्ड कं.
रघुनाथ राय एण्ड कं.
लुनकर एण्ड कं.
एस. आर. आर. के. शर्मा एसोशिएट्स
खन्ना एण्ड कं.
आर. सिंघी एण्ड कं.
पी. बी. विजयराघवन एण्ड कं.

कलकत्ता,
18 जून, 1998

Auditors

Bhattacharya Das & Co.
Khimji Kunverji & Co.
Price Patt & Co.
P. K Chopra & Co.
K. K. Soni & Co.
Khandelwal Jain & Co.
Satyanarayana & Co.
Raghunath Rai & Co.
Loonker & Co.
S. R. R. K. Sharma Associates
Khanna & Co.
R. Singhi & Co.
P. B. Vijayaraghavan & Co.

Calcutta,
18th June, 1998

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

31 मार्च 1998 को समाप्त वर्ष के लिए नकदी प्रवाह विवरण

CASH FLOW STATEMENT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 1998

(000 को छोड़ दिया गया है 000s omitted)

	31.3.98 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.98 (चालू वर्ष current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.97 (पिछला वर्ष previous year)
क. परिचालन कार्यकलापों से नकदी प्रवाह A. CASH FLOW FROM OPERATING ACTIVITIES	59,426,596	33,753,915
ख. निवेश कार्यकलापों से नकदी प्रवाह B. CASH FLOW FROM INVESTING ACTIVITIES	(6,967,817)	रु. Rs. (5,387,425)
ग. वित्तपोषण कार्यकलापों से नकदी प्रवाह C. CASH FLOW FROM FINANCING ACTIVITIES	(3,528,072)	9,853,867
नकदी एवं नकदी समतुल्य में कुल परिवर्तन NET CHANGE IN CASH AND CASH EQUIVALENTS	48,930,707	38,220,357
घ. वर्ष के आरम्भ में नकदी एवं नकदी समतुल्य D. CASH AND CASH EQUIVALENTS AT THE BEGINNING OF THE YEAR	277,527,510	239,307,153
ङ. वर्ष की समाप्ति पर नकदी एवं नकदी समतुल्य (क+ख+ग+घ) E. CASH AND CASH EQUIVALENTS AT THE END OF THE YEAR (A+B+C+D)	326,458,217	277,527,510
क. परिचालन कार्यकलापों से नकदी प्रवाह A. CASH FLOW FROM OPERATING ACTIVITIES		
अग्रिमों, निवेशों आदि से वर्ष के दौरान प्राप्त ब्याज Interest received during the year from Advances, Investments, etc.	153,475,445	150,633,572
अन्य आय Other Income	27,941,553	25,350,408
वर्ष के दौरान जमा राशियों आदि पर संदत्त ब्याज Interest paid during the year on deposits, etc.	(100,423,690)	(90,501,506)
प्रावधानों एवं आकस्मिकताओं सहित परिचालन व्यय Operating Expenses including Provisions and Contingencies	(82,774,853)	(66,201,730)*
मूल्य-ह्रास हेतु समायोजन Adjustment for Depreciation	1,640,696	973,286
नकदी लाभ उप-योग SUB-TOTAL BEING CASH PROFIT	19,859,151	20,254,030*
जमा राशियाँ Deposits	203,901,536	143,057,233
उधार राशियाँ Borrowings	11,329,173	(56,992,168)
निवेश Investments	(79,291,128)	(28,302,986)
अग्रिम Advances	(120,041,322)	(24,075,510)
अन्य देयताएं एवं प्रावधान Other Liabilities & Provisions	(3,270,501)	4,946,936*
अन्य आस्तियाँ Other Assets	26,939,687	(25,133,620)
परिचालन कार्यकलापों द्वारा उपलब्ध कराई गई निवल नकदी NET CASH PROVIDED BY OPERATING ACTIVITIES	59,426,596	33,753,915

(000 को छोड़ दिया गया है 000s omitted)

	31.3.98 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.98 (चालू वर्ष current year)	31.3.97 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.97 (पिछला वर्ष previous year)
	रु Rs.	रु Rs.
ख. निवेश कार्यकलापों से नकदी प्रवाह		
B. CASH FLOW FROM INVESTING ACTIVITIES		
समनुषंगियों तथा/अथवा संयुक्त उद्यम में निवेश Investments in Subsidiaries and/or Joint Ventures	(2,484,924)	(1,849,182)
ऐसे निवेशों पर अर्जित आय Income earned on such Investments	501,134	400,631
अचल आस्तियाँ Fixed Assets	(4,984,027)	(3,938,874)
निवेश कार्यकलापों में प्रयुक्त निवल नकदी NET CASH USED IN INVESTING ACTIVITIES	(6,967,817)	(5,387,425)
ग. वित्तपोषण कार्यकलापों से नकदी प्रवाह		
C. CASH FLOW FROM FINANCING ACTIVITIES		
शेयर पूंजी Share Capital	-	522,890
शेयर प्रीमियम Share Premium	-	12,614,031
गौण बांडों का मोचन Redemption of Subordinated Bonds	(47,110)	(43,853)
बांडों पर संदत्त ब्याज Interest Paid on Bonds	(1,486,384)	(1,580,160)
संदत्त लाभांश Dividends Paid	(1,994,578)	(1,659,041)
वित्तपोषण कार्यकलापों द्वारा प्रदत्त (प्रयुक्त) निवल नकदी NET CASH PROVIDED BY (USED IN) FINANCING ACTIVITIES	(3,528,072)	9,853,867
घ. वर्ष के आरंभ में नकदी एवं नकदी समतुल्य		
D. CASH AND CASH EQUIVALENTS AT THE BEGINNING OF THE YEAR		
हाथ नकदी (इसमें विदेशी करेंसी नोट सम्मिलित है)		
(i) Cash in hand (including foreign currency notes)	4,932,499	4,387,508
भारतीय रिज़र्व बैंक में अतिशेष (ii) Balance with Reserve Bank of India	103,539,291	152,252,643
बैंकों में अतिशेष तथा मांग पर एवं अल्प सूचना पर प्राप्त धन (iii) Balance with Banks and Money at Call and Short Notice	169,055,720	82,667,002
	277,527,510	239,307,153

(000 को छोड़ दिया गया है 000s omitted)

	31.3.98 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.98 (चालू वर्ष current year)		31.3.97 को समाप्त वर्ष Year ended 31.3.97 (पिछला वर्ष previous year)	
	रु. Rs.	रु. Rs.	रु. Rs.	रु. Rs.
ड वर्ष की समाप्ति पर नकदी एवं नकदी समतुल्य				
E. CASH AND CASH EQUIVALENTS AT THE END OF THE YEAR				
हाथ नकदी (इसमें विदेशी करेंसी नोट सम्मिलित हैं)				
(i) Cash in hand (including foreign currency notes)	5,081,481		4,932,499	
भारतीय रिज़र्व बैंक में अतिशेष				
(ii) Balance with Reserve Bank of India	129,064,197		103,539,291	
बैंकों में अतिशेष तथा मांग पर एवं अल्प-सूचना पर प्राप्य धन				
(iii) Balance with Banks and Money at Call and Short Notice	192,312,539		169,055,720	
		326,458,217		277,527,510

* रुपये 19,94,55 हजार के लाभांश पर कर के पुनर्समूहन की दृष्टि से पिछले वर्ष की स्थिति परिवर्तित हो गई है तथा प्रावधान एवं आकस्मिक व्यय कम करते हुए रोकड़ लाभ बढ़ गया है।

* Previous year's position has changed in view of re grouping for Tax on Dividend at Rs. 19,94,55 thousand reducing provisions and contingencies and thereby increasing cash profit.

लेखापरीक्षकों का प्रमाणपत्र

भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 की धारा 41(1) के अन्तर्गत नियुक्त हम, भारतीय स्टेट बैंक के अधोहस्ताक्षरित सांविधिक लेखापरीक्षकों ने 31 मार्च 1998 को समाप्त वर्ष के लिए भारतीय स्टेट बैंक के उपर्युक्त नकदी प्रवाह विवरण का सत्यापन कर लिया है। यह विवरण भारतीय स्टेट बैंक द्वारा शेयर बाजारों के साथ हुए सूचीकरण करार के खण्ड 32 की अपेक्षाओं के अनुसार तैयार किया गया है और भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत बैंक के 18 जून 1998 की रिपोर्ट में सम्मिलित लाभ और हानि लेखा और तुलनपत्र के अनुरूप है और उसके आधार पर तैयार किया गया है।

Auditors' Certificate

We, the undersigned Statutory Auditors of the State Bank of India, appointed under Section 41(1) of the State Bank of India Act, 1955, have verified the above Cash Flow Statement of State Bank of India for the year ended 31st March, 1998. The Statement has been prepared by the Bank in accordance with the requirements of the listing agreement Clause 32 with the Stock Exchanges and is based on and in agreement with the corresponding Profit & Loss Account and Balance Sheet of the Bank covered by the Report of the 18th June, 1998 to the President of India.

हस्ता/-

भट्टाचार्य दास एण्ड को.

Sd/-

Bhattacharya Das & Co.

सांविधिक लेखापरीक्षक

Statutory Auditors

हस्ता/-

अध्यक्ष

Sd/-

Chairman

उपर्युक्त नकदी प्रवाह विवरण बैंक के केंद्रीय बोर्ड की कार्यकारिणी समिति द्वारा, 25 जून 1998 को हुई इसकी बैठक में अभिलेख में ले लिया गया है।

The above Cash Flow Statement has been taken on record by the Executive Committee of the Central Board of the Bank at its Meeting held on the 25th June, 1998.

हस्ता/-

सचिव,

केन्द्रीय बोर्ड

Sd/-

Secretary,

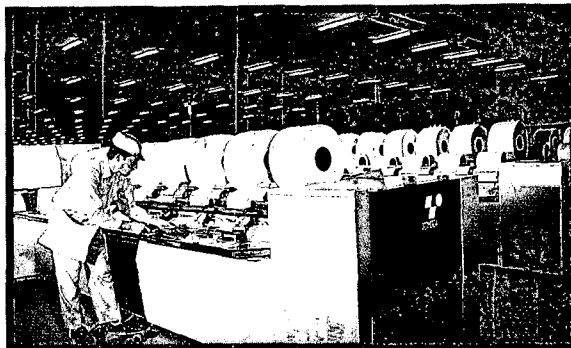
Central Board

नई दिल्ली

दिनांक : 25.6.1998.

New Delhi

Date : 25.6.1998.



औद्योगिक वित्त शाखा चण्डीगढ़ द्वारा वित्तपोषित हिमाचल प्रदेश स्थित
आधुनिक वस्त्रोद्योग इकाई
A modern textile unit in H.P., financed by IFB,
Chandigarh



वैयक्तिक बैंकिंग शाखा चण्डीगढ़ का एक दृश्य
A view of the Personal Banking Branch,
Chandigarh



छोटे औजार बनाने संबंधी कार्यकलाप को परवानू शाखा, हिमाचल
प्रदेश द्वारा सहायता

Making precision tools – activity assisted by
Parwanoo Branch, H.P.

इस रिपोर्ट के पृष्ठों पर श्वेत-श्याम रंग में गत शताब्दी में निर्मित उन भव्य इमारतों के फोटो दिए गए हैं, जिनमें अतीत में और यहां तक कि वर्तमान में भी बैंक के कार्यालय स्थापित हैं:

Black and white photographs reproduced in the pages of this Report present views of some of the magnificent edifices constructed in the last/early part of the present century accommodating the Bank's offices in the past or even today:

पृष्ठ क्र.
Page No.

चेन्नई में अन्ना सालै शाखा के परिसर का प्रभावी अग्रभाग.	3	Impressive front view of the Anna Salai Branch premises in Chennai.
कोलम्बो (श्रीलंका) शाखा का परिसर.	18	Premises of Colombo (Sri Lanka) Branch.
तत्कालीन बैंक ऑफ बॉम्बे का प्रधान कार्यालय जहां वर्तमान में मुंबई मुख्य शाखा का कार्यालय है.	22-23	Head Office of the erstwhile Bank of Bombay, now the office of Mumbai Main Branch.
तत्कालीन बैंक ऑफ रंगून की शाखा का भव्य भवन	25	Stately building of an erstwhile Branch of the Bank in Rangoon.
कलकत्ता में तत्कालीन बैंक ऑफ बंगाल की बैरोक-आकार की इमारत.	32-33	Baroque-style building of the erstwhile Bank of Bengal in Calcutta.
चेन्नई में तत्कालीन बैंक ऑफ मद्रास की शानदार इमारत जिसमें वर्तमान में चेन्नई मुख्य शाखा स्थित है.	48-49	Grandiose building of the erstwhile Bank of Madras, presently the premises of Chennai Main Branch.

इंटरनेट पर बैंक से संपर्क करें
Visit the Bank's site at }

<http://www.sbi.co.in> on Internet

भारतीय स्टेट बैंक, आर्थिक अनुसंधान विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई - 400 021
द्वारा प्रकाशित.

Issued by the State of India,
Economic Research Department,
Central Office, Mumbai - 400021.

रूप सज्जा : टैंडस्को प्रमोशन्स लि.

Design : TADDSKO Promotions Ltd.

टाटा डोनेलि लि. में मुद्रित

Printed at Tata Donnelley Ltd.



अन्तरराष्ट्रीय उपस्थिति 33 देशों के 52 स्थानों पर
International presence at 52 locations in 33 countries